१०

परोपकाराय सतां विभूतय

अभक्ष्य अनंतकाय विचार.

योजक,

प्राणलाल मगळजी शाह

रसनेंद्रियमां लुब्ध थवाथी जाणतां अजाणतां सेवाता दूषणोथी दूषित थयेला अने थतां जैनबन्धुओना अनुग्रहार्थे

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता,
श्री जैन श्रेयस्कर मंडळ तरफथी
शाह वेणीचंद सुरचंद—महेसाणा

धी सूर्यप्रकाश प्रिन्टींग प्रेसमां मुळचंदभाई त्रीकमलाले छाप्युं
ठे. पीरमशारोड—अमदावाद

आवृत्ति ५ मी] [प्रत ३०००

वीर संवत् २४५२ सने १९२६ विक्रम संवत १९८२

मूल्य, ०—२—६

ग्रथ सबंधी अमारो अभिप्राय



आ ग्रथ छपाया पहेला तेनु आद्यत अवलोकन करीने ज्या सुधारवा जरुर जणाइ त्या सुधारवा ग्रथकर्त्ताने सूचव्यु हतु, तेगी तेमणे फेर कॉपी करता लक्ष्य राख्यु लागे छे. उक्त ग्रथ तैयार करवामा मि माणलाल मगळजीए अथाग परिश्रम लीधो छे तेमज पुष्कळ वखतनो व्यय करी अनेक शकित स्थळे पूछवा लायक विद्वान् साधुओ तथा श्रावकोना अभिप्राय मेळवी जेम बने तेम काळजीथी अभक्ष्य अनतकाय सबधी सविस्तर ध्यान आपवा प्रयत्न कर्यो छे. सर्वे श्राविक श्राविकाओने उक्त विषय बाबत एक उपयोगी गाइडनी गरज सारे एटले दरजे ग्रथकर्त्ताए तेमा प्रयत्न कर्यु छे, ते फळीभृत थाओ! विशेष करीने प्रस्तुत ग्रथ जैन मतानुयायीने उपयोगी छे, केमके अभक्ष्य अनतकायने समजी तेनो त्याग करवामा जैनो जेवा मशहुर छे तेवा अन्य मतानुयायी नथी तोपण जो आ ग्रथने कोइ तत्त्वरुचि होइ मध्यस्थता पूर्वक वांचशे तो ते काइने काइ लाभ मेळवी शकशे छपायेलॅ ग्रथ में उतावळथी उपर टपके जोयो छे, एकदर तेथी सर्वे जनोने तो लाभज सभवे छे दूषमा पोरा जोनारा छिद्र बुद्धिने तो तेथी लाभ न थइ शके ए स्वाभाविक समजाय छे. आ नाना ग्रथ उपरथी पण कर्तानु धर्ममा केयु झनुन छे, तथा व्रत नियमोमा तेनी केवी दृढ टेक छे, ते प्रसगे झळकी आवे छे वधारे प्रशसा करवानो अत्र अवकाश नथी फक्त तेनो प्राथमिक श्रम सफळ थाय माटे दरेक तत्त्वजीज्ञासु सज्जनने आ ग्रथ आद्यत वाची तेमांथी गुण ग्रहण करी लेवा साग्रह भलामण करी अत्र विरमु छु ली सन्मित्र मुनि कर्पूरविजय

प्रस्तावना

व्रतधारी श्रावकों मुख्यत्वे करीने बावीश अभक्ष्यना त्यागी होय छे तेमना उपयोगनी जागृतिने अर्थे तथा अन्य भव्य प्राणिओना हितने माटे बावीश अभक्ष्य, अनाचरणीय वस्तुओ वगेरे संबंधी किंचित् अधिकार दर्शाव्यो छे, ते वांची विचारी तदनुसार वर्तन राखवा तेओ यथाशक्ति उजमाळ थशे तो स्वपरने अति हितकारी थशे. केटलाक बंधुओ बावीश अभक्ष्य अगर बीजा नियमो ले छे पण तेनुं यथार्थ स्वरूप समज्या वगर लेवाथी पाछळथी व्रतमां स्खलना पडे छे, जेथी प्रथमथीज तेनुं वास्तविक स्वरूप समजवाने माटे आ प्रयास कर्यो छे. जेमांनी घणीखरी बाबतोनो खुलासो विद्वान मुनिमहाराजाओ तथा उपयोगवंत श्रावको वगेरेने पूछी लख्यो छे केटलीक बाबतोमां मतभेद होवाथी मध्यस्थपणुं राखवुं उचित जाणी यथायोग्य लख्युं छे, छतां पण शंका जेवी बाबतोनो विशेष ज्ञानी पासेथी निर्णय करी लेवो आ ग्रंथमां मतिमंदताथी जे कांइ श्रीवीतरागनी आज्ञा विरुद्ध लखायुं होय ते संबंधी श्रीसंघ समक्ष मिथ्यादुष्कृत दउं छुं तथा दृष्टिदोषथी जे कांइ कानो, मात्रा, अनुस्वार तथा ह्रस्व दीर्घनी भूल रही गइ होय तेने माटे सुज्ञ वाचकजनने ते सुधारी वांचवा सविनय प्रार्थना करूं छुं.

आ पुस्तक अयथी इति सुधी वाचवा जरूर खप करवो तथा जे रसोइनु काम करता होय तेने उपयोग पूर्वक समजावी ते मुजब वर्तवा शीखामण आपवी, तथा आ पुस्तक वाची समजी यथाशक्ति नियम लेवा अवश्य उद्यम करवो अने जेओ विरतिवंत छे तेओए अवश्य बीजा अन्य मुग्ध संसारजाल्मां फसाएला प्राणीओने विरतिरूपी सुखडी चखाडवी आ पुस्तक तेमज बीजा ज्ञानना दरेक पुस्तकनी आशातना करवी नहि "आगमनी आशातना नवी करीए" ए पूजानु रहस्य वारवार मनन करी ज्ञान आशातनाथी भय पामी जेम वने तेम ज्ञाननु अति आदर-विनय पूर्वक बहुमान करवु, ज्ञान पुस्तक पासे राखी आहार निहार करवो नहि, अशुद्ध हाथे के लघुनीति कर्या पछी हस्त स्वच्छ कर्या वगर ज्ञानने अडवु नहि, ज्ञान पासे छता सूवु नहि थूकवाळी आंगळी लगाडवी नहि, पग चडावी बेसवु नहि ज्ञान तरफ पीठ के पग राखवा नहि, ज्ञान जमीन उपर नीचे न मूकवु अशुद्ध जग्याए के अकाळे भणवु नहि, पग उपर के चरवळा उपर राखीने भणवु नहि कारण के नाभि नीचेनो भाग अशुद्ध छे अने चरवळो तो पुजवानु साधन छे, तेथी सापडा उपर मूकी मुख आगळ मुहपत्ति के वस्त्र राखीने वाचवु (मुहपतिनो प्रचार घणो मंद थतो जाय छे जेथी ज्ञानने श्वास, थूक वगेरे लागवाथी बहु आशातना थाय छे तेथी अवश्य मुहपत्तिनो उपयोग चूकवो नहि वळी श्री स्वामिजे गौतम वीर प्रभुने पूछयु जे इंद्र सावद्य भाषा बोले के निरवद्य ? त्यारे भगवंते उत्तर आप्यो के मुख आगळ वस्त्र प्रमुख राखी बोलता निरवद्य भाषा

बोले अन्यथा ते सावद्य जाणवी. जेथी अष्ट प्रवचन माताना रक्षक मुनिमहाराजाओने पण अमे प्रार्थना करीए छीए के प्रमाद त्यजी मुहपत्ति के जे नामनी थइ गइ छे. तेनो सदूउपयोग करवा काळजी राखवामां आवे तो पासे रहेनारा श्रावक श्राविका वर्ग पण तेनो सदुपयोग करतां शीखे. रस्ते चालतां पण ज्ञान नाभि उपर अने मस्तक नीचे (आती सरस) राखवु, जेम राजा, शेठ प्रमुख आवतां उभा थइने तेमनु बहुमान करीए छीए तेम ज्ञाननुं बहुमान, वंदन, पूजन करवु. जो ज्ञानावरणीय कर्म शीघ्र क्षय करवां होय तो ज्ञाननी आशातना कोइ पण प्रकारे न थाय तेवो शुद्ध उपयोग राखो जेथी लोकालोकप्रकाशक उत्तम केवळज्ञान प्राप्त थाय. सुज्ञेषु किं बहुना ?

लि० ग्रंथकर्त्ता.



भूमिका

प्रिय वाचनार !

कोइ कोइ जातिनी देशी परदेशी दवाओ, हमेशनी उपयोगनी वस्तुओ, घन अने प्रवाही पदार्थो, के जे दोषवाळा छता ते वस्तुओनी उत्पत्ति अने दोषना ज्ञानना अभावे भवभीरुजनोथी पण ते वस्तुओ जाण्ये अजाण्ये वपराशमा लेवाती, तेमज पाश्चिमात्य छायाना वधु समर्गथी भक्ष्याभक्ष्यनो विचार वहुज ओछा हृदयोमा रहेवा पाम्यो अने तेने लइने घणीज वस्तुओ के जे एक जैन तरीके ओळखाती व्यक्तिने कदी पण नहीं खावी पीवी जोइए एवी वस्तुओ पण वपरावी शरु थइ, आवा समयमा दोषवाळी अभक्ष्य अनतकाय वस्तुओ के जे शु कारणथी नहीं वापरवी जोइए ? वापरवाथी शु दोष थाय छे ? ते अने तेने लगती वधु हकीकतो सूचवनारा एक पुस्तकनी खास जरुर हती, तेवा समयमा जुनागढ निवासी मी माणलाल मंगळजीए केवळ उपकार बुद्धिथीज आ ग्रन्थनी योजना करी छे जे जरुरीयातना वखतमा जिज्ञासु जनोने घणीज उपयोगी थइ पडवाथी प्रथमनी आवृत्तिओ टुक मुद्दतमा थइ रही छे, हजु पण पेयापेय अने भक्ष्याभक्ष्यनी बाबतनो विवेक प्राप्त करवाना जिज्ञासुओ तरफथी उपराउपरी मागणीओ थवाथी आ आवृत्तिमा वनतो सुधारो वधारो करीने छपावी छे आ प्रथमा

केटलीक फुटनोट श्री भावनगर निवासी श्रीयुत वोहोरा अमरचद जसराजे लखी आपेल दाखल करी छे.

आ पुस्तक वांची धर्मना खपी पुरुषो पोते अभक्ष्य वस्तुओनो त्याग करशे अने अन्यबन्धुओ ने बचावी, उपदेशथी समजावी त्याग करावशे तो योजकनो अने अमारो उद्देश अने प्रयत्न सफळ थयो समजीशु.

आ ग्रन्थना योजक के जेमणे पोतानो किंमती वखत रोकी केवळ हितबुद्धिथीज आ बाबतोनी माहिती मेळवी ग्रंथरूपे योजना करी छे ते बदल तेमनो तथा आ ग्रन्थने तपासी सुधारो वधारो करवानी सूचना आपी छे तेमनो आ प्रसगे अमो अतःकरणपूर्वक आभार मानीए छीए अने पुनः पुन' आवाज परमार्थना कार्य परत्वे, तन, मन, अने धननो यथाशक्ति भोग आप्या करे, एवु इच्छी विरमीए छीए

लि. प्रसिद्ध कर्त्ता



पाचमी आवृतीनी प्रस्तावना

आ पुस्तकनी चोथी आवृतीनी नकल ४००० अमारा तरफथी स. १९७९ मा छपाववामा आवी हती ते खलास थवाथी केटलाक वधारा साथे आ पाचमी आवृति छपावी छे आथी आ पुस्तकनी केटली उपयोगीता छे. ते जीज्ञासु वर्ग सहेजे समजी शकशे आ वखते गुजराती टाइपमा पण आ पुस्तक छपाववामां आव्यु छे.

श्री भारुंदा निवासी शेठ रामाजी पद्माजी तरफथी रु. ५००) नी मदद मळवाथी चोथी आवृतीनी कीमत अढीआना राखेल ते मददना अभावे आ आवृतीमा पडतरकीमत रु ०–३–६ राखेल छे

अभक्ष्य अनतकाय विचारनी तथा सचित्त अचित्त विचारनी एम बे सज्झायो खास उपयोगी होवाथी आ आवृतीमां दाखल करी वधारो करेल छे

संवत् १९८२ नी विजया दशमी } ली प्रसिद्धकर्त्ता

अनुक्रमणिका.





श्री लक्ष्मी रत्नसूरिकृत अभक्ष्य अनंतकायनी सझाय.

ढाळ—जीन सासन रे सूधी सद्दहणा धरे,
गुणी गुरु मुख रे नवे तत्व निरता करे,
मिथ्यामति रे कपट कदाग्रह परिहरे,
सही पाळे रे ते नर समकित मन खरे,

त्रुटक—मनखरे समक्ति शुद्ध पाळे, टाळे दोष दया परो,
घुर पच अणुव्रत त्रण गुणव्रत, च्यार शिक्षा व्रत धरो
इम देशविरति क्रिया निरति, करो भवियण मन रली,
दाखवी नियगुण परह करा, दोष मम काढो वली १

ढाळ—मम काढो रे लोभी नर कूडो करो,
जाणी सावद्य रे अभक्ष्य बावीसे परहरो,
वड पींपळ रे पीपरीने कठुवरो,
उंबर फळ रे रखे तुमे भक्षण करो,

त्रुटक—रखे भक्षण करो माखण, मद्य मधु आमिष तणु,
विष हिम करहा छाडी परहा, दोष मूळ माटी घणुं
परिहरो सज्जन रयणी भोजन, प्रथम दूरगति वारणु,
ममकरो व्याळु[१] अति असुर, रवि उदय विण पारणु २

---

१ वाळु

ढाळ—अथाणु रे अनतकाय सवि निर्मीयें,
काचु गोरस रे मांहे कठोळ न जीमीयें
वळी वेंगण रे तुच्छफळ सवि छंडीये,
आपणपु[1] रे व्रत लीधु नवि खंडीये

त्रुटक—नवि खंडीए सवि नीम लेइ, देइ फळ व्रत भगनुं,
अज्ञात फळ बहु वीज भक्षण, चलित रस हुये जेहनु,
सत्तर आणी अभक्ष्य जाणी, तजो ए बावीशए,
गुरु वयण निगते त्रळोय मीछो, अनतकाय बत्रीश ए. ३

ढाळ—अनती रे कद जाति जाणो सहु,
जस भक्षण रे पातिक बोल्या छे बहु,
कचूरु रे हळदर नीली आदु वळी,
वज्र सूरण रे कद बेहु कुमळी फळी.

त्रुटक—जे फळीय कुमळी वीज पाखे, चाखे चतुर न आंबली,
आलू पींडालु थेग थुहर, शतावरी लसण कळी
गाजर मूळा गळो गिरणी, विरहाळी टक वथ्थुलो,
पल्लक सूरण बोलनीली, मोथनीली सांभळो ४

ढाळ—वस करेला रे कुपळ कुअला तरुतणा,
अकूरा रे लोढा ते जळ पोंयणा,
कुंआरी रे भमर वृक्षनी छालडी,
जे कहीयें रे लोके अमृत वेलडी.

---

[1] आपणुं

त्रुटक—वेल्डी केरा तहु ताजा, खिलोडाने खरमूआ,
भूइ फोडी उत्राकार जाणो नीलफूल त मवि जूआ,
त्रीस लोक मसिद्ध बोल्या, लक्ष्मी रत्नसूरी इम कहे,
परिहरे जे बहु दोष जाणी, माणी ते शिव सुख लहे ५

इति अभक्ष्य अनतकायनी सझाय सपूर्ण.

अथ श्री सचित्त अचित्त विचार सझाय

प्रवचन अमरी समरी सदा गुरुपय पक्ज प्रणमी मुदा,
वस्तु तणु कहूकाल प्रमाण, सचित्त अचित्त विधी जीमलीयो जाण. १
वेहु रतु मळी चोमासामान, पट रतु मळीने वर्ष प्रमाण,
वर्षा शीत उष्न त्रीहू काळ, त्रिहु चोमासे वर्ष रसाळ २
श्रावण भाद्रवो आसो मास, कार्तिक वरसाळो वास,
मागशीर पोष माहाने फाग, ए चारे शीयाळा लाग. ३
चैत्र वैशाख ने जेठ आषाढ, उष्नकाळ ए चारे गाढ;
वर्षा शरद शिशिर हेमंत, वसत ग्रीष्म पट् रतु एम नत ४
वर्षा पनर दिवस पकवान्न, त्रीस दिवस शीयाळे मान,
वीस दिवस उनाळे रहे, पछी अभक्ष्य श्री जीनवर कहे ५
राध्यु विदल रहे चिहु जाम[१], ओदन आठ प्रहर अभिराम
सोळ प्रहर दहिं काजी छास, पछी रहे तो जीव निवास ६

---

१ चार पहोर

पापड लोइया वटक प्रमाण, चार प्रहर पोळीनु मान;
मात्र प्रमुख नोवीगय पकवान्न, चलितरमें तस काळनु मान ७

धान धोयण छ घडी परमाण, दोय घडी जळत्राणी जाण,
फळ धोयण एक प्रहर प्रमाण, त्रिफळा जळ बे घडीने मान. ८

त्रणवार उकाळे जेह, शुद्ध उष्नजळ कहिये तेह,
प्रहर तीन चउ पंच प्रमाण, वर्षा शीत उनाळे जाण ९

श्रावण भाद्रवडे दिन पंच, मिश्र लोट अणचालित सच,
आसो कार्तिक चिंहु दिन जाण, मागशीर पोष दिन तीन प्रमाण १०

माह फागणे कह्या पण जाम,[1] चैत्र वैशाख चिंहु पोर अभिराम,
जेठ आषाढ प्रहर त्रण जोई, तद उपरांत अचित्त ते होई. ११

अलसी कोद्रवा काग ने जवार, साते वरसें अचित्त रसाळ,
विदल सर्व तल तूयरी वाल, पांचे वरसें अचित्त रसाळ १२

गहु शालि खडधान कपास, जव त्रिहु वरसें अचित्त ते खास;
सीत ताप वर्षादिक जोइ, सचित्त योनी अचित्त ते होई. १३

हरडे पींपर मरिच बदाम, खारक द्राख एळा[2] अभिराम,
शत जोयण जलवटमां वहे, शाठ जोयण थलवटमा कहे. १४

धूम अग्नि परियट्टण करी, अचित्त योनी तस थाये खरी;
सचित्त योनी प्रवहणनी जेह, थाये अचित प्रवचन कहे तेह. १५

---

१ पाच पहोर २ एलची

गेरु मणशिल लूण हरियाळ, आवे जलवट माहे रसाळ,
ते अचित्त होये प्रवचन साख, पण लेरानी नहि तस भाख. १६
धोळो सिंधव कह्यो अचित्त, श्राद्ध विधे अक्षर पवित्त,
ईलादिक ओला जे थाय, तेह अचित्त थापना नवि थाय. १७
खोरु घृत जे कालातीत, पल्टाए वरणादिक रीत,
काचृ दूध विदल सयोग, थाये अभक्ष्य कहे मुनि लोग. १८
चार महर रह ग्रुगली राव[1], शोल महर राईतु अजाव,
टहिं राई विदलें देखाय, उप्न करे तो शुद्धज थाय १९
कडा विगय परि शेक्यु धान, मूहूर्त चोवीश गोमूत्रनु मान,
दुढणीयादिक विदलनी दाळ, शेक्या धान परे तसमकाळ २०
चार महर शीरो लापसी, विदल परे ते प्रवचन वसी,
जीहां जेहनो काळ पूरो थाय, तिहा ते वस्तु अभक्ष्य कहेवाय. २१
अथाणा प्रमुख सहू जाण, चलित रसें तसकाळनु मान,
वल्नणादिक केरो काळ, शास्त्र मांहे छे तेह विशाळ २२
तेह भणी इहा नाण्यो एह, अल्प बुद्धिन पडे सदेह,
आर्द्र धान अकुरा निकळे, ते सहु वस्तु अभक्ष्यमां भळे २३
ए बोल्यो लवलेश विचार, विस्तार प्रवचनसारोद्धार,
धीर विमल पडित सुपसाय, कवि नयविमल कीधी सझाय २४

ईति श्री सचित्त अचित्त विचार सझाय सम्पूर्ण

---

१ शुवारनी पातळी घेंस

शुद्धिपत्र

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२	१०	मिद्धातमांथा	सिद्धांतमांथी
७	४	क्षत्रियोने	क्षत्रीयो तथा
७	६	वळपुष्टि	वळपुष्टि माटे
७	७	लोलपा	लोलुपी
७	२१	ज्यां	जेथी
१०	३	त्यारे	तेम
१०	१०	ने	जे
१६	३	ले	छे
१९	२०	उधो	ऊगो
२५	१७	के	ते
२८	१३	वाळ	वाल
३७	१८	चणानो	चणाना
३८	८	ते	०
४४	१८	मुकाइ जवु	मुकाई जवु जोइए
४६	१	कळा	काळ
४७	१७	थाय छे	थाय छे ते
४८	९	वघल	नवेल
४९	३	ग्रीप्म	ग्रीष्म
४९	१९	विमुख	विमुख
५२	१८	नवी	नवी साथे
६३	२०	नजारमांथो	बजारमांथी
६३	२७	दधनुं	

५५	२२	राखवा-	राखवो
५७	२१	आपे	आये
६२	१४	आपणा	आपणो
७०	६	परघेर	०
७५	७	पाणीचा	०
७८	१७	त्यारेज	ज्यारे
८३	१६	ने खावी	०
८३	२१	दिल्हा	दिल्ही
८८	५	वर्त छे	वर्ते छे
९२	१७	फारेळां	फारला
९२	१८	टोडोरा	टींडोरा
९८	१८	काचा	०
९९	१६	शक्ता	शक्ती
१००	४	लोलोतरीनो	लीलोतरीनो
१००	२१	व्याख्यान श्रावण	व्याख्यान श्रवण
१०२	१६	सचित्त छे ते	०
१२६	२०	लाही	लोही
१३२	१२	अन	अने
१३५	२१	विष	निषे
१४४	४	पूर्व पण आद्रकुमार	पूर्वे पण आर्द्रकुमार
१४५	१२	निज	जिन
१४६	६	ग्रहनत	ग्रहवत
१८०	१०	एकादशनादि	एकाशनादि
१५२	७	वर्तेउ	वर्तवु
१६०	१६	०-३-०	०-३-६



॥ नमः श्रीपरमात्मने ॥

अभक्ष्य-अनतकायविचार

मगलाचरण

जेणे अति दुष्कर एवो तप करी राग द्वेषनो क्षय करी विशाल शिव समृद्धि प्राप्त करी छे एवा निकटोपकारी शासन नायक श्रमण भगवत श्री महावीर जिनेश्वरने अमे नमस्कार करीए छीए

जे अष्ट मदनो जय करवा साथे इद्रियोनु दमन करवामां तथा उत्तम धर्म ध्यान, शुक्ल ध्यान, ध्यावामां तत्पर छे एवा श्रीमान् मुनियोमा प्रधान गणधर महाराज तथा पूर्वाचार्यो अमारु मगल करो।

चौद पूर्वधारी श्री भद्रबाहुस्वामी, स्थूलीभद्रजी, दशपूर्वी श्रीवज्रस्वामी तथा श्रीदेवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणादि निर्ग्रंथ साधुओनु अमोने शरण होजो।

श्रीमृगावती अने श्रीचदनबालाप्रमुख साध्वीजीना उत्तम चारित्र, शियल तथा विनयादिक गुणोनु अमने अनुमोदन अहर्निश हो।

श्रीआणदजी, श्रीकामदेवजी, श्रीपुणियाजी अने श्रीजीरणजी प्रमुख श्रावकोना उत्तम द्वादश व्रतो, ज्ञान, दर्शन, चारित्र-

ए रत्नत्रयीनी आराधकता तथा दृढ सम्यक्त्वादि उत्तम आचारोनुं अमे शीघ्र अनुकरण करता थइए ।

श्रीसुलसा अने रेवतीप्रमुख शियलवती श्राविकाओना दृढ सम्यक्त्वादि सुचरित्रोनु स्मरण, अनुकरण अमने सदा प्राप्त थाओ।

श्रीजिनशासननी अधिष्ठायिका श्रीसरस्वती देवी सकल सिद्धि आपो !

श्रीमहावीर भगवतना शासननी रक्षा करवावाळा मातग यक्ष देवता तथा सिद्धायिका देवीनी स्तुति विघ्नशाति माटे करु छु.

श्रीजैनधर्ममा तत्पर सम्यग्दृष्टिदेवनु स्मरण करीने अभक्ष्य-अनतकायविचार नामना ग्रथनो श्रीसूत्र सिद्धातमाथा उद्धरीने जिनाज्ञानुसारे प्रारम्भ करीए छीए.

श्रावकने उत्सर्ग मार्गे तो प्रासुक आहार लेवो कह्यो छे जो शक्ति न होय तो सचित्त त्यागी होय, जो ते पण न करी शके तो बावीश अभक्ष्य अने बत्रीश अनतकायनो तो जरुर त्याग करे.

पचुंबरि चउ विगई, हिम विस-करगे अ सव्वमट्टी अ।
राईभोयणग चिय, बहुबीअ-अणतं-सधाणा ॥ १ ॥
घोलवडा वायंगण, अमुणिअनामाइ पुप्फफलाइ ।

---

१ अणत-बत्रीश अनतकायनु वर्णन बावीसमु दर्शाव्युं छे, बाकीना क्रमवार लख्या छे

तुच्छफल चलिअरसं, वज्जे वज्जाणि बावीसं ॥ २ ॥

भावार्थ-पांच प्रकारना उंबर फल ५, चार महा विगइ ९, हिम १०, विष ११, करा १२, सर्व प्रकारनी माटी १३, रात्रीभोजन १४, बहुबीज १५, अनंतकाय १६, बोळ अथाणु १७, घोलवडा, १८, वेंगण १९, नाम न जाणीए एवा अजाण्या फूल फळ २०, तुच्छ फळ अने चलित रस २२, ए बावीश वर्जवा योग्य अभक्ष्योने वर्जवा जोइए. १-२

१ *वडनी पीपु (टेटा), २, पारसपींपलीनी[1] तथा पींपलानी पीपु, ३ प्लक्ष (पींपळनी जाति छे), ४ उंबर (गुलर) नी पीपु, ५ कचुंबर (कालुंबर) नी पीपु, ए पांचे वृक्षना [2]फळमां घणा सूक्ष्म त्रस जीवो होय छे, जेनी गणत्री थइ शकती नथी माटे ते सघळां अभक्ष्य छे, तेथी तेनो त्याग करवो. दुर्भिक्षमां अन्न न मळे तोपण विवेकी पूरुषो पूर्वोक्त फळो खाय नहि

६ मध, ७ मदिरा; ८ मांस, ९ माखण, ए चारे वस्तुनो जेवो रंग छे तेवाज रंगना तेमां निरंतर असख्य जीवो उपजे छे, माटे ते अभक्ष्य छे; वळी ते चार महाविगइ अति विकार करवावाळी छे.

* आ टेटामां अति सूक्ष्म वीज तथा जीव घणा छे.

१ पींपरनी पेपडीमा सूक्ष्म वीज अने जीव घणा छे.

२ कोइपण फळमां जेटलां बीज तेटला जीवो वनस्पतिकायना जाणवा. ते नगानी ... स्वाद सारु हिंसा करवी ते युक्त नथी.

तेनु विशेष वर्णन योगशास्त्र, जैन तत्त्वादर्श विगेरेमां दर्शाव्यु छे, जेथी अत्र सक्षेपमा कह्यु छे

[१]मध-वाघरी लोको मधना पुडां लावे छे त्यारे प्रथम तेओ ते जग्याए धूमाडो करी मधमाखीओने अत्यत्र त्रास उपजावी तेना घरमांथी काढे छे, तेमां नाना बच्चाओ अनेक होय जेओ उडवाने अशक्त होवाथी तेना प्रिय प्राणथी मुक्त थाय छे जेम एक माणसे घणा वर्ष पर्यंत अत्यत परिश्रमथी सग्रहेलु धन होय ते एक रात्रिमा चोर आवी चोरी जाय त्यारे तेने तथा तेना कुटुबने केटलु दु ख थाय ? तेमज आ अनेक जीवोए घणा वखतना करेला परिश्रमथी स्वभक्षण अर्थे तैयार करेलु मध (तेओनु मधपोडु-आनदी गृह) वाघरी वगेरे अनार्य लोको तेने अ यत किल्गमणा (पराभव-कष्ट) उपजावी चोरी जाय त्यारे तेओने केटलु दु'ख थतु हशे ? अने तेवा अनार्य लोकोने आपणे उत्तेजन आपीए ते कवु त्रासजनक! वळी ते मधमा निरतर असख्य जीवो उपजे छे, तेथी तेनो अवश्य त्याग करवो युक्त छे कोइ रस लपटताथी मध खाय ए वातनो दूर रही, पण जो औषध माटे मध खाय तो पण ते नरकनु कारण छे.

---

१ कोवानु, भमरीनु अने माखीनु एम त्रण प्रकारनु मध भाष्यकारे वर्णव्यु छे तेमानु दरेक मध के जे जीव जतुनी लाळ छे, ते जूओ तो विष्टादि दुर्गछनीय वस्तुथी लावे छे, तेथी ते एकठु करेलु एठ छे, ते भले मीठु लागे छता पण पापभीरुए चाखवा जेवु पण नथी

जेम प्रमादना उदयथी जीवराने माटे कोइ कालकूट विषनु कण मात्र भक्षण करे तोपण जरुर प्राणनो नाश थाय, तेम म र खावाथी नरक गति प्राप्त थाय, तेथी सर्वथा तेनो त्याग करवा पुराग वगेरे अन्य शास्त्रमां पण कहु छे. आत्मखुराजोज परना जीवोने रर समान गणी आवी अभक्ष्य चीजोनो सर्वथा त्याग करे छे, अने महारोग वशे के प्राणान्त कष्टे पण तेनो स्पर्श पण करता नथी, तेओने सहस्र वार धन्य छे ! माटे हे भव्यो ! प्रमाद त्यजी आ चीज परिहरवा शूरवीर थाओ

मदिरा—तेनो सर्वथा त्याग करनारे इंग्रेजी दवा प्रमुख वर्जवु जोइए, कारण के तेमां प्रायः टिंकचर-[1]स्पीरिट (दारु) आवे छे, वळी

---

१ -१ द्राक्षासव, २ कुमार्यासव, ३ लोहासव, ए देशी दवा पण एवीज छे, द्राक्ष अने महुडाने सोडवे छे, तेनी सोडनु नाम आसव छे. शरबतमां पण अभक्ष्यना कारणो विचारवतो देखी शके छे. २. अनेक जातनो वाइन (दारु) पीनारा व्यसनी छे ते दरेकना बुरा हाल जग जाहर छे, कोइ जातनो केफ हितकारी नथी. गांजो, स्रीलागर पण तजवा जोइए दारु एटले अनेक वस्तुनो सडो करी तेमा त्रस जीवो उपजे ते सुद्धांनो यंत्रथी रस काढी लेवो ते केटलाएक भोळा जनो कोलनवोटर वापरे छे, पण ते अचित्त नथी अने तेना उपर दारु तरिकेनी मोटी जगात लेवाय छे.

ज्यारे आयुर्वेदना कर्ताए अनार्योंनी खातर अभक्ष्य ओषधोचरबी तेल वगेरे बताव्युं—छे त्यारे युनानी हकीमोए आर्यांरत्नने

केम्लीक पाउडर (भूको-चूर्ण) वाळी दवामा पण अभक्ष्य वस्तुना मिश्रण थायछे, जेथी इंग्रेजी दवानो त्याग करवोज उत्तम छे.

मांस—जे अनेक जीवोने मारीने तैयार कर छे, ते मुख्य त्रणे भेदे अभक्ष्य कहेलु छे-जळचरनु-मच्छी वगेरेनु, स्थळचरनु-पाडा बकरा हरण गाय घेटा अने ससला वगेरेनुं, अने खेचरनु-चकला

मास, इंडा अने मच्छी वगेरे अभक्ष्य पदार्थनो भोग सहेजे फरमाव्यो छे. माटे दरेक दवा लेता आर्य धर्म जाणनारा थवु जोइए

इंग्रेजी दवा जेमा अभक्ष्य पदार्थ होय छे तेनी विगत.

१ कॉडलीवरपीलस दरियाइमाछलीना कलेजाना तेलनी गोळी

२ स्कॉटइमलशन वॉवरील-वाछ्रडा अने पाडाना अमुक भागनु मास

३ विरोल गायना मगजनो मासरस.

४ बीफाइरन वाइन-घेटाना मास युक्त ब्राडी

५ कारनिफ लीकवीड-मास मिश्रित

६ सरोगानी टॉनिक-स्पीरीट (मदिरा) युक्त

७ एक्सटेट मोल्ट-मद्य अने मास मिश्रित.

८ एक्सटेट चिकन-कुकडीना बच्चानो रस

९ वेसेन इन-डुक्करनी चरबी

१० पेपसीन्ट पाउडर-कुतरा अने डुक्करनी बे गोळीनो भूको.

कूकडा अने पारेवां वगेरेनु, ते त्रस पचेंद्रिय अनेक प्राणीओने शीकार तरीके के वधा तरीके मरण पमाडीनेज नीपजावेलुं छे- अर्थात् तेओ निरपराधि छतां तेओनो नाश थाय छे. ते प्राणी सघळाए मावापना पीशावथीज पेदा थएल छे, माटे क्षत्रियोने मोहमेदनोने पण तजवा योग्य महादुगछनिक मांस छे.

पुराणमां तेमज कुरानमा तेने अभक्ष्य फरमावेलु छतां वळ पुष्टी अने जीभना लोलपा तेवु अखाद्य खाय छे, पण परना प्राण लीधेथी कोइने पोतानु मोत अळखातु नथी जेम आपणने मरवु गमतु नथी, वाळबच्चानो के मावतरनो विजोग पोसातो नथी, तेम दरेक जीव मरण के विजोग इच्छता नथी, माटे जेवु वर्त्तन पोते बीजा तरफथी इच्छवु तेवु वर्त्तन आपणे अन्य दरेक प्राणी प्रत्ये राखवु, एवी न्याय भरेली दृष्टी राखशो तोज पोतानु श्रेय थशे

पवित्रता अने आर्यपणु जे हींदुस्थानमां छे ते मांसाहार तजीने फक्त वनस्पति तथा दुधना खोराकथीज जळवाय छे, परंतु कोइ रीते (प्रत्यक्ष के परोक्ष) मांस, लोही के चरबीजन्य कोइपण पापमय चीजो खावा पीवाथी जळवातु नथी; तेमज तदुरस्ती पण बगडे छे ते अवश्य समजो राक्षस जेने कहेवाय छे ते मनुष्य सुधांने खाय, त्यारे जेनो मांस भक्षण धर्म छे तेने पाप होवानु बाकी शु ?

एकधर्मवाळाए कुकडा, हरण अने माछलां वगेरेना भक्षणथी अनेक प्राणीओ मारवानु पाप थाय, माटे ते तजवा सारु एक हाथीने मारवाथी घणी मुदत मांस पहोंचे, ज्यां थोडी हिंसा थाय ए

चलाव्यु. जुओ न्याय शु छे ? हमेशा नरकगामी (माठीगति जनारा) ओने सिंह के वाघ अने हाथी मारवानु सूजे छे जेओ आ जींदगीमां इद्रनु वाहन तथा गणपतिनी आकृति रूप हाथी जेवा प्राणीनो नाश करे ते अवश्य पापी छे

खाटकी पोतानो धंधो छता बकरा घेटा के पाडानु गळु कापवानी छरी पोताने हाथे नहीं पण एकाद पैसो आपीने बीजा नीच माणसने हाथे मूकावे छे.

मांसनी अदर पळे पळे अनेक जीवो (त्रस) उपजे छे, ते मासने अग्नि उपर पचावतां अने पचाव्या पछी पण उपज्या करे छे राखी सारु जुओ मुएला जनावरनु कलेवर वधारे वखत पडी रहे त्यारे तेमा बारीकरूपे उपजेला होइने ज पछी मोहोटा थता दृष्टिगोचर थाय छे ते सत्य वक्ताये तद्वर्णे (मासनाज कलरवाळा) कह्या छे. एज परोपकारी नरवीरे सर्व जतुओने पोतानो समान गणवा माटे परना प्राण पचाववाना हेतुरूप प्राणीथी नीपजती चीजो मास, इडा के मच्छीना तेलवाळी कोइपण वस्तु भोग्य न करवी एम फरमाव्यु छे

एज हीसाबे श्रीजिनशासनमां पदर कर्मादान तजवानु दरेक धर्मिओने अनादि काळथी हमेशने माटे फरमाव्यु छे केटलाक दगाखोर लोको घीमा चरबीनो भेग करे छे, विलायती बिस्कुट प्रमुखमा तेवु मिश्रण करे छे, तेवी चीजनु आजे कटलाक भक्षण करे छे, ते खेदजनक छे तेथी बिस्कुट वगेरे आभडछेटवाळी चीजोनो

स्पर्श पण न करवो. केटलीक इंग्रेजी दवाओ जेम के [1]कॉडलीवर-ओइल (माछलीनुं तेल) स्कॉट इमलशन, बॉवरील अने मुंबई[2] प्रमुख, चरबी विगेरेनो भेग करी बनावे छे तेनो अवश्य त्याग करवो जोइए. तन्दुरस्त थवा माटे भक्ष्याभक्ष्यनो विचार कर्या वगर आवी चीजो वापरो छो, पण हे भव्यो! तेना किंपाकसमान बहु माठी गतिनां फळ भोगववां पडशे ते विचारो! अनादि काळथी तन (पुद्‌गल) नी ममाळमां ज आ जीवे चतुर्गतिमां भ्रमण कर्युं पण मन दुरस्त वगर आत्मानु कल्याण थवानु नथी तेथी जन्म, जरा, मरण, आधि, व्याधि अने उपाधिना दुःखनु निवारण करवा आवी अभक्ष्य चीजोनो त्याग करो! धन्य छे वकचुल राजकुमारने के जेणे प्राणान्ते पण मांसनुं भक्षण कर्युं नहि अने देव गति साधी. क्यारे आपणे तेवा महात्मा पुरुषोनु अनुकरण करतां शीखीशु अने शिवसंपदा पामीशु ?

---

१ कॉडलीवर ऑइलनी गरज खोपरेलथी सरे छे जूओ डो० त्रीभोवनदासकृत वैद्यक ग्रथ.

२ मुंबइ नामनी दवा जे माणस तथा जनावरना कलेजामांथी बनावे छे ते तो प्रगटपणे अभक्ष्य छे, तेना बदले शीलाजीत वापरवाथी ते दवानु काम सरशे

३ नवळाइना दरद माटे जो तेलनो खप होय तो बदामनुं ताजु तेल सर्व दवाथी चढी[illegible]

माखण—जेम दुधने काळांतरे बगाडपणु थये अभक्ष्य छे, दहींने मेळव्या पछी बे रात्री गये अभक्ष्य छे, अने छटकी प्रमुखना दुधमां एक मुहूर्तमा जीवात उपजे छे माटे अभक्ष्य छे, त्यारे मयना सर्वज्ञोए सरखी रीते दर्शाविलु मारुण अभक्ष्यज छे. छाशमा सहज स्वभाविक मारुण आवी जवा समवछे, तेथी निरनिराळे तो ते गाळीने वापरवी; अथवा अजाणता आवी जाय तेनी जयणा राखवी.माखण छाशमांथी बहार काढे के तरतज[१] अन्तर्मुहूर्त्तमा सूक्ष्म तद्वर्णा जीव उत्पन्न थाय छे, तेमां शंका करवी उचित नथी, कारण वस्तु मात्र बे प्रकारे सिद्ध थाय छे एक हेतुगम्य, बीजु आगमगम्य, माखण तथा द्विदल प्रमुखमा जे जीव उत्पन्न थाय छे ते हेतुगम्य नथी पण आगमगम्य छे माटे जिनेश्वर भगवते जे प्ररूप्यु छे ते सत्य मानवु ज जोइए, जो कोइ पण पुन्य कोइ पण शास्त्र न माने अने चक्षुए दीठेली वस्तु ज माने तो नरक स्वर्गादि जे अदृश्य छे, तेमज परमेश्वर (सिद्धना जीवो) सातमा के चउदमा राजलोक उपर छे, अने स्वर्ग तथा नरकमा जीवो पुण्य पाप करवाथी जाय छे ते पण मानी शकाशे नहि, तेनी सातमी के आगळनी पेढी हती के केम ते शंका थशे, पण तेम नथी कारण क केटलीक वस्तु हेतुगम्य होय, अने केटलीक माटे आगमप्रमाण पण

१ अहीं जघन्य अन्तर्मुहूर्त समजवु, तेनो काळ नव समय छे एक सेकन्डमा असंख्याता समय थाय छे, माटे छाशथी जूदु पडयु के तरत अभक्ष्य समजवु

यानु कारण सर्व वस्तु आपणा जोवामां आवती नथी माटे माखण प्रमुखमां जे जीवनी उत्पत्ति थाय छे ते आगमगम्य समजी अरिहत भगवानना वचनमां किंचित् शंका करवीज नहि छाशमांथी माखण काढतां तरतज तावडामां चूला उपर मूकी देवु युक्त छे.

उपरनी चार महा विगइ (मद्य–मदिरा–मांस–माखण) नों अवश्य त्याग करवो जोइए. प्रभुनी आज्ञा पाळवी तेज धर्म छे

१०. बरफ, ह्हीम अने करा ए त्रणे चीजमां सरखा दोषोनु कारण छे अप्काय (दरेक सचित पाणी) नु एक बिंदु असख्य जीवमय छे, ते जीवनु सरसव जेवडु स्थूळ शरीर होय के थाय तो ते एक बिंदुना जीवो आ लाख जोजनना जंबूद्वीपमा समाय नहीं, एटला सूक्ष्म शरीरे जीवमय पाणी छे, तथापि पाणी विना निर्वाह न थाय माटे जरुर पुरतु वापरवु पडे, परतु घणा पाणीनु घट (कठणपणु) थवे ते बरफ अने कराख्पे देखावमा थोडु होय छे, तेथी घणा जीवरूप पाणीनु सक्रमण नानी आकृतिए थयु तेटला वहोळी संख्या (असख्य) ना जीवोनो विनाश आपणा कामे अने अल्प तृप्ति सारु करवा बदले ते चीजो तजीए तो सामटा जीवोने अभयदान अपाय छे

दाह थतो मटाडवाने चदन (सुखड) के बरासनु अथवा खडसलीयानु विलेपन कराय छे साकरनु पाणी, बदाम अथवा सुखड सहित पीवाथी तृषा जीपे छे, केळां पण ठडी करनार छे.

मलयागर, सुरोखार, लींबडो, गळोनु सत्व, करीयातु अने चुचरूण वगेरे कडी अणाहारि चीजो रात्रे पच्चखाण छता वपराय छे. हिम (बरफ) कुदरती तथा सचाओ प्रमुख साधनोथी बनावे छे ते बने जातनो अभक्ष्य छे, कारण केतेमा पाणीना असख्य जीव छे, बहु आरभिक छता स्वादिष्ट नथी, वळी श्रीतीर्थंकर महाराजे पण निषेध कर्यो छे आइसक्रीम, आइसवॉटर (बरफनु पाणी) आइससोडा, कुल्फी प्रमुख बरफनी चीजोनो पण त्याग करवो आइसक्रीम बनाववामा बरफ तथा काचु मीठु वेनो आरभ थाय छे एटले एकेंद्रिय जीवोनी विराधना थवा साथे तेना सचाओनी अदर रहेलो दूध प्रमुखनो रस ते सचामाथी बराबर लुईने साफ करवामां न आववाथी तेमा बेइंद्रिय वगेरे जीवोनी उत्पत्ति थवानो पण सभव रहे छे; पण ते जीवो बहु सूक्ष्म होवाथी दृष्टिए पडी शके नहि, अने नवु दूध प्रमुख पडतां तरतज ते विचारा विनाश पामे, आवी विराधनानो विचार जिह्वा इंद्रियमां लुब्ध थवाथी अहिंसामय धर्मना आगेवान आपणामांना केटलाक जैनबधुओ न करता अनेक जीवोना प्राण लेवाना कारणिक थइ पडे छे ज्यारे आगल आपणा पूज्य वडिलो सचित्त त्यागी तथा गठसी-वेढसी प्रमुख सख्त नियमो पाळवामा मशगुलपणे वर्तता त्यारे आजे अनेक बधुओ रस्तामा हालता-चालता, हॉटलो-विश्रांतिगृह (विश्राति नहि पण खरेखर विनाशकारीगृह) वगेरेमा भक्ष्याभक्ष्य अने स्पर्शास्पर्शना मलीन दोषनो विचार न करता, तेमज परभवनो पण (आ भवमा गुरु वडिल के

ज्ञानिनो भय तो क्यांथीज होय ?) भय नहिं राखतां स्वच्छंदपणे निर्ध्वंस परिणामे आवी तुच्छ वस्तुओथी स्व मनकामनाओ तृप्त करी स्वआत्माओने मलिन-भ्रष्ट करे छे. अफसोस ! आ केवुं खेदजनक! बधुओ ! परना जीवोने थती वेदनानो सहजमात्र विचार आपना कुमला मगज उपर लावी, आवी तुच्छ-असार वस्तुओनो सर्वतर त्याग करो !! त्याग करो !! बगडतु वातावरण सुधारो !

११. विष-अफीण, सोमल, वच्छनाग, हरताल, मीठा, तेलीया, सखीया प्रमुख चीजो अभक्ष्य छे. कारण के ते खावाथी पेटना कृमि आदिक जीवनो नाश थाय, शरीर शिथिल थाय अने परवशता थाय, माटे विषभक्षण कोइ शोखथी के बळपुष्टि अर्थे न करवुं, औषध तरिके छूट रखाय छे. जुओ व्यसनी माणसना हाल शा शा थाय छे ? तथा अवसरे अमल न मले तो चेतना मुंझाय, क्रोध मिजाज वधे, अने ते वस्तु खानारो ज्यां मल-मूत्र करे ते क्षेत्रमां त्रस स्थावर जीवनी हिंसा थाय. आवी वस्तु खाइने आपघात करवाथी परभवे नरकादि नीच गति प्राप्त थाय. माटे विष व्यसनके आपघात करवामा वापरवुंज नहि; तेम तेनो व्यापार पण करवो नहि. राज्यकर्ताओ पण विषव्यापारनी सनदो तेनी हद राखवा माटे आपे छे. एवु कारण जाणनारा सर्वज्ञ गुरुओए पदर कर्मादान तजवामा विषव्यापारने निषेध्यो छे केमके तेना व्यापारथी अनेक अनर्थ नीपजे छे माताओ बच्चांओने बाळागोळीनु अमल आपे छे, जेमां अफीण आवे छे, पण ते व्यसनथी बच्चाओने फायदो नथी, पण उलटु

नुकशान करे छे अने कोइ वेळा भूलथी थाळागोळी ठेकाणासर न मूकायाथी अने बाळकना हाथमा आववाथी नवारे प्रमाणमां खाइ जाय छे तो मृत्यु पण पामे छे. जेथी सुज्ञ माताए आवी झेरी के अभक्ष्य वस्तुओना अमल आपवां नहि, तेने माटे तो देशी वैद्यकृत गुटिका वस रहे

१२ करा—मेघ (वरसाद) ना करा आकाशमांथी पडे छे. तेमां पण बरफना जेवो महा दोष [१]छे; जिनआज्ञा विरुद्ध छे तेथी वर्जवा

१३. भूमिकाय—(पृथ्वीकाय)—सर्व जातनी माटी, खडी, भूतडो (सराकडो), खारो, काचु मीठु प्रमुख अभक्ष्य छे, कारण के तेमां असख्य जीव छे. माटी मीठु एमां दोषनु पहलु कारण जुओ, प्रत्येकवनस्पतिकायमां एक शरीरे (पान, फुल, फळ, बीजमां) एकेका जीव छे, पण एक लीला आमळाप्रमाण पृथ्वीकायमा जेटला जीव छे ते दरेक जीव कबुतरना जेवडु शरीर करे तो तेटला जीवो आ लाख जोजन गोळाकृति जम्बूद्वीपमा समाय नहीं एवी वहोळी सख्याना छतां अल्प शरीरे छे. तेनो विनाश

१. जेम काचु फल क उगतु धा य खावाथी मीणो चडे छे,अने गर्भिणी स्त्रीने काचो गर्भ पडी जाय त्यारे सुवावडमा खावानी घीइ वगेरे उत्तम चीजोना बदले ते कसुवावडमा तेल चोळा कळथी अने बाजरीनो लुखो रोटलो वगेरे खावु पडे छे, तेम काचा वरसादनु स्वरूप कुदरत विरुद्ध होवाथी अभक्ष्य छे.

करीने अल्पतृप्ति लेवानु यवा वदले तेवी चीजो तजी तेवा सामटा जीवने अभयदान देवु योग्य छे, अने तेथी आपणने मरी जवाशे नही ए चीजोना बदले बीजी चीजो घणी अचेतन मळी शके छे. ते खारो तथा भुतडो नाहावा धोवाने वपराय तेना वदले सोडाखार, आमळां, ककोडी; साबु, अरीठां एसीड मोजुद छे.

गर्भिणी स्त्री जेने भुतडो खावानु सूझे ते गर्भने व्याधि, विनाश अने नुकशानकारी छे.

पापड के साळीयां वनाववा माटे खारो वापरवाने बदले साजीखार, सोडाखार घणा उपयोगी छे.

खडी के राती माटीने वदले चाक चूनो गेरु मळे तेम छे. माटी खावाथी पेटमा असख्य जीवनी उत्पत्ति थाय छे, तथा पांडुरोग, आमवात, पित्त पथरी रोग थाय छे, तथा केटलीक जातनी माटी देडकां विगेरे समूर्छिम जीवोनी योनिरूप होय छे तेथी पण ते अभक्ष्य छे; माटे तेनो अवश्य त्याग करवो पण अनाजमां कांकरो खावामां आवी जाय के पाणीमां धुलरज उडीने पडे, तेमज शाक भाजीमां चोंटेली माटी होय तेथी काची माटीनी बाधानो भग थतो नथी, छतां तेनी जयणा राखवी.

काचु सचित्त मीठु श्रावके वर्जवु अने अचित्त वापरवुं.पृथ्वीमांथी खाण खोदता तथा कोइ पहाडना शीखररूपे अने समुद्रना पाणीथी आगरमां जमावेलु एवु सर्व वडागरु. घशीयु खारो, ळाल सिंधव वगेरे अनेक क्षार जेने अग्नि शस्त्र न लाग्यु होय, त्यां सुधी

'सचित्त' छे, तेवु सर्व मीठु दरेक जैनोए श्रद्धाथी तजवा योग्य छे. गृहस्थीओने जो अचित्त करेलु वेचातो मळे नहीं तो खप जेटलुं अचित्त करावे छे दाळशाकमां तो सचित्तनु अचित्त थइ जाय छे, पण अथाणामां, मशालामा, मुखवासमां अने औषधमा अचित्त मीठु वापरी शकाशे.

अणाहारीमा गणेला सुराखार, साजीखार, टंकणखार अने फटकडी तो अचित्तज छे अचित्त मीठु जुदी जुदी रीतें थाय छे एक तो माटीना वासणमा मीठु भरी उपर मजबुत पेक करी कुभारनी अगर कंदोइनी भट्ठीमां[1] मूकवाथी बरोबर अचित्त थाय, ते मुजब अचित्त करेलु मीठु बे चार वर्ष के तेथी वधारे वखत सुधी सचित्त थतु नथी. श्रावको स्वेर एक शेर मीठु खाडीने दळीने आशरे बेशेर पाणीमा पलाळी ते एक रस थइ जाय त्यारे ते रस गाळीने चूला उपर जेम साकरखांडनु बुरु बनावे छे तेम शेकी नाखे छे, आ प्रमाणे बनावेलु मीठु अचित्त बरोबर थाय, पण पाणीना सयोगे रस कर्यो छे माटे बे चार मासे सचित्त थवानो संभव छे,

---

१ मीठु कुभारने त्या अचित्त करवा माट आपवानी प्रवृत्ति गुजरातमा पाटण शहेरमा छे, जे कुमारपाल राजाना वखतथी चाली आवे छे एम कहेवाय छे तथा दातणनी चीर पण तैयार थवातो मळे छे वळी मीठु पण अचित्त मळे छे, जे अमदावादना केटलाक श्रावको मगावे छे. तथा स्वागे तो कदोइ (हलवाइ)नी पेढीमा अचित्त मळे छे

भट्टीना पाकेला बलमण जेटलो काल तेनो संभवे नहि, कारण के भट्टीमां शेकेलु मीठुज गळी पाणीरूप थइ ढेफु बनाय छे तावडी के [1]लोढी उपर शेके छे पण ते लाल रंग जेवु थाय तेवु आकरु शेकेलु थये अचित्त थाय, कारण के मीठानी योनि बहु सूक्ष्म छे तेथी तेने अग्निनु बरोबर शस्त्र लागे त्यारेज अचित्त थाय मुनिराज श्रीवीर विमलजी महाराज सचित्त अचित्तनी सज्झायमां लखे छे केः—

अचितलवण वर्षा दिन सात,सीयाले दिन पन्नर विख्यात;
मास दिवस उन्हालामांहि,आघो रह्ये सचित ते थाय॥८॥

एटले अचित्त करेलु मीठु वर्षा ऋतुमां सात दिवस, शीयालामां पन्नर दिवस अने उन्हालामा एक मास सुधी अचित्त रहे, ते पछी

---

[1] काठीयावाडमां केटलाएक आयबील, एकासणा प्रमुखमां अचित्त मीठु वापरवा माटे तावडी उपर के वाटकामां सचित्त मीठु नाखी चूला उपर थोडीवारमा शेकी उपयोग करे छे. तेओए अवश्य समजवु के मीठानी योनि एटली बधी सूक्ष्म छे, जे माटे शास्त्रकारे श्री भगवती सूत्रना १९ मा शतकना त्रीजा उद्देशामां फरमावेलु छे के चक्रवर्तिनी दासी वज्रमयी शीला उपर वज्रना लिसोटाथी मीठु एक्वीश वार वाटे तोपण तेमांना केटलाएक जीवोने कांइ असर यती नथी. जेथी अग्निनु शस्त्र बरोबर लागवाथीज अचित्त थाय, अन्यथा शकाशील जाणवु. अचित्त मीठु काढती वखत कोरा हाथ करीने काढवु, नहितर सचित्त पाणीनु एक टीपु मात्र पडवाथी ते मीठामा मळी जतां सचित्त थइ जाय छे, तेनु बहु ध्यान राखवु.

ते सचित्त थाय ए काळमाननो विगत जोता घरमाज तावडी ठीर के लोढी—तवामा शेकीने करेला अचित्त मीठानो आटलो काळ सभवे छे कमके भट्ठीमा पाकेला वळमणनो काळ तो प्रवचनसारोद्धार वगेरेमा घणो मोटो (प्रभूत) कह्यो छे. ने चार वर्ष के ते उपरांत सुधी अचित्त रह, अर्थात् तेनो काळ घणोज समजवो. श्रावक मूळभागे सचित्त परिहारी होय, तेथी प्रमाद त्यजी सचित्त रसनो त्याग करवो, तेमां पण सचित्त मीठुं तो अवश्य वर्जवु

१८ *रात्रिभोजन—आ भव तथा परभवने विषे महादुःखनु कारण छे रात्रिए चारे आहार अभक्ष्य छे रात्रिभोजन

* आ दुनियामां आहार, भय, परिग्रह अने मैथुन ए चारे सज्ञा सर्व जीवोने छे चार गतिमा देव देवोओने तो कोइ व्रत पच्चखाणनो उदय नथी, तेथी तेओ पाछला भवनी कमाणी भोगवीने पछी प्राय खाली हाथे परभव जनारा तथा नरकगतिमा जीवो एकलु दुःखज भोगवे छे, तेमज तेओने दिवस के रात्रिनो देखाव नथी, त्यहा व्रत नियमनु पाळवु के तेनु रळवापणु नथी, अने तिर्यंचगतिमां पशुपणु सर्व विवेकहीन (माता पुत्रनी व्यवस्था रहीत) होवाथी दिवसनु के रात्रिनु भान नथी, खावु पीवु प्राय पराधीन छे. फक्त मनुष्य गतिमां जेओने साचां शास्त्रनो भरूसो छे, ते पैकीना भव्यो रात्रिभोजनना पारावार दोषने समजे छे, एटले मनुष्यनुं ज कर्तव्य करो, त्याग एटले दान अर्थात् अभयदान जेनु फळ शिव छे ते तमे मेळवो अढार पाप स्थानकमा पहेलु माणिवध तजवानु, पछी बीजा

करनारा परभवे उल्लूक, काग, गीध, भृंड, वींछी, घो, मंझार, मूषक, सर्प, वागुल, चामाचीडीया विगेरेना भव पामे, महा दुःखी थाय

तजे; अथवा तो पहेलुं प्राणातिपान विरमण व्रत पाळवाने अर्थे बीजा ते व्रतनी सभाळ माटे क्षेत्रनी वाडरुपे जरुरनां छे, त्यारे कोट भा-णीनो घात आपणे निमित्ते थवा न देवो एवुं सद्वर्तन राखवानी खातर "रात्रि भोजन" नो चार प्रकारे त्याग सर्वज्ञ सर्वदर्शिओए परोपकार अर्थे अनेक शास्त्रद्वारा फरमाव्यो छे, अने साधु मुनिराजे रात्रिभोजन सर्वथा तजीने ते हुकमने पाच महाव्रत जोडे छट्टा व्रत तरीके पाळवाने वधावी लीधो छे.

बीजा जीवोने पण कान, आख, नाक, मोढु वगेरे मनुष्योनो पेठे छे, त्यारे फक्त विवेकथी सद्वर्तन एज धर्म वस्तु मनुष्योने वधारे छे, पण अनादिकाळथी खाउ खाउ करतो आवेलो जीव तृष्णा छोडे नहि त्या सुधी सतोष-सुख पामतो नथी

सूर्य छता वातावरण सुधरे, ते वातावरण रात्रे बगडे छे, तेवा बगाड समये खावु पीवु जे करे ते राक्षस अने भूत प्रेत सदृश छे, तेओने निशाचर (रात्रे चारो छेनार घुअड तथा बीलाडी जेवा) कहेवाय छे. खोराक बनावतां झेरी जीवोनी लाळ पडती न देखाय तेवा झेर मीश्रित आहारे मोत नीपजे छे जेम कोइने मारीने भागी जवु ते अन्याय छे, तेम खाइने सुइ जवु पण दुर्न्याय छे माटे एक-वार अने सूर्य छतां जमवानु वेदपुराणमां कहेलु तेनो उंघो अर्थ उ-

अने धर्म पामवो दुर्लभ थाय पोते रात्रि भोजन करे तो तेना पुत्रादिक पण तेवी कुचाले वर्ते. वळी कीडी भोजनमां खावामां आवे तो बुद्धि मंद करे छे, जू जलोदर करे छे, माखी वमन करावे, मकडी कुष्ट रोग करे, अरूनेरी मधुरा काटा तथा काष्टना टुकडा, वडा वगेरे के तेना सदृश रूपवाळा शाक भाजीमां वींछी आवी जाय तो ताळु वींधे, अने वाळ आवे तो गळामां अति पीडा करे इत्यादिक रात्रिभोजनना दोष छे उत्तम पशु पक्षी पण रात्रि भोजन करता नथी माटे रात्रि भोजन [२]वर्जवु, अने दिवस छतां पण अंधारामां

तावीने बीजी आज्ञा लोपे छे कीडी, कुंथु, जु, इली, उंदेइ, मच्छर वगेरे झीणा मोटा जीवनो घात रात्रे खावा पीवाथी थाय छे, ते काम आर्यने छाजतु नथी.

ज्यारे माग्यु न मळे त्यारे अने जोगवाइ न होय त्यारे के मा दगीथी अने लंघनथी भुख्यो रहे तो रात्रिभोजनना त्यागनु फळ नथी, पण छती शक्ति अने छता जोगे त्याग भावे इच्छा रुंधे तो रात्रिभोजन तजवानु दररोज अरधा उपवास प्रमाणे महाफळ थाय छे

१ करोळीयो

२ पुराण आदि हिंदु शास्त्रोमां पण रात्रीभोजननु महापाप कहेलु छे अने एज कारणथी सूर्य छता एक वखत भोजन करवानु फरमान करलु छे

श्रीनिशीथसूत्रनी चूर्णिमां पण कहलु छे क ढेड गरोळी

साकडा वासणमां जमवु ते पण तेवुज दोषित छे. दिवसे बनावेलु भोजन रात्रिए खावु, रात्रिए बनावेलु रात्रिए खावु, रात्रिए बना वेलु दिवसे खावु ए त्रणे भांगा अशुद्ध छे. फक्त दिवसे यतना पूर्वक

नो अवयव रात्रिए जमवामा आवे तो जरुर पेटमां गरोळी जेवा जीवडां उपजे, अने सर्पादि लाळ पडेल्र होय तो मोत नीपजावे छे उदर वगेरेनी लींडी के मूत्रथी महा व्याधि थाय छे, तेमज व्यतर पण छळे छे

तेज निशीथ सूत्रना भाष्यमा लेख छे के. जो रात्रे फासु चीज (तैयार लाडु पेडा खजुर द्राक्षादि खाय तो पण तेनाथी दीवो के चद्रनु प्रकाश छता कुंथु तथा पचवर्णी (ते ते चीजने रगे) लील फुगी प्रमुखनी विराधना थाय माटे अनाचरणीय छे. मूळ व्रतनो विराधक थाय.

स्कदपुराणमां रात्रे पाणीने लोही जेवुं तथा अनाजने मांसना कवळ जेवु कीनेलु छे.

रुद्रे कपाळमोचनस्तोत्रमां रात्रे न खाय तेने तीर्थ यात्रानु फळ कहेलु छे. तथा दान, स्नान, श्राद्ध, पूजा, आहुति अने भोजन एटला वानानी रात्रे मनाइज करी छे

आयुर्वेदमां हृदय अने नाभि कमळनु मींचाइ जवु रात्रे होय, तेथी तेमा कोइ (चार प्रकारे) आहार न करवो एम कहेलु छे.

योगशास्त्रे सांझे तथा सवारे बेबे घडी सूर्य छतां पण रात्रि तरीके खान पान तजवानु महा पुण्य थवु कहेल छे

बनावेलु भोजन दिवसे खावु तेजशुद्ध छे. मुख्यताए सूर्यास्त पहेलां तथा सूर्योदय पछीनी बे घडी सुधी पण आहार वजवो. तथा रग भग वखत एटले सूर्य छतां पण अत्यंत सूर्य अस्तगमननी नजीक आवी जाय, जेम के सूर्य काइक जणाय अने काइक नहि एम भ्रम पडती वखते पण भोजन अवश्य वर्जवु सपूर्ण सूर्य छतां चौविहार-ना नियमवाळा विरतिवंत भाग्यशाळीए छेवट सूर्य अस्त थया पहेलां पाच दश मिनिटे वापरी लेवु जोइए,[1] तिविहार, दुविहारना पण नियम लेनार ते मुजब करी लेवु जोइए, अन्यथा सहसा दोष लागी जवा संभव छे एक मास पर्यंत दररोज चौविहार करनार भव्यने पदर उपवासनु फळ शास्त्रकारे कह्यु छे, ने अनुक्रमे ते मोक्ष वधुने नर ए निःसदेह छे वळी जेओ चौविहार करवाने अशक्त

१ रात्रे जमवा साथे जो पाणी भरली थाळी जोडे मूकशो तो तेमां जेटला जतु पडेला जुओ–जाणो तेटलानु मासाहार कर्यु जाणी वर्जवु.

श्राद्धविधिमा उत्सर्ग मार्गे दिवसेज 'दिवस चरिम' पच्चखाण करवु, पण अपवादे तो रात्रीए पण करवानु कह्यु छे योग-शास्त्रादिकमा 'दिवसचरिमं' शब्दनो अर्थ अहोरात्रीनो शेष–बाकी रहेलो काळ एम अर्थ करल छे तेथी रात्रे 'दिवसचरिम' न थाय एकात नहि, पण छेवट राखी दिवसेज करवु उचित छे चौविहार तिविहार अथवा दुविहारनु पच्चक्खाण करवानो दरेक जैने नानपणथीज अभ्यास पाडवो जोइए

होय तेणे यथाशक्ति तिविहार, दुविहार तो अवश्य करवोज जोइए. रात्रिए पाणी रुधिर समान अने भोजन मांस समान छे एम अन्य-मतिना शास्त्रमां पण कह्युं छे एक इटालीयन कवितानो अर्थ नीचे मुजब थाय छेः—

पांच वागे उठवुं, अने नव वागे जमवुं,
पाच वागे वाळु, अने नव वागे सुवुं,
एथी नेवुने नव, वरस जीवाय छे

अर्थात् रात्रिभोजन परिहरवामा धार्मिक साथे शारीरिक लाभ पण घणो समायेलो छे अने उभयलोकमां ते सुखकारी छे; माटेज दश दृष्टांते दुर्लभ एवो आ मनुष्य जन्म तेमां पण रत्नचिंतामणि रूपी जैनधर्म पुण्य उदये प्राप्त थयो तो आत्मानु कल्याण करवा प्रमाद त्यजी रात्रीभोजनने देशवटो देवो के जेथी चोराशी लाख जीवयोनिमांथी मुक्त थइ अजरामर सुख पामीए पुत्रादिक उपर ममताने लीधे रात्रिभोजन करावबु ते पण ठीक नहि. पण जो तेओ रात्रे आहार मागे तो तेना खरा हित अर्थे रात्रिभोजनना दोष समजावी तेओने पण सुधारवा, वळी जेओ पोतेज रात्रिना आहार, अथवा तो दूध, चा, कॉफी, कावो प्रमुख लेवाना भोगी होय, तेओ ज्यारे उत्तम सामग्री पामे छते स्ववशे मनने दृढ करी सकामनिर्जरा करता नथी, तो जे वखत तेना किंपाक समान फळो जेवां के-नारकीमां सीसाना धगधगतां रसो पीवानां, तिर्यंचमां सुख, तृपानो

वेदना, तथा परवशे चाबुक परोणा वगेरेना मार पडे ते सहन करवा-नां उदयमां आवशे त्यारे पश्चात्ताप थशे के हा ! इति खेदे में पूर्वे बहु अनाचार सेव्यो ! माटे हे भव्यो ! हजु चेतो, ने रात्रिभोजनथी विरमो क जेथी शिवसमृद्धि वेगे संपादन थाय

१५ बहुबिज—जे फलोमा बीजे बीजने अंतर होय नहि, अर्थात् बीजे बीज अडेला होय एवी रीते जे फलादिकमां बीज रहेला होय, जेमां गर्भ थोडो ने बीज घणां होय, जेना जुदा जुदा खानां (स्थान) बीज रहवाना नथी ते बहुबीज जाणवा कोठींबडा, टींबरु, करमदा (बीज थया अगाउ अनंतकाय), रींगणा, खसखस, राजगरो, पपोटा, पटोल प्रमुखमा जेट्लां बीज छे तेटला तेमां पर्याप्त जीव छे, तेथी त्याग करवो, जेथी खावामा थोडु आवे छे अने जीव हिंसा घणीज थाय छे, माटे बहुबीजवाळी चीजोनो सर्वथा त्याग करवो श्रेष्ठ छे बहुबीज फल खावाथी पित्त प्रमुख रोगनां कारण थाय छे, तथा जिनआज्ञा विरुद्ध छे दाडम तथा टींडोरां अभक्ष्य नथी

१६ संधाणा शब्दे बोळ अथाणुं ते अनेक वनस्पतिओनु करे छे, जेमके, आववेली, पाडल, लींबु, केरी, गुंदा, केरड, करमदां, कारडी, डाळा, गुवार, लीलां मरी, चीभडां, मरचा प्रमुख अथाणु त्रण दिवस उपरांत अभक्ष्य छे ए सर्वे अथाणां तुच्छ अने त्रस जीवनी खाण छे कंदमूळ (आदु, हळदर, गरमर, गाजर, कुवार अने मोथ) के जे अनंतकाय छे ते वस्तु, तथा पचुंबर, बहुबीज अने बीला

चीली, लीलो वांस केतेना जेवी मथमथी अभक्ष्यरूपे गणाती चीजोनु अथाणुं पण नज कराय. चोथे दिवसे तेमा निश्चय बे इंद्रिय जीव उपजे, अने एठे हाथे स्पर्श करे तो पचेंद्रिय संमूर्छिम जीवो उपजे. लीला वीला (मरी) जे मलबारथी मीठानां पाणीमा आथीने अहिं आवे छे ते बोळ अथाणुज छे, तेथी ते अवश्य वर्जवां. तेने अहीं आवता घणा दिवस लागे तेथी ते बोळ अथाणुज होय छे.

अन्य दर्शनीयोना शास्त्रमा पण बोळ अथाणु नरकद्वार तुल्य गण्यु छे, ते माटे तेनो सर्वथा त्याग करवो जोइए, जे फळमां खटाश छे ते, अथवा तेवी वस्तुमां भेळवेलु होय ते अथाणु त्रण दिवस उपरात अभक्ष्य, पण जो केरी लींबु प्रमुखनी साथे नहिं भेळवेलु, जेमके गुवार, गुंदां, डाळा, चीभडां, मरचा प्रमुखनु अथाणुं के जेमां खटाइ नथी ते तो एक रात्रि वीत्ये एटले बीजेज दिवसे अभक्ष्य थाय. केरी के लींबुनी साथे आथ्यु होय तो त्रण दिवस खावामां बाधक नथी. पण जो तेमां शेकेली मेथी नांखी होय तो बीजेज दिवस वाशी थवाथी अभक्ष्य छे. कारण के मेथी धान्य छे, तेथी मेथी के आटो दाळीआ नांखेल होय तो तेज दिवस वपराय वळी जे अथाणामां मेथी नांखी होय के काचा गोरस साथे खवाय नहि. केरी, गुंदा, खारक, मरचा प्रमुखनुं सुकवेलु अथाणु बनावेछे ते पण तडका बरोबर न देवाया होय अने लीलाश रहेवाथी वाथ्यु वळी शकतु होय तो तेवु अथाणु पण त्रण दिवस उपरांत अभक्ष्य थाय. त्रण तडका देवा तेवु काइ नथी पण ज्यां सुधी रगदी जेवु सुकाय

त्यां सुधी पांच सात के वधारे दिवस पण तडका देवा जोइए ते मुजब सुकव्या बाद राइ गोळ चढाव, अने तेलयुक्त[1] होय तो तेवु अथाणु वर्ण-गन्ध-रस-स्पर्श फरे नहि त्यां सुधी भक्ष्य समजे छे, पण तेल ओछु होय तो वेलासर वगडी अभक्ष्य थाय. हवे आ प्रमाणे उपयोग पूर्वक करेला अथाणा माटे पछी पण बहु उपयोग तथा काळजी राखवी जोइए

(१) अथाणानी बरणीओ खुब गरम पाणीथी साफ करी लुछीने कोरी कर्या बाद भरवु जोइए

(२) ते बरणी उपर सख्त ढाकणु मूकी कपडाथी मजबुत बांधवु, तेमा हवानो प्रवेश न थवो जोइए, नहिंतर चोमासामां हवा लागवाथी लीलफुग थवाथी अभक्ष्य थाय

(३) अथाणु नोकर चाकर के बाळकचा पासे कढाववु नहि, पण घरना उपयोगवंत माणसे जाते हाथ स्वच्छ करीने कोरा कर्या बाद चमचानती अगर बीजा कोइ साधनवडे काढवु पण बनता सुधी हाथ बोळी (नाखी) ने काढवु नहि, वळी पाणीवाळा हाथ कोरा कर्या पछीज काढवु नहिंतर तेमा पाणीनु फक्त एकज टीपु पडवाथी जीवोत्पत्ति थाय, माटे आ बाबत खास उपयोग राखवो.

---

१ अथाणामां ते चीज उपर (डुबती रहे तेवु) तेल के सरसीयु नाखेल होय ते.

(४) अथाणानी बरणी उपर कीडी, मकोडा प्रमुख जीव न चडे तेवा स्थानके राखवु, तथा चोमासामां हवा न लागे तेवी जग्याए राखवुं, केटलाक अथाणां मुरब्बा प्रमुख अंधारामां राखे छे अने तेनो रस प्रमुख पडवाथी ने साफ न थवाथी ते जग्याओ चीकाशवाळी ने गंदी थवाथी त्यां मच्छरादि जीवो थाय छे, अने अधाराने लीधे काढता करता ते विचारा जीवो ते बरणीओमां पडवाथी काळवश थाय छे, पछी पटमा पण आवे, तो ज्यां सारु अजवाळु पडी शकतु होय त्यां तथा सारी जग्याए राखवु

(५) सूकवती वेळाए जेवु तेवु सूकव्यु होय तो ते अथाणा त्रण दिवसथी वधारे उपयोगमा न लेवाय, माटे उपर कह्या मुजब सूकववु जोइए, तथा अथाणां करती वखते पाणीनो किंचित् स्पर्श मात्र पण थवो न जोइए

(६) वळी आ अथाणाओ वरस के तेथी वधारे मुदत पण राखी मूकाय छे, पण तेम न करता जेम बने तेम थोडा वखतमांज वापरी नाखवा जोइए

उपर लखेल सूचना अनुसार अथाणु करी वपरातु होय तोपण दोष लागे के नहि ते पण केवळीगम्य. पण आज आपणे प्रथम तो रसइंद्रियना लालचुओ ते मुजब सूकवीएज नहि; कारण पछी तेमांथी स्वादनी लहेजत मळवी मुश्केल, अने उपरनी सूचनाओ मुजब करवा-वर्तवावाळा भाग्ये कोइ विरला होय उपरना तुच्छ अथाणाओनो

खरखर जिह्वाइंद्रियनो जय करनारा रत्नशिरोमणि वीरपुत्रोज त्याग करे छे, अने तेज खरेखर प्रशसनीय छे; कारण आ जीवे अनतीवार दरेक चीजो खाइने वमन कर्युं तोपण तृष्णा जती नथी ते आश्चर्य ज छे। अणाहारी थया शिवाय कोइ मोक्षे गया नथी, जता नथी ने जशे पण नहि, तो क्रमे क्रमे आवी तुच्छ अभक्ष्य वस्तुपरथी ममत्व भाव उठाडवो के जेथी सदाने माटे अणाहारी पद प्राप्त थाय

१७. घोलवडा शब्दे द्विदल जे निदळ—कठोळ नि स्नेह *छतां दाळ थइ शके एवा होय, बे सरखी फाड थाय, जेमा चीकणाश न होय, अने घाणीमा पील्वाथी तेल न नीकळे ते तथा तेना सुका के लीला पत्र अने ते शिवाय पण जे तेल विनाना होय अने जेनी बे दाळ थती होय, पण ते वृक्षनु फळ न होय, केमके सांगरी (वृक्षनु फल छे तेथी द्विदल नहि) प्रमुख वृक्ष फल शिवाय सर्वे द्विदल जाणवा, केमके चणा, मग, मठ, अडद, तुवेर, वाल, चोळा, कळथी, मटर (वटाणा), लाग, गुवार, मेथी अने मसुर प्रमुख कठोल तथा तेना लीलवा, तेनी दाळ, लोट तथा मेथी भाजी विगेर द्विदल छे तेनी साथे काचा गोरस (दूध-दहि के छाश)नो सयोग थताज तत्काळ बेइंद्रिय जीव उपजे छाश,दूध, दहि खुब गरम करी अथवा गरम कर्यां पछी ठंडा पाडीने विदल साथे मेलवे तो दोष नथी. मेथी, गुवार, कठोल मात्रना पादडानी भाजी, वालोळ, तुवेरा, चोळाफळी, मगनी फळी, गुवारनी फळी वटाणानी फळी

---

* तेल नीकळी शके नहि ते.

लीला चणा, पांदडी वगेरेनु शाक, सुकवणी, सभारो, अथाणुं के दाळ, बुंदी, कळी (सेव), गांठीआ प्रमुख तळेलु जे कांइ होय तेनी साथे तथा मग, अडद चोळा प्रमुख कठोळना पापड, वडी प्रमुखनी चीजो साथे, तथा मेथी नांखेल अथाणा साथे काचां गोरस (दूध-दहि-छाश) नो संयोग न थवो जोइए. घोलवडां (दहींवडां) ते द्विदल छे पण ते घोलवडां जो उकाळेला गोरसमां कर्यां होय तो तेज दिवस भक्ष्य, काचा गोरसना अभक्ष्य छे राइ तथा सरसव द्विदल नथी, कारण तेमां तेल छे शिखंडनी साथे पण द्विदलनो स्पर्श न करवो. स्पर्श दोष टाळवा द्राक्ष, केळा, खारेक वगेरेनु राइतु पण गोरस उनु कर्या पछीज बनाववु जोइए. घउ बाजराना रोटली रोटला साथे काचु गोरस खावु होय तो द्विदलवाळु वासण हाथ तथा मुख वगेरेनी शुद्धि कर्या पछी वापरवु; अथवा जो प्रथम काचु गोरस खाधु होय तो ते वासण हाथ मुख वगेरेनी बरोबर शुद्धि कर्या पछी विदल वापरवु अर्थात् कोइ पण रीते किंचित् पण विदल ने काचा गोरसनो अन्योअन्य संयोग न थवो जोइए कढी, राइतु, दहिवडी, ढोकलीयो, शाक, दाळ (जेमां गोरस नाखवु होय ते) विगेरे करतां पहेलां छाश के दहि हवा उडा थवा जेवां गरम केटलाक करे छे पण तेम करवा करतां छाश दहिमां मीठु (निमक) अथवा बाजरानो लोट नांखी सारी रीते गरम थतां सुधी हलाव्या करवाथी छाश फाटी जशे नहि, माटे सारी रीते उकाळवु जोइए; परन्तु [illegible] गरम थयु (सामान्य वराळ नीकळे)

विध्वस थवानो स्वभावज छे तेथी पुद्‌गल परथी ममत्व भाव उठाडी हे वीरपुत्रो ! हवे तो मोहरूपी निसो उतारो, प्रमाद दुर करी जाग्रत थाओ, अने आ मनुष्य जन्मनु सार्थक करो ! आज करशु काल करशु एम विचारणा करता करता यमराजना सपाटामा ओचिन्ता जेम "आइ अचानक काल तोपची, गहेगो ज्यु नाहर बकरीरी" नी माफक फमाइ जशु, माटे पाछळथी परताउ न पडे तेमाटे सवत प्रयास करवा उजमाल थाओ ! आ हजु हमणाज प्रभुजी कही गया छे "क्षण लाखेणो जाय" ते केम भूली जाओ छो ! ते वाक्य अहर्निश याद करी आ क्षणिक अने परिणामे दु.खरूपी सुख उपरथी राग उठावी द्विदलनो सर्वथा त्याग करो तोज जिनेश्वर महाराजनी आणा यथाथ पाळी कहेवाय तेवा जगत्वद्य जिनेश्वर महाराजना वचननो अखडितपणे आदर वधारे आपणे करशु अने अविचल सुख पामशु ?

१८ वेंगण—सर्व जातिना रींगणा अभक्ष्य छे, कारण के एक तो तेमा बहु बीज छे, तथा तेनी टोपीमा सूक्ष्म त्रस जीवो होय छे वळी ते खावाथी कामसज्ञा (दुःशीळता) अने निद्राने वधारे छे वळी ते अति विकारी तथा निर्ध्वंस परिणाम उपजाववावाळा छे पित्तादिक रोग पण थाय छे तेथी तेनी सर्व जाति अभक्ष्य छे [१]रींगणानी सुकवणी करीने पण खावानो निषेध छे, तेथी तेने तो

[१] पुराणादि अन्य शास्त्रो पण रींगणानो निषध करे छे 'यस्तुवृताककालिंगमूलकाना च भक्षक अतकालेस मूढात्मा न स्मरिष्यतिमामिये ॥'

शीघ्रताथी जलांजलीज देवी. केटलाक रोगना कारणे आ अने आवी अभक्ष्य वस्तुनो आगार राखे छे. पण बधुओ ! जे कर्मरूपी रोगनुं उन्मूलन करवा माटे त्रिकालज्ञानीओए आ अभक्ष्य वस्तुनो त्याग करवो कह्यो छे त्यारे आपणे तेनो अनादर करी कर्मरूपी रोगवृद्धि थवा माटे रींगणा प्रमुख वापरी भवभ्रमण विशेष वहोरी लइए छीए अफसोस छे के आपणा रोगनु तेथी निवारण थवाने बदले खरेखर तेने पुष्टि मळे छे भव्यो! ज्ञानचक्षुथी जरा विलोकन करो ! हवे आटलेथी विरमो! जेथी आपणे कर्मरूपी रोगनु विदारण करी अमरपदवी वेगे लइए

१९. अजाण्यु फळ–जेनु नाम कोइए न जाणतुं होय, तथा कोइए न खाधां होय तेवां फळ के फुल अभक्ष्य छे, कारण के तेना गुणदोषनी खबर नथी कदाच विषफळ होय तो आत्मघात थाय ते माटे तेनो त्याग करवो. वकचुल राजकुमारने हितस्वी महान् उपगारी गुरुमहाराजे अजाण्या फळनो नियम कराव्यो हतो, जे तेणे अति क्षुधा लागवा छता पण दृढपणे पाळवाथी तेना प्राण बच्या, अने तेनी साथेना बीजा चोरो अजाण्यां फळ खावाथी काळने वश थया. भो ! भव्यो ! आवा परमकृपाळु केवळ निःस्वार्थी

वळी कहुं छे के रींगणाना शाकनो धुमाडो लागतां आकाशे चालतु विमान अटके छे. जो पुराणीओ उक्त शास्त्रने मान आपता होय तो तेणे तेमां स्पष्ट रीते निषेधेली वस्तु पोतेज नर्जी दइ श्रोता उपर दाखलो सज्जड बेसाड्वो जोइये

तीर्थंकर महाराज तथा गुरुमहाराजनो शीघ्र अनता दुःखमाथी मुक्त करवानो उपदेश पूर्वे पुन्य उदये जे पाम्या छीए ते फरी मळवो दुर्लभ छे पुन्यरूपी मूडीनूं व्याज खवाइ गयु अने हवे तो मूडी पण खावा मड्या, अने जो ते सघळुखाइ जशुं तो परभवे सुखसपदा क्याथी पामशु? माटेज शांत अने गभीरतादिक अनत गुणना धारक प्रभुजीनी आ उमदी शीखामण मानो अने तद्वत् आचरणा करवा वीर्योल्लास फोरवो! जेथी स्वयमेव मोक्षमाळा कठने विषे आरोपित थाय.

२० तुच्छफळ–जे असार पदार्थ होय, तृप्तिकारक होय नहि, घणा आरंभे पण तृप्ति थाय नहि, खावु थोडु ने फेंकी देवु घणु, जेमके चणीबोर,[1] पीलु, पीचु[2] गुदी,[3] मोर[4] प्रमुख ते तुच्छफल छे तथा अत्यत कुमळी मग, चोळा, गुवार, वाल, समी प्रमुखनी शींग तथा बीजी जे फळनी जातिओ के फळीनी जातिओ अति कोमळ होय ते सर्वे तुच्छ औषधि जाणवी अने चणाना फुल, केरीना महोर के जेमा गोटली बंधाणी न होय, बोरना ठळीआमांथी गर्भकाढीने खावो ते वगेरेमा प्रसग दूषण पण लागी जाय, वेमके घनस्पतियो अति कोमळ अवस्थामां अनतकाय पण होय छे, तेथी अनतकायना व्रत भग थइ जाय एवी वस्तुओ बहु खाइए तो पण तृप्ति न थाय,

---

१ चणीना आमच्चोरमां पण त्रसजीवो थाय छे २ पेच. ३ घट गुदा, जांबु पण तुच्छ फल गणाय छे. ४ आंबानो मोर.

अने खावामां थोडो आवे, तथा खाधा पछी तेनी गोटली (ठळीया) बहार नांखीये एटले तेमा मुखनी लाळ अडकवाथी असंख्य (लाळीया) समूर्च्छिम जीव उत्पन्न थाय, तथा जे पुरुष बहु तुच्छ फळ खाय तेने तत्काळ रोग पण थइ जाय छे, तेथी तुच्छ फळ सर्वथा वर्जवां. हे बंधुओ! ज्यारे आ तुच्छ अभक्ष्य वस्तु उपरथी आपणो तुच्छ ममत्व भाव उठशे त्यारेज शाश्वता अनंत सुखनी ल्हेरीओमां मग्न थवानो समय शीघ्र प्राप्त थशे

२१ चलित रस—कोइ सडयु अन्न, वाशी रोटलो, रोटली, भात, दाळ, शाक, खीचडी, शीरो, लापशी, भजीयां, थेपलां, पुडला, वडां, नरम पुरी, ढोकळां विगेरे अनेक रसोइ के जे एक रात्रि व्यतीत थये वाशी थाय—एटले सूर्य अस्त पछीज ते ते चीजनो स्वाद गंध रंग स्पर्श बदलाइ जतां "चलितरस" थवाथी अभक्ष्य छे. मिठाई वर्षाकाळमां सारी उत्तम प्रकारनी बनावी होय तो उत्कृष्ट पंदर दिवस, उन्हाळामां वीश दिवस, शियाळामा एक मास सुधी भक्ष्य छे, अने बनाववामां कचाश रहेवाथी जो तेनो वर्ण, गंध, रस, स्पर्श फरे तो काळ परिणाम पहेलां पण एटले आजनो बनावेली मिठाइ आजेज अभक्ष्य छे. शास्त्रमां जेटलो काळ कह्यो छे ते वित्या पछी ते चीजनो चलित रस थाय छे त्यारे असंख्य बे इंद्रिय जीव तेमा उपजे छे, तेथी श्रावके रात्रे तलमात्र पण अन्न के एठवाड राखवो नहि जे विवेकी पोते भाणामां पीरसेलु काइ एठु न छाडे, तथा थाळी वाटको धोइने

पीए छे तेओने निमित्ते समूर्च्छिम पचेंद्रिय मनुष्य असख्य उपजता अटके छे, तेथी आविल तपना जेवो लाभ मळे छे, माटे जमणवार करीने ठाम के एठवाड रातवाशी नज राखवो. दिवसे एठु पण बे घडी पहेला परठवी देवुं, अने जो जनावरना उपयोगमा आवी जाय तो ते वधारे सारु. लापशी, शीरो प्रमुख सूर्य अस्त पहेला जो सारी रीते घीमां दाणे दाणो छुटो थाय तेवु शेकी नांख्यु होय अथवा रोटली रोटला साखरा वगडी जेवा आकरा शेकी नाख्या होय तो ते वाशी न थाय रात्रे रांधेलु पण खावु युक्त नथी सवारे सूर्यना किरण फुट्या पछी के ज्यांथी जीवनी यत्ना पाळी शकाय त्यांथी चुलानो आरभ राखी ने सांजे सूर्य अस्त थये ओलवी नांखवो जोइए, तेज श्रावकनो दयाळु आचार छे.



चलितरस आश्रयी सूचनाओ.



१ आटो–चाळ्या वगरनो लोट दळ्या (पीस्या) पछी केटलाक दिवस मिश्र (कांईक सचित्त ने कांईक अचित्त) रहे छे, पछी अचित्त थाय छे. श्रावण, भाद्रवामां आटो दळ्या पछी वगर चाळेलो पाच दिवस मिश्र रहे. आसो, कार्तिकमा चार दिवस, मागशर, पोसमा त्रण दिवस, माह, फागणमां पाच पहोर; चैत्र वैशाखमां चार पहोर; अने जेठ, अषाडमां त्रण पहोर मिश्र रहे, पछी अचित्त थाय अने जे दिवसे दळ्यो होय तेज दिवसे चाळ्यो होय तो बधी ऋतुमां तेज दिवसे अचित्त छे, अने बे घडी पछी

कारण पडचे मुनि महाराज पण वहोरी शके सिद्धांतमां आटानो काळ जोवामा आवतो नथी, पण अचित्त थयेला लोटमा पण खोराश थयेथी अथवा वर्ण, गध, रस पलटाय एटले अभक्ष्य छे, तथा जीवनी उत्पत्ति जोवामा आवे तो ते लोट चाळीने न खवाय–अर्थात् ते [1]अभक्ष्य थयोज मानवो. चोमासानी ऋतुमां आटो दररोज बे वखत, तथा शियाळा उन्हाळामा एक वखत चाळवो, कारण न चाळवाथी तेमां जाळा बाजी जाय छे अने ते तुरत बगडी अभक्ष्य थाय, तथा दरेक वखत वापरतां पहेलां अवश्य चाळवो, जेथी जीवनी यत्ना सचवाय बाजरानो लोट घउ चणानो लोट करतां घहु

---

१ जुओ यांत्रिक पडसुदी, रवो.

व्हेलो खोरो थइ जाय, तेथी उपयोग राखवो बने त्यां सुधी कारण वगर सामटो दळवो दळावरोज नहि आटो तैयार बजारमांथी लेवो नहि, कारण के वेपारीने त्यां घणा दिवसनो जुनो माल होय, सडेलो तथा हलको दाणो बरोबर जोया तपास्या वगरनो पण दळवा आप, तेओने तो व्यापार करवो छे एटले माय॰ थडज करे; जेथी स्वघेर सारो माल मगावी, जोइ तपासी जयणा पूर्वक दळवो के दळाववो, अने सारा आक[1] वती चाळीने वापरवो घउ प्रमुख मा केटलीक वखत बहु झीणा सार होय छे ते तेमा धनेडा प्रमुख जीवनी उत्पत्ति थाय छे, ते जीवो बहु झीणा होवाथी एकाएक नीकळी शकता नथी, पण ज्यारे मोटा थाय छे त्यारे ते दाणामांथी नीकळी शके छे, तेथी तेवा दाणाओ वीणीने उपयोग पूर्वक सारी [2]जग्याए मूकी देवा; पण केटलाक तेने सहज छिद्रो समजी जेमने तेम दळवा पण आपी दीये छे ते खेदजनक छे तुच्छ स्वार्थनी खातर तेवी वर्तणुक अथवा प्रमाद महा अनर्थकारी थाय छे आतो काइ कोइ दाणा तेवा होय छे, पण केटलीक वखत सामटो दाणो भरे छे ते ऋतु फेरफार आदि कारणथी तद्दन सडी जाय छे तो तेवा दाणा गमे तेटला प्रमाणमा होय तोपण किंचित् न वापरवा मुख्यताए तो जेम जोइए तेम मण बे मण के पाच मण परीक्षा करी सारो माल लेवो युक्त छे, पण कदाच तेम न बने तो तेने उपयोग पूर्वक राखमा

१ जीवनी सारी रक्षा थइ शके तेवां साधन २ ज्यां पांजरा-पोळ न होय त्यां पण जीवातनी रक्षा माटे ओरडा अवश्य जोइए.

भारवा, पारो देवो, तथा अगार नवार जोवा तपासवानो उपयोग करवो जोइए. तेमा पण चोमासामां खास करी दरेक वस्तुओमां जीवोत्पत्ति थवानो संभव होवाथी अति संभाळ राखवी. आ वगेरे कार्योमां स्त्रीओए विवेक तथा चतुराई पूर्वक पोतानी फरज समजी उपयोग करवो घटे छे. वळी जो बनी शके तो दळवा पण न आपे कारण के तेने तो मजुरी करवी होय तेथी घटी प्रमुख पुंजे के नहि, घटी उपर चदरवो पण होय के नहि (प्रायः करी तेओ धर्मना अजाण होवाथी तेवो शुद्ध उपयोग क्यांथी राखे!) तथा तिथीने दिवसे पण दळे अने भेळ संभेळ–दगो पण करे, पण आ पंचम काळमां मोटा शहेरोमां गरीब स्थितीनो माणस दळावीने वापरे त्यारे श्रीमंत पुरुषोनी तो शी वात! पण धर्म तो श्रीमंत के गरीब बन्नेने माटे एक सरखो छे शास्त्रमां घटी उपर चदरवो न होवाथी केवा केवा दोषो कह्या छे ते वगेरेनु अत्रे विवेचन न करता टुंकमां एटलुज कहेवुं बस छे के आपणे जीवदयाना हेतु माटे जयणापूर्वक जेम आजथी फक्त पचीश के पचास वर्ष पहेलां श्रीमंतोना घरवाळाओ जातेज दळतु, पाणी भरवुं वगेरे कार्यो करता हता तेम करशु तो तेमां लघुता नथी, पण आ बाबत सुज्ञ बहेनोनेज लागणी होय तो घणे दरज्जे सारो उपयोग राखी अनेक जीवोने जीवितदान आप्यानुं फळ मेळवे, तथा अनुक्रमे सुख संपदा पामे तेथी जयणापूर्वक जाते करवु तेज उत्तम छे.

२. जलेबी–जलेबीनो आथो करवानी जे रीत छे तेज जीवोत्पत्तिनी हेतु छे कोइ ठेकाणे दिवसना आथो वगेरे बनावी तेज'

दिवस जलेबी बनावी उपयोग करे छे, अने तेमां दोप लागतो नथी एम कहे छे पण आ बावत विशेष निर्णय करता जणायु छे जे किंचित् पण जुना घोळनु जामण दीधा शिवाय नवो घोळ कदि उपसतो नथी, अने उपस्या विना जलेबी फुले नहि, माटे जे आथो होय ते उपसे छे अने घोळ उपसतो नथी माटे जलेबी कोइ पण रीते अनाचरणीय जणाय छे, केमके तेमा असख्य बेइंद्रिय जीव उपजे छे, तेथी तेनो सर्वथा त्याग करवो जलेबी दिवसनो बनती नथी एम सांभळ्यु छे, छता तत्व केवलीगम्य, पण बजारमा जे थाय छे ते तो रात्रेज आथो करे छे तेथी ते अभक्ष्य ज छे

३ हलवो—लीलो, सुको, बदामी विगेरे जातनो हलवो अभक्ष्य छे कारण क घउना लोटने बे त्रण दिवस सडावीने तेमाथी सत्व काढीने पछी बनावे छे. तेथी तेमां असख्य जीव उत्पन्न थाय, माटे तेनो सर्वथा त्याग करवो युक्त छे. दूधीनो हलवो फक्त ते दिवसनो करेलो भक्ष्य छे, बीजे दिवस अभक्ष्य थाय छे जलेबी हलवो के जे घणा आरंभथी निष्पन्न थाय छे. तेनो अवश्य त्याग करवो जोइए मुंबइमां हलवो बहु प्रसिद्ध होवाथी जेओ त्यांथी स्ववतन जाय छे त्यारे हलवो खास करी लइ जाय छे पण बधुओ ! अनेक बेइंद्रियादिक जीवोनी हिंसावाळा पदार्थ खावा के खवराववामा आ

फळ चाखवा पडशे, ते वखते माता,

मित्र अथवा तो स्त्री कोइ

नहि आवे के, यती

वेदनामांथी थोडी पोते अंगीकार नहि करे, अर्थात् सर्व कर्मनो भोक्ता आपणोज आत्मा थशे माटे तेवा अभक्ष्य पदार्थ मुद्दल वापरवा नहि, तेम नातमां के कुटुंबी अथवा अन्यदर्शनीने त्यां जमवा जता पण ते अभक्ष्य वस्तुओने विषसमान समजी स्पर्श पण न करवो खांड वगेरेना रमकडांनी जनावररूपे करेली चीजो अभक्ष्य छे. जेम यशोधरे पूर्वे मातानी दाक्षिण्यताथी अडदनो कुकडो कल्पी मारीने मांसरूपे कल्पी तेनु भक्षण कर्युं तेथी उपराउपर तिर्यंचना भवोमां केवा छेदन भेदनादि थया, माटे ते अवश्य वर्जवु. धर्मी मातपिताए आ बाबत अवश्य लक्ष्यमां राखी पोताना बाळकोने तेनी समज आपवी.

४ अम्रती—अम्रती के जे कलकत्ता तरफ बनावे छे, तेनो देखाव लगभग जलेबीना जेवोज जणाय छे, पण अम्रती बनाववामां आथो करवो पडतो नथी तेथी ते वस्तुओ दिवसना उपयोगपूर्वक बनावी होय तो ते दिवस वापरवामां बाधक जणातो नथी, बीजे दिवसे ते अभक्ष्य थाय छे. माटे तेनो निर्णय करीनेज लेवी

५ मावो—दूधनो मावो जे दिवसे कर्यो होय, तेज दिवसे भक्ष्य छे रात्रीए अभक्ष्य थाय छे, पण जो ते मावाने घीमां तळीने सोंतळी राख्यो होय तो रात्री रही शके, तेथी पेंडा, बरफी, जांबु, घारीपुरी, मोहनथाळ विगेरे मिठाइ के जेमां मावो आवे छे ते मावानी मिठाइ तुरत बनाववी जोइए, अने चार पांच दिवसमां तेनी मिठाइ प्रमुख वापरी नांखरी जोइए. ते उपरांत राखवाथी खाटो

नरम होय तो वेळासर बगडी जाय नरम चासणीना मुरब्बामां पदर वीश दिवस पछी लील फुग थइ जाय छे, माटे आवी चीजो बनाववा-राखवामां बहु उपयोग राखवो. नींगोरा, सफरजन, ना रगीना मुरब्बानो लेप नथी माटे उपयोग धरीने वण गधादिकनी तपास करी लेवो घटीत छे. मुरब्बो अथाणां प्रमुख उघाडु रहेवाथी बगडी जवा सभव छे, अने मिठाइ, वसाणुं (सेव गाठीया प्रमुख) तद्दन बध राखवाथी बगडी जाय छे, अने चोमासामा तो हवा लागवाथी पण लीलफुग थइ जवाथी अभक्ष्य थाय छे माटे जे वस्तु जेम उपयोग पूर्वक सारी रही शके तेम करवु वहेवर छे के जेम बने तेम रस स्वादनी न्यूनता करी आवी वस्तुओनो त्याग थाय ते श्रेष्ठ छे. अने जो कोइ पण रीते जीभलडीने चाले नहि तो अति उप योगथी वर्तवानी आवश्यकता छे नहितर अनेक जीवोना विना शना कारणिक थइ दुगतिमां जइ करेल कर्म भोगववा पडे माटे कातो रस इंद्रियनो जयज करवो, नहितर प्रमाद वर्जी जयणापूर्वक वर्तवु जेथी अल्प दोष थाय

७ सेव, वडी, पापड, रोरो, फरफर, अडदनी सेव, साळेवडा के खीचीया पापड प्रमुख शियाळा उन्हाळामां सूर्य उदय थाय त्यारे तेनो लोट बांधी बनाववु,[1] अने सूर्यअस्त पहेला बरोबर सुकाइ जवु

---

१ सेव (परदेशी मेंदानी अभक्ष्य), पापड, अडदनी कळीनो लोट सूर्योदय पछीज बांधवो, वडी, फरफर, खीचीया (साळेवडा) जे चोखानो लोट राधीने करे छे ते पण सूर्योदयेज करवु रोरो पण

नहितर वाशी थाय. चोमासामां आवी चीजो बनाववी, राखवी के खावी युक्त नथी. कारण के तेमां त्रस जीव, लीलफुगनी उत्पत्ति थवा पामे छे. कदाच चोमासामां पापड (जे असाड सुद १ थी १५ सुधीमां बनावेला होय ते) खावा माटे राखवा होय तो तेने तडको अवार नवार देवो. अने वारवार पुजवानी तथा हेरववा फेरववानी बहु संभाळ राखवी, पण आजे प्रमादने वश थइ मायः तेवो उपयोग कदि राखता नथी के राखवाना नहि. माटेज चोमासामां नज खावा उत्तम छे केटलाक शियाळा, उन्हाळामां बनावेल सेव पापड प्रमुख चोमासु अने बीजा (आवता) शियाळा पर्यंत राखी खाय छे ते केवळ अयुक्त छे. खरी रीते तो अशाड सुद १५ पहेलांज तेवी चीजो वापरी नाखवी, अने कार्तिक सुद १५ पछीज बनाववी योग्य छे. सेव पापड प्रमुख जे बजारमां तैयार मळे छे ते वापरवु युक्त नथी, उपयोग पूर्वक घेरज बनी शके तेज वापरवु जोइए. पापड वडी चोमासामा अभक्ष्य छे एम श्राद्धविधिमां कहेल छे.

८. दूधपाक—बासुदी, खीर, शीखड, दूध, दूधनी मलाइ बीजे दिवस वाशी थाय तेथी अभक्ष्य छे, तथा रात्रे बनावेलु पण अभक्ष्य छे. रसस्वादनी लोलुपताने लीधे आवी चीजो बीजे

जे चणानो लोट मशालो पाणीमां आथीने पाडे छे ते पण सूर्योदये आथीने बनाववो जोइए, अन्यथा ते अभक्ष्य छे. विरतिवाळाए खास आवी चीजोनो उपयोग करतां अगाउ ते कया केवी रीते, बनावेल छे ते भक्ष्याभक्ष्यनो विचार कर्या पछीज वापरवु युक्त छे

दिवस राखीने आरोगवी ते शरम भरेलु छे. दहींनी मलाइनो फळा दहि मुजब जाणवो.

९. केरी—आर्द्रा नक्षत्र बेसे त्यारथी पाकेल केरीनो रस चलित थाय तेथी केरी अभक्ष्य छे गचाइ गयेली, सडेली, उतरी गयेली कायम अभक्ष्य छे. केरी चुसीने खावी ते करता रस काढीने ज खावो युक्त छे कारण चुसवाथी तेनो गोटलो ज्या नाखीए त्यां आपणी लाळ अडी होय तेथी असख्य समूर्छिम लाळीया जीव उत्पन्न थाय, वळी केरीमां त्रस जीव (इयळो) कदाच नीकळे छे, तेथी रस काढयो होय तो देखावाथी रसनी जीवातो पेटमां नहि जता तेनी रक्षा थाय. केरीनो रस उन्हाळानी सख्त गरमीने लीधे सवारनो काढेलो साज सुधी रही शकता थोडो सभव, तेथी ज्यारे उपयोग करवो होय त्यारे रस काढवो अने चार छ के आठ घडी राखवो होय तो ठडा पाणीना वासणमा रसनु वासण राखवु, अने ज्यां गरमी न लागे तेवी जग्याए राखवो आर्द्रा नक्षत्रथी केरीनो अवश्य त्याग करवो घटे छे, केमके त्यार बाद आ क्षेत्रमा तो केरी प्रत्यक्ष कोही गती जणाय छे

१० पापड—शेकेलो पापड बीजे दिवस सीतावी फरी जवाथी वासी थाय. तेल के घीमां तळेलो बीजे दिवस वापरी शकाय.

११ चटणी—कोथमीर, फोदीनानी जे चटणी करे छे, तेमा दाळीया (शेकेला चणा) के गाठीया प्रमुख नाखीने बनावेली तेज

दिवस भक्ष्य, बीजे दिवस वाशी थाय. खटाइ(लींबु कोठ प्रमुख) वाळी कोथमिर फोदीनानी पाणी विनानी कोइ पण अनाज नांख्युं न होय तेवी चटणी त्रण दिवस सुधी लेवाय. घुटतां पाणी नांख्यु होय तो बीजे दिवस वाशी जरुर थाय. खटाइ विनानी चटणी वडको दइ सुकवी राखी होय तो बीजे दिवस लेवामां बाधक जणातो नथी, अन्यथा बाधक जाणवो खरू जोतां ताजे ताजी रोजेरोजनी बनावीने खावी उत्तम छे, कदाच एठवाड पडी जाय के एठा हाथनो स्पर्श थइ जाय तेथी पण अभक्ष्य थाय.

१२ सभारो—लोट के मेथी नाखीने बनावेल सभारो बीजे दिवस वाशी थाय

१२ पकवान—मिठाट—गोळपापडी के पाकना लाडु जे सर्वथा जळ रहित थाय छे वर्ण गध रस स्पर्श फर्ये अभक्ष्य थाय एटले तेना माटे पकवानना जेटलोज काळ होय तेम कही शकाय नहि, विशेष काळ पण पहोंचे तेम शास्त्रमा पण कहेल छे जो गोळनी तथा घीनी विगइनो त्याग कर्यो होय अने नीवियातानी जेने छूट होय तेने ते दिवसनी करेली गोळपापडी लेवाय नहि, बीजे दिवस लेवाय. केमके तेना तेज दिवसे तेमां विगइपणु मटे नहि. चोपण उत्कृष्टथी सुखडीना काळ मुजब लेवामां ठीक छे, कारण के केटलीकवखत रसइंद्रियमां लुब्ध थइ जवाथी तेना वर्णगधादिक पलटाया होय ने खवर न पडे तो ते वापरवाथी दोप लागे, माटे गोळपापडीनो काळ जे पकवान काळ कहेल छे ते मुजब लेवो ते वधारे सार छे.

मिठाई सारी उत्तम प्रकारनी बनावेली वर्षाकाळमां उत्कृष्ट पदर दिवस, उन्हाळामां वीश दिवस, तथा शियाळामां एक मास सुधी भक्ष्य छे, पछी अभक्ष्य छे. कदोइनी दुकाननी मिठाइ प्राय तेवी उत्तम न होय तेथी तेनो काळ ओछो जाणवो अने जो वर्ण,गध,रस स्पर्श फरे तो काळमान पहेला पण अभक्ष्य थाय कदोइनी दुकाननी मिठाई वापरवामा अनेक दोष छे, तेथी घेर बनावी–करावीने खावी उत्तम छे कारण के कदोइ जे पाणी वापरे ते गळेल होय के नहि, बीजु ते पाणी पीने एठो प्यालो ते वासणमां बोळे एटले असख्य समूर्छिम जीव थाय, वळी जुनो माल (सुखडी) बधल होय तेनो भूको प्रमुख नवी मिठाई साथे पण मेळवे, लोट वगेरे जुनो माल वापरे, चाळ्या वगर पण वापरे, रात्रे आरंभ करीने बनावे, परदेशी मेंदो प्रमुख अभक्ष्य चीज वापरे, घी हल्कु खोरु पण वापरे, लाकडां चूलो प्रमुख पुजे के नहि, चूला उपर चदरवो क्याथी होय एम यतना वगर करता होवाथी एकेंद्रियथी माडी चौरिंद्रिय अने असज्ञी–समूर्छिम पचेंद्रिय सुधीना अनेक जीवोनी हानि थवा पामे, विगेरै कारणोथी कन्दोईनी दुकाननी मिठाइ के सेव, गांठीया, बुदी बसाणु प्रमुख प्राय अभक्ष्य होय चोमासामा तो कदोईनी मिठाइनो अवश्य त्याग करवोज जोइए

मिठाइनु काळमान.—कार्तिक सुद १३ के १४ सुधीमा जे मिठाइ बनावी होय तेनो काळ १५ दिवसनो जाणवो कारण के ते मिठाई चोमासाना काळमा बनावी छे फागण शुद

१३ के १४ सुधीमां जे मिठाइ बनावी होय तेनो काळ (२०) वीश दिवसनो गणवो, जो के ते मिठाइ शियाळाना काळमा बनावी छे पण ग्रीष्म ऋतुमा वापरवी छे, तेथी तेनो उन्हाळा प्रमाणे काळ गणवो, अने अशाड शुद १३ के १४ सुधीमां जे मिठाइ बनावी होय तेनो काळ १५ पदर दिवसनो गणवो, कारण ते मिठाइ वर्षाऋतुमां वापरवी छे तेवी रीते ओछो काळ समजवो, पण विशेष नहि. तेम वर्तवाथी दोष लागे नहि, व्रत वहु शुद्ध रहे. केटलीक मीठाइ तो वीजेज दिवस के बे चार दिवसमा पण वर्ण गध रसादि फरी जवाथी अभक्ष्य थाय छे, तेथी दरेक चीज सारी रीते जोइ तपासी सुधी खातरी करीने वापरवी उचित छे. परदेशी मेंदानी के परदेशी पडसुदीना लोटनी मीठाइ अभक्ष्य छे. जिनेश्वर भगवते उपयोग अने आणाएज धर्म कह्यो छे, माटे आवी अनेक वावतोमा अति उपयोग राखवो जरूरनो छे के जे आपणो धर्म (Duty)छे वधुओ! प्रथम तो धर्म मार्गमां प्रवेश करतां घणा जीवोने ते कडवो औषध समान लागे, कोइ महा पुन्यशाळी हळुकर्मी प्राणीओने धर्म प्रत्ये अत्यत उत्सुकता होय छे. धर्म जो खुशीथी करवो न गमतो होय तो पण पराणे कर्मरूपी रोगनु हरण करवा धर्मरूपी औषध ग्रहण करवुं. जेम कोइ रोगी माणस होय तेने कडवी विषसमान दवा पीवी जराये गमती नथी, त्यारे तेथी विमुख थइ जो ते दूधपाक पुरी आदिक मिष्ट पदार्थो वापरे तो अल्प वखतमा ते काळवश थइ जाय, अने जो झेर जेवी कडवी दवा पराणे पण पीये तो तेना रोगनु अवश्य निवारण पण थाय, तेमज जो आपणने

४

धर्म उपर रुची थती न होय तोपण करवी, अने जो विषयवासना प्रमुखमां लपटाशु तो अनत भव भ्रमण करवु पडशे,तेथीज कर्मरूपी रोगनु निवारण करवा आ धर्मरुपी जुदा जुदा अनुपानो (औषध) प्रयोगो जणाव्या छे, तेथी कंटाळीने विमुख न थता सपूर्ण आत्मवीर्य फोरवतु जेथी सहजे शिव सपदा पामीशु.

१४ वसाणु-सेव, गांठीया, बुदी,[1] दाळ[2] प्रमुख वसाणु पकवान होवाथी तेनो [3]काळ मिठाइ जेटलो जाणवो, अने वर्ण गंध रस स्पर्श फरे तो काळमान पहेलां अभक्ष्य जाणवु भजीयां, कचोरी, लोचापुरी, मालपुवा, प्रमुख नरम वस्तुओ बीजे दिवसे वाशी थाय छे.

१५ चुरमाना लाडु-तळ्या वगरना बीजे दिवस वाशी थाय पण सारी रीते तळेला उत्तम बनाव्या होय तो बीजे त्रीजे दिवस खावामां बाधक नथी *खसखस चुरमाना लाडु तेमज केटलीक मिठाइमा छाटे छे ते वापरवी युक्त नथी. विरतिवते तो खास उपयोग राखवो

---

१ बुदी नरम तळेल होय तो वाशी थाय

२ रात्रे पलाळेली दाळ वाशी थाय माटे वापरवी नहि.

३ घी तथा तेल खोरु थाय तो अभक्ष्य कहेल छे, तो तेवा घी तेलनी मीठाइ पण अभक्ष्य जाणवी

* खसखस अभक्ष्य छे, माटे कदोइनी दुकानेथी मीठाइ लेनारे तेनो निर्णय कर्या विना विश्वास राखवो नहि

१६ रसोइ–उन्हाळामां सवारे रांधेल दाळ भात प्रमुख रसोइ सख्त तापने लीधे सांजे ते स्वाद (चलित रस) थइ जवा संभव छे, तेथी अभक्ष्य थाय रोटली रोटला विगेरे पण उपयोगथी राखवा जोइए एकदम गरम गरम तेना वासणमां भरी न देवा पण थोडीवार पछी भरवा. वळी कलइ विनाना वासणमां दहिं छाश प्रमुख खाटा पदार्थ राखवाथी (थोडाज वखतमा) तेमज बीजी रसोइ दाळ शाक प्रमुख राखवाथी कटाइ जाय छे, तेथी ते वस्तुना वर्णादिक फरवाथी ते खावा लायक नथी, जेथी पीतळ के त्रांबाना कलइ रहित वासणमां ते वस्तुओ जरावार पण न राखवी. केटलीक वखत थोडी कलइ रही होय तेवा वासणमा राधवु के राधेली वस्तु के दहिं छाश राखवी तेथी पण कटाइ जाय छे, माटे अवार नवार कलइ कराववानो खास उपयोग राखवो तेमा प्रमाद के लोभवृत्ति राखवा जता तेनु परिणाम व्याधि विगेरे अति खराब थाय छे

१७ ओदन–(भात)–रांधेलो भात [1]छासमां राखेल होय तेनो काळ आठ पहोर सुधीनो छे तेटलो काळ भात सांजे राध्या होय अने छाश छांटेल होय तेनो समजवो, पण सवारनो भात जो छाश छाटीने राख्यो होय तो तेज दिवसे नपराय,सूर्य अस्त पछी

१ छाशमा बुड जोइए, छाश नवु पाणी मेळवेल नहि त्रण दिवसनु ओदन न लेवानु "अतिचार" सूत्रमां कहेल छे, ते फक्त जाडी छाशथी रांधेल अनाज समजवु.

तें काम न आवे. छाश छांटीने जे साजनो रांधेलो भात राखवो तेमा पण बहु उपयोग राखवानो छे. ते भावना (सूर्य अस्त पहेलां) दाणे दाणा छुटा करी नाखवाज जोइए, अने जो तेम न थाय तो ते वाशी थाय, माटे एक एक दाणो छुटो करी नाखवो, तथा तेनी उपर चार आगल तरती छाश जरूर राखवी जोइए वळी ते छाशनो कपाळमा चाडलो करे तो थाय तेवी अर्थात् पाणी बहु थोडु ने छाश–दहि घणु होय तेवी जोइए. तथा ते भात ज्यारथी तैयार थयो त्यारथी काळ आठ पहरनो गणवो पण छाश छाटे त्यारथी नहि, अने सूर्य अस्त पहेलाज तेनी सघळी क्रिया पूर्वोक्त करी लेवी जोइए. चोमासामां तो आ प्रमाणे भात राखवोज युक्त नथी, बहेतर तो एज छे के आवी वस्तुपरथी ममता उठाडवी. कमके प्रमादवशात् आपणे पूर्वोक्त उपयोग माय राखी शक्ता नथी. अने तेथी वाशी (फक्त रुपातर थयु) नो दोष लागे छे माटे जोइतु ज राधवु, अने कदाच तेम छता वधे तो अनु-कपादान करवु ठीक छे केटलेक ठेकाणे नातमा साजे भात, मग प्रमुख राधेली रसोइ वधी पडी होय तेनो कृपण मक्षिने लीधे सदुपयोग तो न करी शके, परतु बीजे दिवस ते वाशी रसोइ नवी उमेरो दइ खवरावे छे, तेथी चलित रसना त्यागीए खास तथा बीजाओए पण आवे ठेकाणे जमवा जवा अवश्य विचार करवो श्रावके आ प्रमाणे वाशी खवरावबु तेज शर मावा जेवु छे, पोताना अल्प नुकशानने खातर असख्य जीवोनो विनाश थाय ते ते कबुल करे छे! अफसोस! बधुओ तेना किंपाक

समान फळ चाखवां पडशे त्यारे अति त्रास थशे. माटे समजो, अने अनादिनी कुमतिने काढो, जेथी सुमतिना सगथी स्वआत्मानु श्रेय करी अविचल सुखवास पामीए

१८ दहीं—प्रभाते मेळवेलु (दूधमां खटाइ नांखेली) दहीं सोल पहोर पछी अभक्ष्य थाय, अने सं'या समये मेळवेलु दहीं वार प्रहर पछी अभक्ष्य थाय छे एम सेनप्रश्नमा छे एटले दृष्टांत तरीके रवीवारना सवारे सात आठ के दश वागे मेळवण नांख्यु होय तेनो काळ रवीवारना सूर्य उदयथीज गणवो. (एम नहि के दश वागे मेळव्यु एटले त्यार पछी १६ प्रहर), एटले रवीवारना अहोरात्रिना आठ प्रहर मळी सोळ प्रहर. ते दहिं मगळवारना सूर्योदय पहेला वलोवी नाखवु जोइए त्यारथी सोळ प्रहर तेनी छाशनो काळ समजवो. तेवीज रीते रवीवारनी सध्या समये के त्यार पछी मेळवण नाख्यु होय तेनो काळ रवीवारना सूर्यास्तथी गणवो. एटले रवीवारनी रात्रिना चार प्रहर तथा सोमवारनी अहोरात्रिना आठ प्रहर मळी वार प्रहरनो काळ जाणवो.अर्थात् दहीं मेळव्या पछी वे रात्रीनु काळमान जाणवुं दूध चार प्रहर सुधी वर्णादिक न पलटाय तो त्यां सुधी भक्ष्य छे, ते दरमियान मेळववु जोइए अने बपोर पछी के सध्या पछी गमे त्यारे दोहलु दूध होय तेमां रात्रिना चार वागता (मध्यरात्रि) पहेलां मेळवण नांखी देवु जोइए

दहिं बजारमाथी लेवा करता घेर बनाववु श्रेष्ट छे, कारण तेओनां वासण प्रायः शुद्ध न होय, उघाडां-ढांक्या वगर पण रहे, वाशी दूधनु के मिश्रण करेला दधनु के सचाना दूधनु बनावे, काळ

मान ओछु वधारे कहे, वळी पहेला रात्रीने पण दूधनी साथे मिश्र करी मळवी दहीं बनावे छे. केटलीक वखत मृत्यु पामेला जीवो पण दहिंमाथी नीकळेला जोवामा आवे छे वगेरे अनेक दोषोना कारणथी घेर बनावी वापरवु युक्त जणाय छे

कांजी के जे पाकी अथवा गरम करेली छाशनी आछ-पराश कहेवाय छे ते कांजीनो काळ सोळ महरनो कह्यो छे.

दहिं, छाश ने कांजीनो सोळ महर जे उत्कृष्टो काळ कह्यो ते सोळ महर एटले के बे रात्रि उल्लंघन न थवी जोइए, ते पहेला पण जो वर्णादिक फरे तो ते अभक्ष्यज छे चलितरसमां जे जे काळमान कह्यु छे ते ते वस्तु उत्कृष्टा काळ सुधी आचरणीय, त्यारपछी कदाच निश्चयथी चलित न थइ होय तोपण ते व्यवहारथी अनाचरणीय छे-एटले काळमाननो अर्थ एवो थयो के जे मर्यादा जे काळनी आचार्य महाराजे बतावी छे ते पछी तो ते वस्तु नज वपराय, अने काळमान पहेला जो वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, पलटाय के ते अभक्ष्य जाणी त्यारथी ज तजरी ते खास ध्यानमा राखवु.

१९ दूध चार महर सुधी भक्ष्य छे, पण सामनु दोहलु दूध होय तेनो उपयोग मध्यरात्रि अगाउ थइ जवो जोइए केटलीक वखत ग्रीष्म ऋतुमा दूध सख्त तापने लीधे के वधारे वखत रहेवाथी अथवा उपयोग पूर्वक शुद्ध वासणमा न राखवाना कैटलाय कारणने पामीने बगडी जाय छे, अने कोइवार दहिंनी माफक जामी जाय छे, तेने दहिं थयु समजी वापरवु नहिं, कारण ते दूधना वर्णा-

दिक पलटाया तेथी ते दूधज अभक्ष्य छे कोइवार दूध फाटी जाय छे, ते पण तेना वर्णादिक फरवाथी अभक्ष्य मानवु केटलाक वेचनाराओ वाशी दूधनो भेग करे छे, कलकत्ता तरफ राते दूध खूब गरम करी तेमाथी मलाइ काढी तेमा सींगापुरथी आवता आरारूट (एक जातनो आटो)नो भेग करी सवारमा ताजु दूध कही वेचे छे. पोताना तुच्छ स्वार्थने माटे बधुओ! आ लोको शु शु नथी करता, अर्थात् तेओ प्रायः दरेक वस्तुमां कूडकपटकरे छे तेनो बारीकीथी तपास करवो, तथा बनतो उपयोग राखवो, बगडेला वाशी दूधनु दहिं, दूधपाक, बासुदी, मलाइ, मावो वगेरे पदार्थो पण अभक्ष्य थाय ते लोको जे दूध दहिं प्रमुख प्रवाहि पदार्थना वेचवावाळा छे तेओ ते वस्तुना वासण उघाडां अजयणाथी केटलीक वखत राखे छे, तेथी थोडा वखत उपर काठियावाडमा जुनागढ शहेरमा एक दूधना वेचनाराए तेनु दूध एक दिवस ज्या ज्यां आप्युं त्या त्यां तेओने कलाकोना कलाको सुधी झाडा, उलटी तथा अत्यत बेचेनी भोगववी पडी. जे तपास करतां मालूम पडयु के ते दूधमा कोइ जीवनी लाळ प्रमुख झेरी पदार्थ पडेलो होवाथी तेओने बिमारी भोगववी पडी कोइवार सर्प प्रमुखनी लाळ (विष) पडवाथी ते वपराशथी मृत्यु पामवा सभव छे, तेटलाज माटे शास्त्रकारे दश जग्याए चदरवा राखवा कह्युं छे वळी एक मीनीट पण पाणी, भोजन प्रमुखना वासण उघाडा न राखवा वगेरे प्रकारनी यतना जे आ ग्रंथमां कही छे ते शारीरिक तथा धार्मिक बन्ने लाभने माटे छे, जेथी अवश्य उपयोग राखवा. बंधुओ! आ उत्तमजैनधर्ममा प्रका-

शेली यत्ना अथवा दया खरेखर तेना पाळनाराने शीघ्र मुक्तिना वासने पमाडनारी छे खरेखर जैनधर्मनी बलिहारी छे। दोहेलु दूध जेम बने तेम तुरत वेळासर गरम करी राखवुं जोइए, नहितर ठडु दूध थोडा वखतमा बगडी जवा संभव छे मुनि महाराज पण ठडु दूध वहोरता नथी ते तेवुज कारण होवुं जोइए, तथा दूध गाळीने गरम करवु जोइए

दुधने गन्या विना न खावानु अन्य धर्ममा पण कहेलु छे, अने जैनशास्त्रमां गलणा ७ कर्यां छे —

१ मीठापाणीनु, २ खारापाणीनु, ३ गरमपाणीनु, ४ दुधनु, ५ घीनु, ६ तेलनु अने ७ आटो चाळवानु.

दुध वेचनारा दुधमा थोडु पाणी भेळवे ते अणगळेलु पाणी जंतुवाळु के वाळ पडेलु होय

गायनु, भेंसनु, बकरीनु अने गाडरीनु ए ४ दुधने दुधविगयमा शास्त्रे गण्यु छे, तेथी बाकी बीजा जनावरोनु दुध खावामा दोष छे. जलदी अभक्ष्य थइ जाय छे, तेवु दूध रोग उपजावे छे.

२०. घी खोरु कालातीत थये वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, फर्ये अभक्ष्य थाय. घीमा केटलाक दगाखोर लोको चरबीनो तथा बटेटा रताळु मक्षुख कदनो भेग करे छे तेनो अवश्य उपयोग राखवो; परीक्षा वगर कोइपण माल लेवो नहि वळी जे लोको घी बनावे छे ते घणाखरा सात आठ दिवस के बे चार दिवसनु माखण एकटु करी बनावे छे (तावण मूके छे) ते अभक्ष्य गणाय. तेने माटे जेने घेर गाय भेंश होय तेज खरो उपयोग राखी शके. छाश (अल्पनी)

साथेज के छाशथी जुदु पाडता माखण तुरत चूला उपर मूकी देवुं जोइए, पण ज्यारे श्रावको स्वघेर अंतर्मुहूर्त्त उपरात के कलाकोना कलाको वाशी माखण राखी मुके त्यारे बीजाओने तो शु दरकार होय? अंतर्मुहूर्त्त एटले जघन्य नव समयथी मांडी उत्कृष्ट बे घडीमा काइक न्यून काळ तेने अंतमुहूर्त्त कहेल छे–एटले एक आसनो पलकारो मारीए तेटला वखतमा असरय समय थइ जाय छे तेथीज माखणनी बाबत बहु उपयोग राखवो उचित छे, आपणा प्रमादमां अहाहा! असरय जीवोनो विनाश थइ जाय छे. हे बंधुओ! श्री जिनशासनमां आपणे आवो अत्युत्तम अवसर प्राप्त थयो के जेथी सूक्ष्म बाबतोनु जाणपणु थाय छे. अहो! केवली भगवत वगर बीजु कोण कही शके? अर्थात् त्रणकाळना भाव जेनाथी एक समयमां जणाय ते केवळज्ञानथी प्रभुज प्रकाशी शके बधुओ! चालो हवे आपणे आ उत्तम अवसरने प्रमाद त्यजी हर्षवडे वधावी लइए, अने "जीवदया प्रतिपाळक" ए नाम सार्थक करी मगळमाळा वरीए.

२१. बळी—प्रसुतिवाळी गाय तथा भेंसना तरतना दूधनी बळी बनावे छे. गायने प्रसुति थइ होय त्यारथी तेनु दूध १० दिवस, भेंशनु १५ पदर दिवस, बकरीनु ८ आठ दिवस सुधी लेवु कल्पे नहि, त्यारे तेनी बळी बर्यांथी कराय ने वपराय? अर्थात न ज खवाय.

२२. खाटा ढोकळा—जे चोखानी कणकी, अडदनी [1]दाळ तथा चणानी दाळने[2] भरडीने छाशमां आथो करी बनावे छे, ते रात्रे

१–२ कठोळ काची छाशमां आपे तो द्विदळ दोष थाय

आथो फर्यो होय तो अभक्ष्य छे माटे सूर्योदय पछी आथीने करवा अने सूर्यास्त पहेला वापरवा जोइए. वधुओ ! आवी वस्तुओ प्रमु-खना बीजा दिवसे श्रीरामण थाय ते खरेखर श्रावक कुळने शु शर-मावा जेवु नथी ?' टाढा रोटली रोटला, थेपलां, नरमपुरी, भजीया,

१ वळी केटलाक दाळ फडी वगेरे रांध्यु धान्य आपी दातण जेवी नमाली चीज खरीदे छे ते विशेष शरमावा जेवुं छे. देखादेखीथी बीजी नातना के बीजा कूळ धर्मवाळानी स्त्रीओ पोताना वस्त्र मफत धोवरामणनो बदलो धोबीने हमेशा रांधेल अनाज दाळ फडी आपे छे एवु जोइने श्राविकाओ तेवु करे तेने जोइने घरधणी वारी रारे नहीं तो गुरु महाराजे समजाववु जोइए के—

धोबीने तथा वाघरीने घणो छे के तेओ वाशी रारे छे, वाशी खाय छे, अने वाशी कोहेलु धान्य लुगडाओने आर देवामां वापरे छे, पण तेओ काइ फेंकी देवा नथी, त्यारे श्रावकोए वाशी राखवु के खावु नहीं, पण वाशी रखाववु तथा खवराववु एम थया करे छे–एटले वाशीनी जीवहिंसा करवी के करावची तेनु सरखे सरखु पाप उभु रहे छे

श्राविकाओ पोते धोवा के न्हावा सारु नदी तळावे जाय छे, तेमा पर्वतिथिने पाळवानु पुन्य ले छे, अने धोवरामणना पैसा बचा ववा पोते रांधेलु आ रीते वचीने पाप ले छे त्यारे वाशीमां त्रस जीवो बे इंद्रिय उपजे छे तेनी श्रद्धा क्या रही ?

धोबी तथा वाघरीने देवा सारु घरमा खाना खाता जे दाळ

ढोफळां अने छाश छांटया वगरनो भात प्रमुख वाशी चीजो रा-
खीने खावाथी एक तो अनेक जीवोनो विनाश थाय, प्रभुनी आज्ञा
लोपी कहेवाय, वळी शरीरमां अनेक रोगनी उत्पत्ति थाय, माटे
दरेक चीज ताजे ताजीज खावी युक्त छे नाना बचाओने शीरा-
मण वगर न चाले ते स्वभाविक छे; तो जेम गुजरात तरफ घउंना
तद्दन पातळा खाखरा शेकी राखी वापरे छे ते बाबत खास करीने
काठीयावाडी, मारवाडी, भाइओए तथा ते शिवाय जेओ वाशी वा-
परता होय तेओए अनुकरण करवु घटे छे, पण अफसोस तथा खेद-
जनक ए छे कें प्रायः घणीखरी अज्ञानरूप मिथ्यात्वजाळमां फसायेली
जैन स्त्रीओ पोताना बचांनु रक्षण करनारी शीतळा माताने मानी,
शीळ सातमने दिवसेज खास आगले दिवसे रानेलु होय ते वाशीज
वापरे छे, अने ते दिवसे चूलाने (शीतळा) शांत करे छे. पण ब
धुओ खरेखर आपणामाज स्वशक्ति पुरुषार्थपणा (Moral Courage)
नीज खामी छे नहितर शुं तेओ तेम वाशी खाइ के खवडावी शके ?
आपणे ज ते अज्ञान स्त्रीना मनरजन अर्थे के दाक्षिण्यताए अथवा

कढी वगेरे एटु करेलु छतां बनेलु राखी मुके, तेओने त्रसजीव
सम्मुर्च्छिम पचेंद्रिय मनुष्यो असंख्यनी हत्या लागे छे, अने ते
उपरांत वाशीना त्रसजीवनो विनाश जुदो.

श्रावक भाइओए पोताने घरे लुगडां धोवरामण खर्च करवानी
अथवा स्त्री पोते धोवे तेम नहीं होय तो काचु अनाज देवानी फरज
समजाववी जोइए.

तो आपणा पण मिथ्यात्वना उदये तेने उत्तेजन आपी स्वभाचारथी भ्रष्ट थइ शीळ सातमने दिवसे मोटो अनर्थ के सत्यनो नाश करीए छीए. खरेखर आथी वधु धिक्कार पात्र अति निंदवा योग्य मिथ्यात्व कर्तव्य बीजुं शुं ? बंधुओ ! पण तेथी अनवा ससारनी वृद्धि थवाथी आपणो मनुष्य जन्म व्यर्थ गुमावी दइए छीए ते विचारो ! समजो ! ने शीळ सातमनो मिथ्यात्व आचार छंडी वाशी चलित रस कदि न वापरवु एवी दृढ प्रतिज्ञा करो, जेथी सहेजे स्वभाविक सुख विल्सीए

२३ घोलवडा-(दहींवडां)-जो ते उकाळेला गोरसमां कर्या होय तोज तेज दिवसे भक्ष्य छे काचा गोरसमा सर्वथा अभक्ष्य छे.

२४ खाखरा—जे उपरज जणाव्यु छे के गुजरात तरफ घउना शेकेला खाखरा करे छे ते पांच सात के तेथी वधार दिवस सुधी राखी मूकाय छे, अने वपराय छे, पण जुना खाखरा उपर नवा पडता जाय अने उपर उपरथी नवा वपराय ने जुना पडया रहे तेम करवु युक्त नथी वळी तेनी कोठी के जे वासणमा भरवा होय ते साफ राखवु, नहितर तेमां धनेडां प्रमुख त्रस जीवनो पेसारो थाय, चोमासामा तो लीळफुग पग थइ जाय, जेथी आ बाबत खास उपयोग राखवा ध्यान देवु उचित छे.

२५.पापडना लुआ, वडा, पोळो—अडद मग प्रमुखना पापडना लुआ तथा अडदनी वाटी दाळना वडा अने पोळी एटले

२९. हुडणीआ—के जे काठीयावाडमा करे छे ते जुवार बाजरीने पाणी नाखनां जाय अने खाडे, पछी सुकनी तेनां फोतरां उखेडीने राखे छे, तेनो काळ शेकया धान्य मुजब एटले वर्षाऋतुमां १० दिवस, शियाळामा एक मास तथा उन्हाळामा २० दिवसनो छे

---

२७ बत्रीश अनंतकाय

सर्व अनतकाय अभक्ष्य छे, कारण के एक सोयना अग्र भाग उपर रह तेटली कदमूलनी फणीमा अनता जीव रहे छे ते माटे सर्व अनतकाय अभक्ष्य छे ते श्रावक अवश्य वर्जवा जोइए. कारण के एक जीहा इंद्रियनी लोलुपता माटे अनता जीवनी हानि करवी ते महा अनर्थनु कारण छे, तेथी बत्रीश अनंतकायनो सर्वथा त्याग करवोज जोइए, के जेथी अनता जीवने अभयदान मळे केटलाक जीहा इंद्रियने वश थइ " मार वर्षमां पाच शेर के दश शेर खपे " एवो नियम करे छे, पण हे सुज्ञो! शु ते अभक्ष्य चीजो वगर आपणा निर्वाह थवो अशक्य छे? दुनियामां बधां बीजी वनस्पतिनो काळ पड्यो छे? वळी पाच शेर के दश शेर एवी छुट आपी आवी अभक्ष्य वस्तुओ राखवी ते आगारमा कांइ कहेवाय नहि. पुद्गलिक

सुख माटे अभक्ष्य वस्तु खावानी छुट राखवी ते कया प्रकारनो आगार? जुओ के मरणांत कष्ट प्राप्त थतां पण वंकचूल कुमारे अभक्ष्य वस्तुनो मनथी पण अंगीकार कर्यो नहि, तेवा सत्त्ववत उत्तम प्रतिज्ञा पाळवावाळानी क्रोडोवार बलिहारी छे। अहोहो! जेओ कर्मने वश थइ आंखो मींची जाणता छतां परभवनो लेशमात्र भय राख्या वगर आदु, मूला, गाजर आदि खाय छे तेवा विचारा (पामर) प्राणिओनी शी गति थशे? श्रावक नाम मात्रथी श्रावक कहेवावुं ते अफसोस जेवु छे. मनुष्यपणा साथे जैनधर्म पामी आ भव सफळ करो, के जेथी संसार भ्रमण मटे, अने अनुक्रमे शिव सुखना भोक्ता थाओ! हे भव्यो! आपने नम्रता पूर्वक विनति करुंछु के बावीश अभक्ष्यनो श्री तीर्थंकर महाराजे निषेध कर्यो छे तेनो शीघ्रताथी त्याग करो, अने श्रावक नाम सार्थक करो, जैन बनो!



" बत्रीश अनतकायना नाम "

१ भूमि मध्ये कद थाय एवी सर्वे कदजाति. २ लीली हल्दर, ३ शृगबेर–लीलु आदु, ४ +सुरणकद, ५ *वज्रकद. ६ लीलो कचुरो, ७ सतावलीवेली औषधि, ८ [१]विराली लताविशेष सोफालो, ९ कुआर (शेलरा पण वर्जवा[२]), १० थोहरीकद (थोर) ते सीज तथा ल्फासीजनी जाति. हाथीयो, काटालो डाडली वगेरे. ११ गिलो–गुलवेल (गलो), १२ लसण, १३ वासकारेला एटले वांस सनथीनी कारेली, १४ गाजर, १५ [३]लुणी एटले साजी वृक्ष, १६ लोढीपद्मनी कद, १७ गग्गर (गिरिकर्णी) कच्छ देशमा प्रसिद्ध छे काठीयावाडमां तेनु अथाणु करे छे

१८. किसलय पत्र—कोमल पांदडा जे नवा उगता सर्व गुच्छाना पांदडा, तथा सर्व वनस्पतिना जे उगती वखतना अकूर होय ते सघला अनतकाय छे; एटले सव (प्रत्येक तथा साधारण)

+ मोरडनी भाजी * लसण १ विरालिकद–भोंयकोलु २ शेलरा ए कुवारपाठानां मध्यभागनो जे गट नीकळे छे तेना थाय छे ते कुवारपाठु अनतकाय होवाथी अभक्ष्य छे माटे शेलरा पण अभक्ष्य जाणवा, कारण शेलरा तेनी मध्य दांडी छे ते सर्वथा वर्जवा युक्त छे काठियावाडमा उपराय छे तो उपयोग राखवो ४ लुणीनी भाजी कहे छे

वनस्पतिना उगतां पांदडां अने अंकुर प्रथम अनतकाय होय, पछी प्रत्येक वनस्पतिना थइ पत्र अंकूरा अंतर्मुहूर्त्त पछी प्रत्येक रूपे थइ जाय, बीजा जीवो च्यवी जाय, अने साधारण वनस्पतिना थइ पत्रादि सर्व काळ अनंतकायपणेज रहे. आ अनंतकाय पांदडानो सर्वथा त्याग करनारे (अथवा कर्यो होय तेओए) भाजी पांदडां वापरतां उपयोगथी वर्त्तवुं. नहितर सहसा दोष लागी जाय कारण- मेथी वगेरेनी भाजीना मूळीआ आगळ बे पांदडां जाडां होय छे तेने अनतकाय कहेवामां आवे छे, तथा भाजीना पादडाना मूळमां झीणां अकूरा फुटे छे, वळी थेग प्रमुखनी भाजीनां पांदडा पण होय छे, जेथी तेनो उपयोग रहे नहि तो दोष लागे. माटे कांतो प्रथमथी तेनी जयणा राखवी, अने ते किसलय पत्र न खवाय तेनो उपयोग राखवो-खप करवो

१९. खीरसुआकद—कसेरु (खरसइयो), २० थेगकंद.- थेगी तथा थेग नामनी भाजी थेगीपोंक. २१ हरिमोथ (लीलीमोथ), २२ लुण वृक्षनी छाल; २३ खिलोडाकंद, २४ अमृतवेली.

२५. मूळा—देशी तथा परदेशी (राता ने धोळा-सफेद) मूळाना पांचे अग अभक्ष्य छे; (१) मूळानां कद (कांदा), (२) पादडाना मध्यभागमां जे कदली थाय छे जेने डाडली कहे छे ते पादडा सहित, (३) फुल (४) फळ जेने मोगरा कहे छे ते, तथा (५) तेमांथी नीकळेला झीणा बीज, ए पांचे अभक्ष्य छे. वळी त्रस जीवोत्पत्ति पण तेमने विषे होय तेथी सर्वथा मूळाना पचांग वर्जवां

२६. भूमिफोडा—वर्षाऋतुमा छत्रने आकारे उगे छे.

२७. वथुलानी भाजी—(प्रथम उगती).

२८ वरूहार—एटले विदल धान्य जेने अंकुर आव्या होय ते रात्रे जे कठोळ पाणीमा पलाळे छे तेमा अकुरा फुटेला होय छे ते अनतकाय होवाथी अभक्ष्य छे, माटे सवारना पाच छ वागे पलाळवा, ते पण थोडो वखत राखवा. (नहितर वेचार कलाक लगभगमां पण अकुरा फुटी जाय.) मतलब के अंकुरा फुटवा न जोइए. खरी रीते तो दरेक कठोळ वाफीने कराय तो तेमां अकुरा फुटवानो भय नथी स्वजन कुटुब के नातमा जमवा जतां खास उपयोग राखवो, कदाच त्या रात्रेज कठोळ पलाळी शाक बनाव्या होय तेथी दरेक चीज खाता पहेलां प्रथमथीज भक्ष्याभक्ष्यनो विचार करवो उचित छे

२९ पल्लकानी भाजी

३० सुअरवल्ली जेजगलमा मोटी वेलडीना जेवी थाय छे ते.

३१ कोमळ आवली—ज्यां सुधी माहे बीज सक्रमे नहि त्या सुधी अनतकाय छे कोमळ फळमां ज्या सुधी अदर बी न थयां होय त्या सुधी अनंतकाय छे, माटे अति कोमळ एवा सघळा फळ खावा वर्जवा.

३१-३२ आलुकद—ते रतालु-बटेटां अने 'पिंडालु'[१]

[१] कोरी पण पश्चिम देशनो डुगळी के मूळानी जात सभवे छे.

(डुगळी) सकरकंद; तथा घोषातकी अने करीर-केरडा ए ने वनस्पतिना अंकुरोने अनतकाय कहे छे तिंदुक वृक्षना अति कोमळ फल, जेमा गोटली न थाणी न होय एवा आंबा प्रमुख तथा वरुण जातना वृक्ष विशेष तथा वडनुं झाड अने निंबादी जातना वृक्षना अकुर ते सर्व अनंतकाय जाणवा.

ए प्रमाणे अनतकाय जातिना प्रख्यात नाम बत्रीश छे, अने विशेष नाम तो अनेक छे ते कोइ वनस्पतिना पाच अग, कोइना मूळ, कोइना पान, फुल, छाल, काष्ट अनतकाय छे, एम कोइनु एक अंग कोइनां बे, त्रण, चार अने कोइनां पांच अग अनतकाय होय छे. जे वनस्पतिना पत्र (पान), फल प्रमुखनी नस तथा सधि मालुम न पडे, गांठ गुप्त होय, जे भांगवाथी बरोबर भांगे, भांगेथी जेनो एकदम भुको थइ जाय के तुरतुर थइ जाय, छेद्या पछी फरी उगे, पत्र मोटां दलदार चीकणां होय, जेमां घणा फल पांदडा बहु कोमळ होय ते सर्वे लक्षण अनतकायना छे उपर कहेला जेटला साधारणना लक्षण छे ते बधाज एकमां होय एम सभव नथी, कोइकमा केटलाक होय अगर न पण होय पोइनी भाजीना पान तथा पिंड (एन्डीपेन्डी) अनतकाय सांभऱ्या छे.

अनतकाय आश्रयी सूचनाओ

१ दूधना मावामां तथा घीमां घटेटां रताळु के सकरकंदना केटलाक दगाखोर भेग करे छे तेनो उपयोग राखवो.

२ लीलुं आदु तथा लीली हळदरनी वेचाती मळे ते सुक-वणी (सुठ तथा हळदर) जे खावाना उपयोगमां आवे छे ते भक्ष्य छे, ते शिवाय कोइ पण अनंतकायनी सुकवणीनु शाक अथाणु प्र-मुख वर्जवु गाजरनी सुकवणी, अथाणां के कुआर, लीली हळदर, आदु गरमर प्रमुख अनंतकायना अथाणा सर्वथा अभक्ष्य छे नि-ध्वंस (निर्दय एवु मन) परिणाम तथा निःशूक वृत्तिनो वधस, लोलुप-ताथी परंपरा वधे अने जोनारा अधर्म पामे वगेरे हेतु होवाथी फंद एवी कोइ पण चीजना भजीयां पण प्रासुक छतां शास्त्रमा वर्जवानु स्पष्ट फरमाव्यु छे. श्रावके लीली हळदर, आदु घेर सुकववु पण युक्त नथी

३. बटेटां, डुंगळी प्रमुखना भजीया करे छे, तथा दुकानदारो ढोकळामा अभक्ष्य चीजो नाखे छे, वासी राखी वेचवा सारु फरी उना करी दे छे, अने बजार चटणीमा पण लसणनो स्पर्श के आदु वगेरे सोंघी अने अभक्ष्य चीजो नाखेली, वळी वासी रहेली ते बे-वडा दोषवाळी होय, त्रस ससक्त थाय वगेरे कारणोथी पापभीरुए तेवी चीजो खाता पहेला उपयोग करवो बटेटा विगेरेना भजीया जे तावडामां तळ्या होय तेज तेलमा पछी बीजी भक्ष्य जातिनां भजीया तळे तो ते पण वापरवा नहि, दाळमां केटलाक सूरण आदु नाखे छे, उंधीयु बनावे छे, तेमां पण डुंगळी बटेटां प्रमुख अभक्ष्य वस्तुओ वापरे छे तेनो अने चटणी, दाळ, कढी विगेरेमां कोइ ज-ग्याए कोमळ आंबली नाखवामा आवे छे तेना, तथा भेळसभेळ स्प-

'र्शस्पर्शनो अवश्य उपयोग राखवो. अथवा तो भेळसंभेळनो अजाणतां, दाक्षिण्यताए आगार राखवो. आगारनो अर्थ एवो नहि के जाणवा अमुक दोष सेववो

४. मेथी, तांजळीया प्रमुखनी भाजीमां थेग तथा लुणीनी भाजी (अनतकाय छे) ना डांखळाओ आवेल होय ते काढी ना खवा, छतां अजाणता आवी जाय तेनी जयणा राखवी. वळी मेथी प्रमुखना भाजीनां हेठळा बे पानने अनतकाय कहे छे, ते प्रथमथीज काढी नांखवा.

पुस्तकांतरमां बावीस अभक्ष्य नीचे मुजब छे.—

पंचुवरि चउ विगई अणायफल-कुसुम हिम विस करे अ ।
मट्टि अ राईभोयण, घोलवडा रिंगणा चेव ॥ १ ॥
पपुट्टय सिंघाडय वायंगण कायवाणिय तहेव ।
बावीस दव्वाइं अनस्खणीआइं सङ्ढाण ॥ २ ॥

अर्थः—१ गुलर, २ प्लक्ष ३ काकोदुंबरी, ४ वड, अने ५ पीपळ, ए पांच जातिना फळ, ६ मांस, ७ मदिरा, ८ माखण अने ९ मधु ए चार विकृति (महाविगइ)-विकार करनारी विगइ, १० अजाण्यु फळ, ११ अजाण्यां फूल, १२ हिम (बरफ), १३ विष, १४ करा, १५ सचित्त माटी, १६ रात्रि भोजन, १७ गोळवडां-काचा दूध दहिं छाश साथे मिश्र करेल विदल (कठोळ), १८

रींगणा, १९ पपोटा-खसखसना डोडा (खसखसनो सर्वथा त्याग करवो) २० सिंगोडा (जो के ते अनतकाय नथी तथापि काम उद्दिजनक होवाथी वर्जनीय छे) वायगण, अने २२ कायत्राणि

एटले प्रथम कहेल बावीस अभक्ष्य साथे आ गाथामाना ११, १९, २०, २१, २२, नामवाळा अभक्ष्य विशेप छे ते पण वर्जवां

अभक्ष्य अनतकायपरघेर अचित करेलु होय तोपण नज खावु, कारण एक तो नि शूकता तथा बीजु रस लपटता तथा प्रसग दूपण थाय ते माटे वर्जवु सुद तथा हळदर नाम तथा स्वाद फेर होवाथी अभक्ष्य नथी आ अभक्ष्योमां अफीण भाग प्रमुख जेनु प्रथमथीज व्यसन लागेलु होय तेनी तोल मापथी जयणा करे. तथा रात्रि भोजनमा चउविहार, तिविहार, दुविहार एक मासमा आटलां करु एवो नियम करे, तथा रोगादिक कारणे कोइ औपधिमां कोइ अभक्ष्य खावु पडे तो तेनु नाम तथा वखत अने वजननी जयणा राखवी पडे जुओ बत्रीश अनतकायनो सर्वथा निपेध छे तोपण रोगादिक कारणे औपधमा लेवु पडे तेनी जयणा राखे, तेथी अजाणपणे कोइ वस्तु मिश्र थइ खावामां आवे तो व्रत भग थाय नहि आगळ सर्वथा एटले रोगादिक कारणे पण न लेवु तेम लख्यु छे ते उत्कृष्टी हदवाळा माटे छे, माटे जेनाथी जेम पळाय तेम यथाशक्ति करवु उचित छे

" श्रावके अन्य दर्शनीने घेर के नातरा जमवा जता घणो उपयोग राखवो जोइए कारणके त्या बावीस अभक्ष्य अने बत्रीश अनतकायोमा वेटलायनो दोप अवश्य

लागवा संभव छे, तेथी घने त्यांसुधी थोडोज परिचय राखवो. तेमा पण द्वादश व्रतधारी तथा विरतिवाळाए तो तेवे स्थळे जमवा जवुज नहि."

बावीश अभक्ष्यनु जे वर्णन कर्यु ते बरोबर समजी मनन करवु, तथा ते भगवने निषेधेल छे तेथी प्रभुनी अखंड आज्ञा पाळवी. बधुओ! आपणे नित्य पूजा करीए छीए ते पहेलां मस्तके आपणे पोते जे तिलक करीए छीए ते एमज चिंतववारूप छे, जे हे भगवंत! आपनी आज्ञा हु शिरे चडावु छु, तेवी रीते नित्य भगवंतनी आणा-रूपीज तिलक करीए छीए, जेथी भगवतनी आणा कदि लोपवी नहि अने सादरपणे पाळवी तेज धर्म छे आ अभक्ष्यो सर्वथा प्रकारे वर्जवाथी असंख्य अने अनत जीवोने अभयदान आप्यानु फळ छे. शास्त्रमां कह्यु छे के एक जीवने अभयदान आपो के सुवर्णना मेरुना जेटलु दान आपो तो तेमां एक जीवने अभयदान आप्यानु फल वधशे, त्यारे अनत जीवोने जे पुण्यात्मा अभयदान आपे ते शुं फल न पामे! अर्थात् सर्वस्व ते पामे पण सुज्ञ शाणा बंधुओ! ते अज-रामर सुख पामवानो शीघ्र उपाय भगवतना वचननो आदर करवो तेज छे. ते विषे अजितशांतिनी छेल्ली गाथामां कह्यु छे के " जइ इच्छह परमपय"–"जो तमे उत्कृष्टपद–मोक्षनी इच्छा करो छो अथवा त्रण भुवनने विषे विस्तार पामेली एवी कीर्तिनी इच्छा करोछो तो त्रण लोकना उद्धार करनारां एवा जिन वचनोने विषे आदरसत्कार करो!" हवे जे मूढ अज्ञानी पुरुषो कहे छे जे खावु पीवु अने मोज

प्राणरी ते खरु सुख छे तो ते भोगवी ल्यो' वळी मोक्ष मळवानु हशे तो मळशे, तो तेवा जड प्राणीना हित अर्थे पद्मविजयजी महाराजे तपपदनी पूजामा कह्यु छे—

> तप करीए समता राखी घटमा ॥ तप ॥
> खावत पीवत मोक्ष जे माने,
> ए सिरदार छे बहु जटमा ॥ तप ॥

एटले खावु पीवु तेज मोक्ष छे एम माननार पुरुष घणा मूर्खमा सरदार छे, तेथी हे भव्यो जिनशासननु रहस्य समजो "देहे दुख महा फल " ए अनुसार वर्तवाथी क्षेमकुशल मोक्षनगरे सत्वर पहोंचो जइशु



" बावीश अभक्ष्य उपरांत बीजी केटलीक चीजो अभक्ष्य छे, ते तथा केटलीक अमुक काळ भक्ष्य बाकीना काळमां अभक्ष्य छे तेनी विगत "

१. फागण चोमासा (फागण शुद १५) थी कार्तिक चोमासा (कार्तिक शुद १५) सुधी बन्ने जातनो खजुर, बन्ने जातना तेल, खसखस[1], खारेक, काजु वगेरे मेवो, तथा भाजी (पांदडा मात्र) अभक्ष्य छे फागण चोमासु बेठां पहेलां तलनु तेल आठ मास माटे आगळथी भरी राखवु, कारण के त्यारथी घाणीनी आसपास घणा जीवनी हानी थाय, वळी तलमा त्रस जीवनी उत्पत्ति थाय, तेथी आठ मासनु तेल भरी राखवु जोइए तलसाकळी, तलनो लाडवो, रेवडो प्रमुखनो त्याग करवो फागण पछी खप होय तो तलने अगाउथी ओसावी राखे छे

---

१ खसखस ते बहुबीजमा तथा 'पपुट्टय' ए अभक्ष्यमां कहेल छे ते अपेक्षाए तो सर्वथा वर्जनीय छे. कोइ फागणथी कार्तिक चोमासा सुधी आठ मास अभक्ष्य कहे छे मुनि महाराज जे वस्तुमां खसखस नारेल होय ते वहोरता नथी, जेथी श्रावके ते वापरवी युक्त नथी चुरमाना लाडु, घुघरा प्रमुख मिठाइमां खसखस छांटे छे तो तेनो उपयोग राखवो

होळीना रोजथी काळ (ऋतु) बदलाता अनेक चीजोमां त्रसजीव उपजे छे

खजुर साथे हारडो आपवानो जे अन्य ज्ञातिनो रीवाज श्रावकोमां पण पेसी गयो छे, तेथी एक तो खजुर अभक्ष्य (हुताशणीना दीवसेज आपे माटे) ते खावो पडे अने बीजु होळीनु पर्व करवु ते मिथ्यात्व छता आदरवु, एम बेवडा दोषथी छुटवानो रीवाज बंध करवो जोइए, पण अणछुटके वर कन्याने देवु पडे तो फक्त साकरज आपवानु ज्ञाति बधारण दरेक गामना आगेवानोए करवु योग्य छे.

खारेक पण खजुर जेवी हुताशणीथी अभक्ष्य छे, छता लग्न प्रसंगे वेंहचाय छे माटे तेना बदले पतासा के साकर वेंहचवानो रीवाज करवो ठीक छे

काजुना मींज, अंगुर, सुका अजीर अने चारोळीना मींज वगेरेमा जीवो पडेला प्रत्यक्ष जोवाय छे. एवी चीजो फक्त शीयाळा लायक होइने आठ महिना (कार्तकी १५) सुधी मेवो अभक्ष्य कहेल छे.

भाजी के पान जे शाक तथा भजीया के ढोकळा माटे छतां आठ महिना के अधिक मास होय तो नव महीना तेमा त्रसजीव उपजेला होय छे तेथी अभक्ष्य छे

भाजी अने पान सर्वे आठ महीना त्याग करनाराओए नाग रवेलीना पान पण वापरी शकाशे नहीं, तथा कढीमा मीठो लींबडो नखाय छे ते पण नहीं खवाय एम ध्यानमा राखवु.

२. अशाड चोमासा (अशाड शुद १५) थी कार्तिक चोमासा सुधी सूको मेवो-बदाम, पीस्ता, चारोळी, काळी राती धोळी ग्वीसमीस-द्राक्षनी जात, अखरोट, कुकणी केळां, जरदाळुं, अंजीर, मगफळी, सूकु टोपरु, सूकी रायण, काची ग्याड, सूकां वसाइ वोर विगेरे अभक्ष्य छे कारण के तेमां तद्वर्णा जीव[1], कुंथुआदिक त्रस जीव, लीलफुग तथा इयलोनी उत्पत्ति थाय छे तेज दिवसनी ताजी फोलेली बदाम, पीस्तां तथा पाणीचा नाळीयेरनुं टोपरु तेज दिवसे वापरी शकाय बदामना मींज तथा पीस्ताना मींज तैयार आवे छे ते न वपराय नाळीयेरमांथी भांगीने सूकु टोपरु काढ्यु होय तो ते पण तेज दिवसे खाइ शकाय, पण जो लीलु के सूकु टोपरु खमणीने घीमा तळी नांख्यु होय तो बीजे दीवसे वापरवामा बाधक जणातो नथी; कारण के प्रायः आपणे वध्यु होय ते नांखी तो देता नथी तेथी रूपांतर फेरवराथी दोष लागवा संभव जणातो नथी केटलाक सूको मेवो फागण चोमासाथी अभक्ष्य गणे छे अपेक्षाए ते पण सत्य जणाय छे, कारण के चैत्र वैशाखमां काळी द्राक्षमा प्रत्यक्ष तपासतां इयळो जोइ छे, तो द्राक्ष जरदाळु, अजीर जेवा गळ्या रसादिष्ट पदार्थमां जीवोत्पत्ति वहेली पण थवाथी ते त्यारथी ज अभक्ष्य गणी वर्जवु श्रेष्ठ छे रसस्वादनो जय तथा मूर्छात्याग जेम बने तेम करवाथी लाभज छे. द्राक्ष, अजीर, बदाम, पीस्ता, चारोली प्रमुख केटलाक वेपारी गया वर्षनो माल पथी पडवाथी वेचे छे, तो ते चीजो

---

१ तद्वर्णा जीव थाय छे एम सांभळ्यु छे, तत्त्वज्ञानी जाणे.

खरीदता परीक्षा करीने लेवी, बने त्या सुधी जातेज माल लेवो, नहिंतर जाणीता हुशियार माणस पासेज मगाववो, नहिंतर नोकर चाकरना हाथे तो प्रायः वेठज थाय, माटे तेनो उपयोग राखवो जोइए.

३ चोमासामा (अशाड शुद १५ थी कार्तिक शुद १५) सूकवणीनो सर्वथा त्याग करवो, केमके ते (सूकवणी शाक)मा त्रस जीवनी उत्पत्ति तथा लीलफुग थाय छे. उन्हाळामां पण सूकवणी सभाळपूर्वक न राखवाथी जीवोत्पत्ति थाय छे, वळी जेओ सूकवणी तैयार वेचे छे तेओने तो वेपार करवो एटले इळकी सडेली लीलोतरी पण खरीदीने जोया तपास्या वगर छेदन भेदन (समारवु) करे तेथी जीवहिंसा वधारे थाय चोमासामा तो 'सूकवणी' तद्दन वर्जवी पाच परवी के दश परवी (पर्व)–तिथी लीलोतरीनो त्याग कर्यो होय तो जे दिवसे तिथी होय तेना आगले दिवसे भींडा, चीभडा प्रमुख लावी, (के होय) तेना सभारो, अथाणा के चटणी प्रमुख करेल तिथीना दिवसे वपरायज नहि, आम जो थाय अने थतु होय तो ते खरेखर हास्यजनक छे. तृष्णारूपी वेलडी तो चींटाणी छे, त्यारे आवी कुयुक्तिओ योजी पोतानो मिथ्या प्रयास सफळ मानी स्वपरनु हित करवाने बदले अहितज करे छे, अने तेथी धर्मनी हासी के हिलना सिवाय बीजु काइ थतु नथी. हे सुज्ञो ! एवी आपणी कुयुक्ति होय तेने देशवटो देवो, जेथी स्वपरनुं हित थाय.

---

१. बनता सुधी तो सूकवणी सर्वथा वर्जवी एज श्रेष्ठ वात छे.

४. पोक—पापडी, घउ तथा वाजरानी उवी, जुवारनो पोक, चणाना ओळा, मकाइ (आखा शेकेला) तथा पापडी तथा चोळानु सुडीयु (माटलामां आखी ने आखी वाफेली) नो अवश्य त्याग करवोज जोइए, केमके आ पदार्थो घणा त्रस जीवोना विनाशथी वने छे.

५. कोइ पण वनस्पतिनो भडथो करवो नहि, तेम करेल खावु नहि.

६ नागरवेला पान—कुंथुआदिक त्रस जीवे करी सहित एवा नागरवेलीना पाननो त्याग करवो, कारण के ते पाणीमां बहु वखत रहेवाथी अप्काय (पाणी) ना जीवनी बहु विराधना थाय अने जेम पाणीमां सेवाळ थइ जाय छे तेम पान उपर पण थती सभवे छे, ते अनतकाय छे, तेथी अनत जीवनी हानि थाय छे बीजा मुखवास अनेक प्रकारना छे, तेथी आ चीजनो त्याग करवो युक्त छे, वळी ते गुणकारी पण संभवता नथी, केमके कामविकारनी वृद्धि करनार छे, ब्रह्मचारी पुरुषने तो सर्वथा वर्जनीय छे. जेओ पाननां निरतर खावावाळाज छे, अने वर्जी न शके तोपण तेओए उपयोग पूर्वक शोधीने वापरवा युक्त छे *

* पान खानारां तेनी नसो काडे छे, मुख्य कारण तीहां तबोळीया नाग पण कदाचित होय छे एम कहे छे. नागरवल्लीना पानने वेलडी उपरथी तोडया पछी गमे तेटला दिवस थया होय छतां

७ परदेशी मेंदो—जे कलकत्ता, अमदावाद, मुंबइ वगेरे ठेकाणे आटानी मीलो–सचामां बनावे छे, अने पछी आपणा माटे जथाबंध माल पूरो पाडे छे, ते आवता पण लांबी मुदत थाय, तेम आपणा वेपारीने त्यां पण केटलाक दिवस के अठवाडीयां ते माल अकबंध रहे, ज्यारे ते लोटमा एकली जीवात इढाळ तथा इयळो होय, अने केटलाक तो ते जीवोना पुद्गल रुबा होय, तेवा परदेशी मेंदानु आपणे भक्षण करीए ! अफसोस ! आ वात मासाहारिओ जाणे तो तेओ पण आपणी हासी करे के "धन्य छे श्रावक भाइओ ! हिंदुओ ! तमारी अहिंसा ते केवी " अरे भव्यो ! आ आवणे शेनु भक्षण करीए छीए ? बावीश अभक्ष्यना त्याग करवा साथे उभय *लोकनी बीक राखी परदेशी मेंदानो सर्वथा त्याग करवो युक्त छे.* कदोइनी दुकाननी तेवी मीठाइ लेवी नहि के कराववी नहि, तथा तेनो व्यापार पण करवो नहि आवी अभक्ष्य चीजो नातमा, के कोइने त्यां ज्या वापरी होय तेवे ठेकाणे जमवा पण जवु नहि जेम परदेशी मेंदो अभक्ष्य छे तेमज पडसुदीनो लोट तथा रवो पण खावो युक्त नथी चलित रसनी आपेली सूचना मनन पूर्वक वांचवी के केटला दिवसनो तथा केवो लोट भक्ष्य छे. त्यारेज आपणे प्रमादी थइ आवो वस्तुने उत्तेजन आपवा मडया त्यारेज तेने माटे मोटी मोटी मीलो–फॅकटरीओ उघडी छे, केजेथी अनेक जीवोनी हानि

सचित रही शके छे, केमके त्या सुधी दरेक पाननी साथे जीवसबंध कायम रहे छे, तेथीज ते लांबो वखत लीला रही शके छे.

थाय छे. परदेशी मेंदानी मिठाइ—जेमके परसुदीनी पुरी, घारी, गळ्यां मोळां साटा, सुतरफेणी, गणगणगांठीआ, नानखटाइ, हिंदु बीस्कुट, तेव प्रमुख अनेक मिठाइ, मेंदानी बनावे छे तेनो अवश्य त्याग करवो.

८. गळ्या काजु—गळ्या काजु जे कदोइ बनावे छे ते प्रायः तपास्या वगर एमने एम आखा बनावे छे, जेमां त्रस जीव होवा सभव छे तेथी ते न वापरवा कदाच खावानी इच्छा थइ होय तो काजुना बे पड जुदा करी साफ करी जीवनी यतना कर्या पछी घेर बनावी उपयोगमां लेवा, वळी सादा खावा ते पण बे पड जुदा करी जोइ तपासीनेज वापरवा, ते पण जे ऋतुमां अभक्ष्य होय त्यारे तो काजु नज वपराय ते उपयोग राखवो

९ विलायती डबामां पेक करेल दूध (नेसल्स मील्क, मील्कमेड्ड मील्क वगेरे दश वार जातना नामोथी वेचाता, ते मुसाफरीमा चा बनाववो होय तो दूधने बदले ते डबामांथी दूध वापरे छे), सोसामा पेक करेल केरी, मुरब्बा, गुलकंद प्रमुख तथा विलायती बिस्कुट विगेरे अभक्ष्य छे तेथी अवश्य त्याग करवो. उपयोग न करता होइए तोपण आवी परदेशी के देशी अभक्ष्य चीजोनो नियम करवो के जेथी आश्रव न आवे कारण के ज्यां सुधी कोइ पण वस्तु उपरथी मूर्छा उतरी न होय त्यां सुधी यथार्थ फळ न मळे, तेथीज शास्त्रकारे कयु छे के मरुदेशमां जेम पान न मळे छतां पण नियम न करवाथी तेनुं त्यागफळ न पामे, तेथी खास नियम

करवो नेसलसमीरक वगेरे जे विलायतथीआवे छे ते मत्यक्ष अभक्ष्य छे, तेथी तेनुं विशेष विवेचन करवा जरूर नथी. बंधुओ! आपणा शरीरमा रोग, सोग, दारिद्र वगेरेनो जे पगोज वास थइ गयो छे तेना कारण आवी तुच्छ भ्रष्ट वस्तुओ वापरवानुज फळ छे, केमके 'आहार तेवो ओडकार' ए दृष्टांतथीज समजी लेवु. अहो! आपणी "उटना अहार ग्राका" जेवानी शी गति थशे? हवे आ अभक्ष्य वस्तुओथी विरमवु योग्य छे

१०. सोडा, लेमोनेड, जीन्जर, रोझबरी, पीकमीअप, पीन्काल्स, एलटोनीक, कोल्डड्रीक, कोल्डक्रीम, जीन्जरएलन्लाइम, मीथीओ, अमरीक, पेरीसीडर, चेम्पेइनसीडर, वीनाइन टॉनीक, क्रीमसोडा वगुरव वेटलीक जातो शीशामा पेरुकरेल होय छे ते अनाचरणीय छे, कारण ते शीशाओ मुसलमान, पारसी वगुरे लोकोए मुखे मांडया होय ते शीशाओ आपणे मुखे मांडया तेथी साफ धर्मभ्रष्टता देखाय छे वळी ते जीवाकुल होय, अणगळ पाणी वापरेल होय, तथा घणा दिवसना वासी होय, हलकी वर्णवाळाए बनावेल होय विगेरे अनेक दोषोथी आवी चीजो अभक्ष्य छे तेथी अवश्य त्याग करवो. तेमां पण "Higher education" उंची केळवणी मेळवी जे सुधरेला जैन युवको छे तेओए तो हवे हैंडे कांइ सान राखी हदमां रहेवाय तो सारु, नहितर तेना कडवां फल चाखवा पडशे त्यारे जागृति आवशे.

११. बीडी, होको, चलम, सुगी, सीगारेट, चीरूट, तमाकु

अने गांजा, चडस, माजम, अफीण, कसुंबो, भाग, प्रमुख व्यसनो अनाचरणीय छे जीवहिंसा, अनर्थनुं कारण तथा पैसानो गेरउपयोग शिवाय तेमा कांइ लाभ छेज नहि कदाच ते चीज न मले तो चेतना मुंझाय तथा क्षयादिक महारोग थाय, अने कोइ वखत प्राणमुक्त थवानो संभव छे वळी तेमां अग्नि वायु तथा बीजा त्रस स्थावर जीवोनी हिंसा थाय छे, तेथी आवी व्यसनवाळी चीजो सर्वथा वर्जवी

१२. विलायती दवाओ अभक्ष्य छे उत्कृष्ट तो एज छे के रोगादिक कारणे पण अंगीकार करवी नहि, अने आ आत्मा नळीयो थाय तो शुं न करी शके? अर्थात् आज आत्मा वैतरणी नदी (नारकी) नो पमाडनार छे, आज आत्मा स्वर्गादिक सुखनो पमाडनारो छे अने छेवटे आज आत्मा सिद्धि–सौध (मोक्ष महेल) प्रत्ये लइ जनारो छे केटलाक उजाळा स्वच्छंदी शोखीनो विलायती दवाना डोझो खुशीथी पीये छे ते प्रत्यक्ष अनाचरणीय तथा दुर्गतिनुं सबळ कारण छे तेवा पुरुषोने कोइ हितचिंतक उपदेश करवा जाय छे तो तेनु परिणाम केटलीक वखत उलटुं खेदजनक आवे छे. केनी माफक ? जे शास्त्रकारे कह्युं छे के—

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।
पय:पानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनम् ॥

एटले " मूर्खोने उपदेश करवा जतां शान्त थवाने बदले को-

धायमान थाय छे, जेम सर्पने दूधनु पान करावराथी फक्त विषनी वृद्धि करनारु थाय छे" जेथी तेवा मूर्खोने प्रतिबोध करवाथी पण शु ?

१३ गोळ—गोळ (गुड) मा जीवनी उत्पत्ति थाय छे कारण केटलाक लाभ मेळववा खातर गोळमा चणानो लोट, खारो तथा माटी एम त्रण प्रकारे अथवा बीजी वस्तुओनु मिश्रण करी घने छे गोळमा तद्वर्ण (लाल रगनी) इयळो थाय छे, तेथी तेवो गोळ अभक्ष्य छे, तो तेनो उपयोग राखवो. परदेशी गोळमां माय भेग करता हशे एम अनुमान थाय छे, चणानो लोट तथा खारो मेळववानु कारण देखावमा सरस लागे, अने माटीनो भेग करवाथी सोमण गोळमा चारेक मण माटी मेळवी तोलमां लाभ थाय एम दगो करे छे तेम साभळ्यु छे, तेथी तेवो हलको माल सुइक लेवो नहि. पण देशी श्रीकार माल परीक्षा करी लेवो 'साधु ते मोंधा माटे अने वाणथी सुशोभित ते अतरथी दोषित आ शीखामण खास उपयोगी छे, माटे जे माल खरीदवो ते खरु जोइ ए तेनी शोभामां भजाइ जइ खरीदवु ते करता ते वस्तुना गुणदोषनी परीक्षा करी सार होय ते लेवु

१४. परदेशी खाड—ते शुद्ध करवामा जे अशुद्ध पदार्थो प्रमुख वपराय छे, जेनु स्पष्टीकरण अनेक जग्याए छपाएलु छे, जेथी विशेष न लखतां मात्र एटलुज कहवु बस छे के तेवी खाड के साकर वापरवाथी शारीरिक तन्दुरस्तीनु बगडवु तथा धमभ्रष्टता ए बे

मोटा दुर्गुण थाय छे, तेथी त्याग करवो. हवे केटलाक तेनो त्याग करीने काशी प्रमुखनी देशी चीनी वापरे छे, पण आ कलियुगमा ठगलबाजी बहु थट छे, तेथी केटलीक वखत देशीने नामे परदेशी माल रुकमरध आकरा भावथी खपे छे, अने ज्या देशी बनावे छे त्या पण परदेशी चीनीनु मिश्रण थाय छे, माटे तेनो उपयोग करवो अथवा तो तेवी रीते अजाणमा जे दगो प्रमुख थाय तेनी प्रथमथी जयणा राखवी, अने ज्यारथी चोकस के शंकापूर्वक जाणवामां आवे त्यारथी ते चीज वापरवीज नहि, नहिनर नियम लइने तेमा दोपित थवाय नहि ते माटे खास उपयोग राखवो ते मुजब विदेशी निमक, विदेशी केशर वर्जवु ज्यां सुधी बने त्यां सुधी देशनी चीज शा माटे न वापरवी ?

१५ आखु कठोळ—कोइ पण जातनु आखु कठोळ न खावु जोइए दरेक कठोळनी दाळ करीने खावी श्रेष्ठ छे, कारण के आखा कठोळमां त्रस जीवोनो उत्पत्ति थाय छे, ते साफ करवा छता ते जीवो नीकळे नहि, अने आपणी दृष्टि पण पडे नहि, तथा जीव हिंसा थाय माटे कठोळनी तुरत दाळ करी नाखवी ने खावी. कठोळ झाझो वखत रहेवाथी तेमां जीवनी उत्पत्ति थाय छेवटे आखु कठोळ सर्वथा त्याग न थइ शके तो चोमासामां आखु कठोळ अवश्य वर्जवु. वटाणामां मिठाशने लीधे विशेष जीव उत्पत्ति थाय छे, तेथी तेतो खास करी वर्जवा योग्य छे

१६. हिंदु-दिरद्री बिस्कुट—जे दिल्हा, पुना, वडोदरा

वगेरे ठेराणे बनाववामा आवे छे, जे आपणामांना केटलाएक बंधु-ओ वापरे छे, पण ते बनाववामा प्रथम तो प्राय परदेशी मेंदो वापरे छे, अने वळी ते पण हलवानी माफक बे त्रण दिवस पाणीमा को हवावे छे, त्यारबाद तेना बिस्कुट थाय छे तेथी असख्य समूर्छिम अनेक बेइंद्रियादिक जीवनी हानि थाय छे वळी ते बिस्कुट तैयार करवामा चरबी पण चोपडवामा आव छे, तेथी ते सर्वथा वर्जनीय छे नानखटाइमा पण परदेशी मेंदो वापरे छे, तेथी ते पण त्याग करवा योग्य छे

१७. टुथ पाउडर (दतमजन), टुथ ब्रश (दात साफ कर-वानु ब्रश-कुचो) विलायती जे दतमजनो तैयार आवे छे ते वा-परवा युक्त नथी, कोण जाणे ते क्या भक्ष्य के अभक्ष्य पदार्थनु बनु हशे? माटे ते न वापरता बदामना छोडीयानी मसी अथवा तो ते मसीनी साथे कपुर, बरास, चाक (सचित्तना त्यागीए चाक गरम पाणीमा उकाळी सुकावीने अचित्त करेल होय तो वापरी शकाय), हरडा, बेडा, आमळां, मस्कती, दाडमनी छाल, सोनागेर, काथो, मोचरस, हीरादखण, हीमज, दाडमनां सूका फूल, फटाळु माधु, चणकबाब प्रमुख अनेक दातने गुणकारी वस्तुथी बनावेलुं देशी मजन वापरवु युक्त छे. वळी दांत के हाडकाना अगर कोइ चीजी जातना हाथावाळा कोइ पण जनावरना केश के रवरना टुथ ब्रशो हिंदुओए अने खास जैनोए मुखमा नांखी भ्रष्ट थवु ते केटलु लज्जास्पद छे! वळी ते ब्रशो कटलीक वार दातमा पोल करी

चहु खरावी करे छे. जो के ते एवु गुणकारी नथी, पण कदाच होय तोपण आपणे त्यां साधन रहित थया छीए-अर्थात् अनेक रीते दातनी शुद्धि, मजबुतीपणु तथा गुणकारी करवाना उपायो छे, माटे विलायती दुध पाउडर अने दुध ब्रशनो उपयोग होय तो त्याग करवो, अने न होय तो ते न वापरवानो निश्चय करवो आवी वस्तुओनो पण नियम करवाथी लाभनु कारण छे

१८. होटेलो—विश्रान्ति आनदी भोजनगृह, अने तेमा थती दरेक चीज शुद्ध ब्राह्मणीआ प्रथम तो आ विश्रान्तिगृहनी मुलाकात (Visit) लेनारा ब्राह्मण वाणियाथी माडी लुवाणा कडीआ एम उत्तरोत्तर उच नीच हिंदु सर्व प्रायः होय छे, अने तेना मालेको केवी ज्ञाते होय छे ते तो तपास कर्ये मालुम पडे त्यां चा, दूध, पूरी, दूधपाक, बासुदी, शीखड ब्राह्मणीआ गमे ते वखते मळी शके छे. वळी भजीयां, कचोरी, आइसक्रीम, कुलफी, आइस वोटर, कदमूल प्रमुखना शाक, भातभातनी चटणीओ पण ब्राह्मणीआ थाय तथा नानखटाइ, वीस्कुट सोडा विगेरे जेनी इच्छा होय ते ब्राह्मणीआ ताजु मळी शके कहो केवी सुगमता ! पण हे जैनवधुओ ! अने आर्यो ! आ होटेलो प्रमुखनु अनुकरण थवानुं कारण अनार्यो छे, अने तेना सहवासथी आपणे पण अनार्य जेवाज थइ जइए छीए त्या बनती सर्व वस्तुनो जो विवेक पूर्वक तपास करवामा आवे तोज खबर पडे, पण तकलीफ कोण लीए, हिंदु भोजनगृहमां थयु एटले तो ते शुद्ध पवित्रज होय. कारण जे विवेकनो

ार-भक्ष्याभक्ष्यनो विचार करे तो खवाय पीवाय केम ? एवा
ाणे विवेकविकल अर्धदग्धो जीह्वाइन्द्रियनी रस लपटतामा शु
अकार्य नथी सेवता ? अर्थात् स्पर्शास्पर्श के भक्ष्याभक्ष्यनो
ार नहि करता भोजन करी आनद मानीए छीए छेवट मुस-
ान तो शु पण युरेपीयन होटेलोमांथी माखण-पाउ (बिस्कुट)
रे पदार्थो मगावी खानाराओ पण होय छे अफसोस ! आ
तानु विवेचन करतां धपारी छुटे, तेवा कार्यना सेवनाराओ
कलियुगमा व्यापी रह्या छे अमने तो आवा प्राणी प्रत्ये दयानी
ाणी स्फुरे छे के तेओने केवा क्वा विपाक भोगववा पडशे अने
ा त्रास तेओ पामशे ? हजु पण हे बधुओ ! समजो अने आ भ्र
ाथी विरमो ! हे जैन युवको ! आ श्रमण भगवत श्री महावीर
ाना शासनमा मनुष्य जन्म पाम्यानो फेरो सफळ करो ! दश
ाते दुर्लभ एवो आ मनुष्य जन्म फरी मळवो दुर्लभ छे. " काग
ावण काज विप्र जिम, डार मणि पछतायारे " एवो अवसर न
ाने माटे पूर्वोक्त त्रण अक्षरनी खामी (विवेक) छे, ते रुपी मित्रने
गाडो अने आत्महितार्थे भ्रष्टाचारने देशवटो आपो !

१९. पाणी—आ कळिकालमा केटलाक मोटा शहेरोमा स्टे-
ानो उपर पाणीना नळ सचा टांकीओ थइ गयेल छे, तेथी मुसा-
ारी वखत के हवा खावा जता अगर रस्तामा तृषा लागी होय
यार अणगळ पाणी पीवाय छे ते अनाचरणीय छे अणगळ पाणी
ार समान कह्यु छे, जेथी पीवामा के वापरवामा पण अवश्य पाणी

मजनुत गळणावडे बरोबर गळीनेज वापरवुं, तथा पाणीना वासणमां एक प्याला के जेने मुखनी लाळ अडी होय ते बोळवाथी असंख्य समूर्छिम जीव उत्पन्न थाय छे, माटे पाणी काढवा माटे जुदो डोयो (वासण) राखवो जोइए वळी जे प्याले पाणी पीधु होय तेने पण मुखनी लाळ अडी होय माटे लुगडावडे तुरत कोरो करी नांखवो, ने ज्यारे पीवु होय त्यारे दरेक वखते ते प्यालो जोवो के "तेमा जीव जत कचरो नथी," ते तपासीनेज पीवु. उघाडु रहेलु पाणी पीवाथी बहु दोष छे अल्प प्रमादथी असंख्य जीवनो घात थाय ते केवु अनर्थकारक छे ? माटे दरेक भाइओ अने ब्हेनोए पाणी माटे खास लक्ष्य राखवु एवी प्रार्थना छे श्रावके पहोरे पहोरे पाणी गळीने पीवुं जोइए, तेमां जेटलो प्रमाद तेटलो दोष छे "यत्र यत्र प्रमादः तत्र तत्र हिंसा" प्रमाद छोडया वगर धर्म पामवो क्यां सहेल छे; जयणाए उपयोग पूर्वक वर्तवु तेज धर्म छे, कपाळमा चांडलो मात्र करवाथी धर्म नथी थतो, के नथी जाणवा मात्रथी थतो, पण उभय लोकनो भय राखी जे सज्जनो अष्ट प्रवचन माताने हृदयमा राखी वर्ते छे, तेओनुज कल्याण तथा पृथ्वीपर आववु सारभूत छे, अने बाकी तो पृथ्वीने खरेखर भारभूतज समजवा. धन्य छे। श्रीकुमारपाल राजाने के जेणे अढार देशमा अमारि (अहिंसा) पडह वजडाव्यो, जेना वखतमां गाय, भेंस, बळद,

प्रमुख ढोरने पण पाणी गळीनेज पावामां आवतुं अने ते धर्मीष्टने 'परमार्हत' एवुं बिरद कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमाचार्यजी महाराजे आप्युं हतुं ते कुमारपाळ राजा आवती चोवीशीना प्रथम तीर्थंकर श्रीपद्मनाभप्रभुना गणधर थवाना छे; तेनो हाल पण यशवाद वर्ते छे, तथा आगामीभवे पण वर्तशे सदा तेवा पुरुषो जयवंता वर्तो! अरे आपणे क्यारे प्रमादरूपी पछेडी दूर करी पापरूपी मलिन शय्या माथी उठी तेवा परमार्हत थवा अने शिववधू वरवा उजमाल थाशुं? जेथी भवरूपी प्रचंड ताप उपशमे।



बहु आरंभ थतां तृप्ति न थाय अने पाछळथी हिंसा बहु थवाना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ.

वनस्पतिनु नाम.	वर्जवाना कारणो
शेरडी—	घणी खावाथी तृप्ति न थाय; वळी ते खाइने तेना छोता ज्यां नांखीये त्यां आपणा मुखनी लाळ अडवाथी असंख्य समूर्छिम जीवनी उत्पत्ति थाय, तथा मिठासने लीधे कीडीओ प्रमुख त्रस जीव चटे, मनुष्य के जनावरनो पग पडवाथी के ते छोताओ जनावर चारी जवाथी त्रस जीवोनी हिंसा थाय वगेरे हिंसाना कारणोथी वर्जवी
सीताफळ रायण, खलेलां, पाका गुंदां, जांबु (रावणा), करमदां, बोरा,	शेरडीनी माफक आ वस्तुओ खाइ तेना ठळीआ ज्यां नाखीए त्यां असंख्य समूर्च्छिम जीवनी उत्पत्ति थाय, तथा त्रस जीवोनी हिंसा थाय वगेरे कारणोथी वर्जवा योग्य छे तेमां पण बोरजातिमां तो त्रस जीवनी उत्पत्ति होवाथी ते अभक्ष्य छे, अने ते शिवाय जे न वर्जि शकाय तेने माटे यत्नाथी

मवर्तता अल्पदोष थाय-एटले खाइने तेना ठळीआ वगरे राखमा परठववा, अगर जे रीते पछी अनेक जीवोनो नाश न थाय तेम यत्ना अवश्य जाळववी जे बोर वगेरे केटलीक चीजो अभक्ष्य छे ते अभक्ष्य जाणीने तेनी मौढ अवस्था थइ होय तोपण त्यजवी केमके ते जाते अभक्ष्य छे माटे आवी चीजो उपरथी तृष्णा उतारी वर्जवा लायक छे वळी बोर, सीताफळ, शेरडी, रायण शक्य परिहार छे-अर्थात् ते एवी चीजो नथी जे तेना वगर न चाले. माटेज ते ते चीजो पाछळथी हिंसाना कारणने लइने त्याग करवा स्वशक्ति अवश्य फोरववी, अने क्रमे क्रमे ज्यारे दरेक चीज उपरथी ममत्व उठशे अने सत्रया चारे आहारनो त्याग थशे त्यारेज अणाहारी शाश्वत अनंत सुखनी ल्हेरीओमा लय लीन थइशु

लीला अजीर—	चीज विशेष होनाथी वर्जवा लायक छे
शेतुर, पालसा,	बहु खावाथी तृप्ति न थवाना कारणे वर्जवा योग्य छे

शींगोडा— काम वृद्धिजनक होवाना कारणे वर्जवां, तथा ते तळावमा पाणीमां वेल उपर थाय छे, तेनी आसपास बहुज त्रस जीवोनी उत्पत्ति थाय छे, तेथी शींगोडा तोडती वखते घणा त्रस जीवनी विराधना थाय छे माटे वर्जनीय छे

वालोळ— श्रावकना अतिचारमा पण लखे छे. के "वासी वालोळ, पोक, पापडी खाधां" तो जे वालोळ आजनी उतारेली होय ते रात वासी रहेवाथी तेमां त्रस जीवनी उत्पत्ति थाय छे तेथी बीजे दिवस अभक्ष्य थाय छे ते दिवसनी उतारेलीमां पण इयळो प्रमुख त्रस जीव होय छे, तेथी कदाच ते दिवसनी खावी होय तो पण उपयोग पूर्वक तपासी करीने वापरवी युक्त छे. प्रथम तो ते दिवसनीज उतारेली ताजी वालोळ मळवी मुश्केल माटे बने तो सर्वथा वर्जवी श्रेष्ठ छे

प्रवर्तता अल्पदोष थाय-एटले खाइने तेना ठळीआ वगेरे राखमा परठववा, अगर जे रीते पछी अनेक जीवोनो नाश न थाय तेम यत्ना अवश्य जाळववी. जे बोर वगेरे केटलीक चीजो अभक्ष्य छे ते अभक्ष्य जाणीने तेनी प्रौढ अवस्था थइ होय तोपण त्यजवी केमके ते जाते अभक्ष्य छे माटे आवी चीजो उपरथी तृष्णा उतारी वर्जवा लायक छे वळी बोर, सीताफळ, शेरडी, रायण शक्य परिहार छे-अर्थात् ते एवी चीजो नथी जे तेना वगर न चाले. माटेज ते ते चीजो पाछळथी हिंसाना कारणने लइने त्याग करवा स्वशक्ति अवश्य फोरववी, अने क्रमे क्रमे ज्यारे दरेक चीज उपरथी ममत्व उठशे अने सवथा च[illegible] आहारनो त्याग थशे त्यारेज अणाह[illegible] शाश्वतां अनंत सुखनी लहरीओमा [illegible] लीन थइशु

लीला अजीर— बीज विशेष होवाथी वर्जवा

शेतुर,
फालसा,
— बहु खावाथी तृप्ति न थवाना का[illegible] जवा योग्य छे

त्रस जीवोनी हिंसा थवाना कारणथी वर्जवी आने माटे श्राद्धविधिमां खुलासो छे

मधुक— ते महुडां वृक्षनां फळ जेने महुडा कहे छे, अने तेनो दारु प्रमुख थाय छे, ते केफकारी तथा अशुभ परिणामना हेतु होवाथी वर्जनीय छे वळी त्रस जीवाकुळ छे

त्रस जीवनी बहु हिंसा थवाना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ,

चीली.
बोला.
लीलो वांस.

इयलो तथा क्षुद्र जीवो आ वनस्पतिओमा उत्पन्न थवानां हेतुथी सर्वथा वर्जनीय छे, त्यारे तेना बोळ अथाणाओ करीने वापरवां ते केवु अघोर-त्रासजनक कर्तव्य ? सुवावड प्रमुख गमे तेवां रोगना कारणो होय तोपण आ चीजो तो सर्वथा दृष्टिथी पण दूर राखवा योग्य छे. स्त्रीवर्ग के जेने जीभनो स्वाद विशेष होय छे तेओए आने माटे बहु भय पामी वर्जवु जोइए.

दर्शन विरुद्ध तथा लोकविरुद्धना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ

वनस्पतिनु नाम.	वर्जवाना कारणो.
पडोरा—	लावा सर्पाकारे होवाथी अने अशुद्ध परिणामना हेतु होवाथी वर्जवां.
फणस—	दर्शन विरुद्ध होवाथी (मांस पेशी-रूप देखाय छे) अनाचरणीय छे.
भुरु कोळु—	अन्यदर्शनी वगेरे तेने देवी प्रमुखनी पूजामा घेटादिकनी कल्पना करी भोग आपे छे तेथी ते वर्जवु (औषध कारणे प्रमाण राखे.)
कोळु—	मोटु फळ होवाथी केटलाक नथी वापरता.
चडबु तुवडु—(दुधी)	कदाच झेरी नीकळे तो आत्मघात थाय तेथी ते अनाचरणीय छे.
कटोला पाका कारला ,, टींडोरा ,, टमेटां ,, ककोडा ,,	तेना मूळ रग लीला होय छे अने पाकेथी रातां थाय छे ते, तथा कटोलाने कारेलामा जीवात बहु पडे छे, अने टीं-डोरामा बीज घणा छे, माटे आ चीजो अशुद्ध परिणाम थवाना कारणथी अने

वापरवी युक्त छे, तेनी दुर्गंध अने पड
जोता तो दुगळीनु स्मरण थाय छे,तेथी
ते तजवा योग्य छे

आ मुजब बीजां पण भाजीपान शियाळामां उपयोग पूर्वक खखेरी करीने वापरवा योग्य छे. तेमा पण भाजी सर्वे जातिनी चारणी वडे चाळीनेज वापरवी, कारण तेमां इयळ कुथवादिक त्रस जीव नीकळे छे तो तेनी जयणा पळे, अने जो त्रण वार चाळतां जीव नीकळे तो ते परठववा योग्य छे



आर्द्रा नक्षत्रथी त्याग करवा योग्य वनस्पति—

रायण, केरी— आर्द्रानक्षत्रथी पाकी केरीनो जरुर त्याग करवो आ वस्तु अति प्रिय होवाथी केटलाएक आर्द्रा नक्षत्र पछी वापरे छे तेने वधारे शु कहेवु ? भगवतनी आज्ञानु उल्लंघन करीने पण स्वकामनाओ तृप्त करवी ! जाणे के ते वस्तु जोइ नथी माटे खाओ, पीओ ने वापरी लीयो; फरी आवी लहेजत नहि आवे, एवु मानी आपणा युवान वधुओ तो शु पण जेओने जरारुपि पीशाचणीए वश

फागण शुद १५ थी कार्तिक शुद १५ सुधी भाजी–पाद-त्रामात्र प्रमुख जीवोनी हिंसा होवाना कारणे वर्जवा कह्या छे तेना केटलाएक नाम,

मेथीनी भाजी	कडलीनी भाजी.	एलचीनां पान
ताजळीयानी भाजी.	नागरवेल्ना पान.	लीली चा
कोथमीरनी ,,	अडुना ,,	फुलावर
फोदीनो ,,	फागना ,,	गुलाबनां फुल.
	अळवीना ,,	
डांभानी भाजी	भों पांथरीनी भाजी	तळसीना पान.
टाकानी ,,	मीठा लींबडाना पान	अजमाना ,,
भीडानी ,,	पोइना पान	राडारडीना फुल

आ लीलोतरीओ आठ मास तो सरथा वर्जवा योग्य छे

सरगवानी शींग— तेमां फागण सुद १५ पछी तेना बीजमा त्रस जीव थाय छे, तेथी आठ मास पर्यंत वर्जवी

कोबीज (फर्मकलो)— तेना पादडामा तद्वर्णी त्रस जीव होय छे ते माछुम पडता नथी तेथी ते आठ मास तो वर्जनीय छे, अने बाकी शियाळामा पण यत्ना पूर्वक खंखेरीने

वापरवी युक्त छे, तेनी दुर्गंध अने पड
जोता तो डुगळीनु स्मरण थाय छे,तेथी
ते तजवा योग्य छे

आ मुजब बीजां पण भाजीपान शियाळामा उपयोग पूर्वक खरेरी करीने वापरवा योग्य छे. तेमां पण भाजी सर्वे जातिनी चारणी वडे चाळीनेज वापरवी, कारण तेमां इयळ कुथवादिक त्रस जीव नीकळे छे तो तेनी जयणा पळे, अने जो त्रण वार चाळतां जीव नीकळे तो ते परठववा योग्य छे



आर्द्रा नक्षत्रथी त्याग करवा योग्य वनस्पति—

रायण, केरी— आर्द्रानक्षत्रथी पाकी केरीनो जरर त्याग करवो आ वस्तु अति प्रिय होवाथी केटलाएक आर्द्रा नक्षत्र पछी वापरे छे तेने वधारे शु कहेवु ? भगवतनी आज्ञानु उल्लंघन करीने पण स्वकामनाओ तृप्त करवी । जाणे के ते वस्तु जोइ नथी माटे खाओ, पीओ ने वापरी लीयो; फरी आवी लहेजत नहि आवे, एवु मानी आपणा युवान बंधुओ तो शु पण जेओने जरारुपि पीशाचणीए वश

चोमासामां (असाड शुद १५ थी कार्तिक शुद १५ सुधी) त्रस जीवो पडवाना कारणे वर्जवा योग्य वनस्पतिओ

भींडा— कंटोला— कारेला— तुरीया—	बीजी ऋतुमां पण जीव थाय छे, पण चोमासामां विशेषे करीने इयळो प्रमुख जीवोनी उत्पत्ति थाय छे. अने कारेलां प्रमुख तो बाह्यथी (उपरथी) जरा पण सडेलु देखातु न होय तेने पण समारतां अदर इयळो केटलीक वखत जोवामां आवे छे, उपयोग राखीए तो-पण आ जीवोनी हिंसा थइ जाय तेथी चोमासामा खास वर्जवी

कारेलां तुरीयां प्रमुखनो उपरनो भाग खडबचडा खाडा जेवो होवाथी तेमां कुंथुआ प्रमुख त्रस जीवो भराइ रहे छे, तेथी तेवी वनस्पतिओ प्रथम पुजणीथी पुजीनेज यत्ना पूर्वक समारवी जोइए, अने दरेक वनस्पतिनु शाक शुद्ध करीने वापरवुं युक्त छे.



चालु वपरावामा आवती वनस्पतिओ

शाकमा वपराती	काचा पाका फळ तरीके वपराती
१ काकडी मूळ पान विना	तरबुच
२ कारेलां ”	लींबु मीठु
३ कटोला ”	पोपैयु
४ गलका ”	सफरजन
५ गुवारनी फळी ”	पीचीज
६ काचां गुदा[1]	चीकु
७ लीला चणा	केरीनी जात
८ चीभडा (आरीया) मूळपानविना	जमरख (पेर)
९ चोळा	अनेनास
१० टमेटा	कोठ फळ
११ टींडोरा (धोळा)	केळा
१२ डाळा	दाडम
१३ डोडी	आमळा
१४ तळीयु-भजीयु (मकरटेटी)	नारंगी (सनरा)

---

१ काचा गुदा भागीने तेना ठळीया तरतज राखमां परठवी देवा, नहितर माखीओ तेने खावानो पदार्थ समजी तेना उपर बेसे छे, तेथी तेनी पाखो चीकाशने लीधे चोंटी जवाथी उडी शकती नथी ने मरी जाय छे, तेथी खास उपयोग राखवो

१८ तुरीआ
१६ तुएरा
१७ दातण (गानळ, बोरडी, झील, आवळ)
१८ दधीयु
१९ परवर
२० पांदडी–पापडी–पापडा
२१ फळशी
२२ भींडा
२३ मरचां
२४ मरवा
२५ मोगरी
२६ लींबु खाट
२७ वटाणा
२८ आलकुल

नाळीयेर (काचा–पाकां)
पपनम
द्राक्ष (लीली)
नीजोरा

आ उपर ग्रखेली जे वनस्पतिओ छे, तेमांथी पण यथाशक्ति त्याग करवो, अने जे बारे मास प्रायः मळी शकता के उपयोगमां लेवाती वनस्पति होय, जेमके केळा, ते शिवाय दरेक लीलोतरीओ जे राखवी होय ते पण अमुक काळ खावी, बाकी त्याग, जेमके कातिक मासमां अमुक अमुकज खावी, तेम बारे मास आश्रयी राखी लेवाथी बाकीना काळमां विरतिपणानुं फळ मळे छे. कारण केरी शियाळा पछी ि फागण के चैत्रथी आर्द्रा

सुधी खपे, वाकी त्याग, तेम अति सक्षेप पूर्वक नियम लेवाथी घट्ट लाभनु कारण छे,तथा नियम लीधा त्यांथी दर वर्षे अमुक अमुक वनस्पतिनो सर्वथा त्याग करवानो पण नियम करवो. जेमके १९६४ मा अमुक अमुक लीलोतरीनो नियम लीधो त्यारेज एवो नियम लेवो के १९६५ थी मारे नोलकोल, मोगरी, पपनस, चीकु पीचीजनो सर्वथा त्याग, १९६६ थी डाला, लीला मरी, मरवा मगुखनो सर्वथा त्याग, तेम आगळना वर्षोनो पण यथाशक्ति नियम करवो. जेथी तेना ते वखते अमुक वरस पछी त्याग कर्याना भाव थवाथी तेने ते वखतथी अभयदान दीधानु फळ मळी चुके. आ प्रमाणे नियम करवाथी अनेक वनस्पतिओना जीवने अभयदान आप्यानु फळ मळे अने ज्या सुधी नियम नथी कर्यो त्या सुधी काइ फळ मळतु नथी वळी श्रावके छ अट्ठाइओमां[1] वनस्पतिनो

१ चैत्री तथा आसोनी बे अट्ठाइओ शाश्वती छे, ते चैत्र सुद ७ थी १५ सुधी अने आसो सुद ७ थी १५ सुधीनी जाणवी

त्रण चोमासानी त्रण अट्ठाइ ते एक कार्तिक सुद ७ थी १५, बीजी फागण सुद ७ थी १५, अने त्रीजी अषाड सुद ७ थी १५ एम त्रण अट्ठाइ जाणवी

पर्युषण पर्वनी अट्ठाइ श्रावण वद १२ थी भाद्रवा सुद ४ सुधी, एम छ अट्ठाइ कही छे ते दिवसोमां सचित्तनो त्याग, वनस्पतिनो त्याग, ब्रह्मचर्य, अमारि, तप, जिनपूजा, गुरुवदन, व्याख्यानश्रावण, सामायिक, पौषध, अतिथिसविभागादिक नियमो अवश्य विशेषे करीने करवा जोइए.

जरूर त्याग करवो, तथा जघन्यथी पाच पर्वी तिथिओ ते शुक्र पचमी, बे अष्टमी अने ने चतुर्दशीमा अने उत्कृष्ट नार पर्वी तिथीओ ते बे बीज, बे पांचम, बे अष्टमी, बे चतुर्दशी, अमावास्या अने पुर्णिमा, तथा म यम थकी सात आठ के दश पर्व तिथिओमां अवश्य लीलोतरीनो त्याग करवोज जोइए, ते तिथिओने विषे एक पाकां केळां उपयोगमा केटलाएक ले छे, कारण ते अचित्त छे, तो ते शिवाय अवश्य बाकीनी सघळी वनस्पतिना त्यागनो नियम ग्रहण करवो जोइए

वळी सामान्य रीते कह्यु छे केअजाण्यु फळ, नहि शोधेलु शाक पत्र, सोपारी प्रमुख आखां फळ, गाधीना हाटनां चुर्णो, चटणी, मलीन घी अने परीक्षा वगरना माणसे लावेला बीजा पदार्थो खावाथी मांसभक्षण तुल्य दोषो प्राप्त थाय छे तेमा पण सोपारी चोमासामां आजनी भागेली आजेज खवाय, बीजे दिवसे लीलफुग थवाना कारणथी ते न खवाय, तेमज एलची ज्यारे वापरवी होय त्यारे फोलीने सम्यक प्रकारे तपासीनेज वापरवी युक्त छे. चोमासामा पीपरीमूळना गठोडा, सूठ प्रमुख, लीलफूग कुथुआदिकनी उत्पत्ति थवाना कारणे न खावा. चुनानी फाकमां राखवाथी सडता नथी. दवा प्रमुखमां वापरवु होय तो ते सम्यक प्रकारे शोधीने वापरवु युक्त छे.

सचित्त त्यागी, द्वादश व्रतधारी तथा चौद नियम धारनारने सचित्त सबधी ध्यानमा लेवा योग्य केटलीक बाबतनो खुलासो



सचित्तनो सर्वथा त्याग कर्यो होय तेणे कइ कइ चीजो सर्वथा क जे सचित्त छे ते वर्जवी, तथा कइ कइ रेवी रीते अचित्त करी होय ते केटला काळमान सुधी वापरी शकाय ते बतावे छे

१. धान्यो जेवा के घउ, बाजरी प्रमुख सचित्त कहेवाय छे, जे अमुक वखत पछी अचित्त थाय छे, तेनु वर्णन श्राद्धविधि प्रमुख ग्रथोथी जाणी लेवु मेथी पण धान्य छे ते उपयोग राखवो पहेले वा योनो लोट थया पछी ते क्यारे अचित्त थाय छे वगेरे
। १८ खुाइ गयु छे तेथी ज्यां सुधी सचित्त छे त्या सुधी
चोमासाना प्रणवनी दाळ अचित्त छे, तेथी तेनो आटो
सुद ७ थी १५
जाणवी.
अढाइ श्र वर्जनीय छे तेथी तेमज मिश्र (स-
री वपराय नहि
छे ते पण वर्जवीज जोइए
रेतीमा भुजेल होय तो बरो-

५ धाणा, जीरु, सुवा, अजमो प्रमुख खांडेलुं होय के अग्नि शस्त्र लागवाथी अचित्त थाय ते वपराय, पण एमने एम वापरी न शकाय तथा छाश करवादिकमां नाखेल सचित्त जीरुं प्रासुक थतु नथी.

(हीरप्रश्ने)

३ वरीयाळी पण सचित्तमाज कहेवाय छे, केमके जे चीजो वाव्या थकी उगे छे ते सचित्त कहेवाय छे, तेथी सुकी वरीयाळी पण शेकेली होय तोज वापरवी

७. मीठु (लवण-निमक) सचित्त छे, भूमिकायमा लख्या मुजब ते अचित्त थाय, तो ते मुजब अचित्त करेलु मीठु वापरी शकाय.

८. सिंधव जे रातो आवे छे ते सचित्तछे. फक्त सफेद सिंधव अचित्त छे

९. चाक, खडी प्रमुख सचित्त छे. चाक जो के खावामां नथी आवतो, पण दांतनुं मजन बनाववामां वपराय छे तो प्रथम कह्या मुजब अचित्त करीने बनावेल होय तो वापरी शकाय. केम्फर चॉक वगेरे पण जे आवे छे ते केम बनावता हशे ते कही शकाय नहि, जेथी सचित्तना त्यागीए आवा संशयवाळी वस्तु वापरवी नहि.

१०. चलित रसवाळी वस्तुओ जे "चलितरस" नी सूचनाओमा लखी छे ते विगेरे महा सचित्त छे, एटले ते अभक्ष्यज छे, कारण तेमां तो बेइंद्रिय जीवनी उत्पत्ति थाय छे, तेथी ते चीजो नज खवाय. तेवीज रीते बोळ अथाणानु समजवु अहिं लखवानो आशय एटलोज छे के ते वस्तुओ पण सचित्त अथवा महा सचित्त एटले अभक्ष्य छे, जेथी भक्ष्य सचित्तनो त्याग होय तेने अभक्ष्य सचित्तनो प्रथम त्याग थयो अने होवो जोइए

११ पाणी त्रण उकाळावाळुज अचित्त छे, जेथी बरोबर न थयु होय तेनो उपयोग राखवो वळी ते ज्यारे श्वास वगेरेमा ठारवामा आवे छे त्यारे तेनी उपर बारीक कपडानु ढाकण जोइए, नहिंतर तेमा माखी प्रमुख पडवाथी मरी जाय छे, तेथी बहु दोषो लागे माटे प्रसंगोपात आ सूचना लखी छे, जे खास ख्यालमां राखवी चोमासामा उकाळेला पाणीनो काळ त्रण पहोरनो छे ए खास लक्षमां राखवु

१२ अनेक जातना सरबतो, सोडा प्रमुख, गुलाबजळ, केवडानु जळ न वापरवु. ते वापरवाथी अनेक प्रकारना दोष साथे गुलाबजळ प्रमुखमा जीव उत्पत्तिनो संभव होवाथी ते सर्वे वर्जनीय छे

१३ इंग्रेजी मवाही दवा मुख्यपणे वापरवीज नहिं; तो पण अत्यत रोगादिक कारणे केटलाएक वापरे छे, पण तेमां अचित पाणी खास जोइए एनु प्रायश्चित्त साजा थवाथी लेवु जोइए

१४. बरफ, करा प्रमुख सचित्त (मूळ अभक्ष्य) छे तेथी न ज वपराय

१५ लीला दातण वावळ प्रमुख हरकोइ जातना सचित्त छे, तेथी तेनो सर्वथा त्याग होवो जोइए

१६. नागरवेलनां पान, लींबडा, तुळशी, एलची प्रमुखना पान सचित्त होवाथी नज वपराय, पण लींबडाना पान कढी प्रमुखमा नांखेल होय के नागरवेलनु पान घीप्रमुख वनु करवामां नांरवु होय तो ते चीज अचित्त थयेथी वपराय छे.

१७. लींबडा, आंबा प्रमुखना महोर तथा गुलाब प्रमुखना फुल सचित्त छे, ते न वपराय गुलाबना फुल मिठाइ उपर छांटे छे ते अचित्त थयेथी वपराय.

१८ चटणी जे कोथमीर फोदीनानी करे छे तेमा ते वनस्पति तथा निमक बन्ने जो के सचित छे, पण ते घूटायाथी ते वनस्पति अने निमकने अन्योन्य एक बीजानु शस्त्र लागवाथी बे घडी पछी अचित्त थाय छे, माटे सचित्त त्यागीने बे घडी वाद वापरी शकाय.

१९ सभारा के अथाणां (जे त्रण दिवस वापरी शकाय ते) नु पण प्रायः उपर मुजब अन्योन्यना शस्त्र लागवाथी बे घडी बाद वपराय; पण गुवार प्रमुखनु अथाणु अचित्त थतां वखत लागतो हशे, कारण तेनी अंदर मींज छे तेथी मीठानुं शस्त्र जल्दी न लागे.

२० दाडम, जमरुख ए बीजो सचित्त छे, अने बे घडी बाद पण अचित्त न थाय, तेथी तेनो सर्वथा त्याग[1] होवो जोइए. एटले के सचित्त न वपराय, पण अग्निना शस्त्रथी अचित्त (तेनु शाक करे छे) करेल वपराय जमरुखने अग्नि लागवाथी पण मींज कठोर रहे छे तेथी मिश्रतानो दोष लागे

२१ शेलडी तथा शेतुर सचित्त छे, तेथी तेनो सर्वथा त्याग होवो जोइए शेलडीनो रस काढ्या पछी बे घडीए अचित्त थाय.

२२ सीताफळनो सचित्त त्यागीने अवश्य त्याग होय, वळी ते अचित्त पण थवा संभव नथी, कारणके तेमांथी ठळीया जुदा पडी शके नहि तेमज जांबु, रायण, बोर, खलेला, लीलीबदाम, लीली-द्राक्ष प्रमुखमांथी ठळीया बी काढ्या वगरज वपराय छे ते सर्वे न वापरी शकाय

---

१ सर्वथा त्यागना बे भेद छे–एक सचित्त सर्वथा त्याग, बीजो वस्तु सर्वथा त्याग, एटले जेने सचित्त सर्वथा त्याग छे तेने अग्नि प्रमुखथी अचित्त करेल वपराय, पण जेने दाडम, जमरुख व-स्तुनोज त्याग छे तेने तो सचित्त के अचित काइ न वपराय आ स्फुट करवानु कारण एटलुज के अर्थनो अनर्थ न थाय, केमके आपणामां वक्रता अने जडताए बहु वास कर्यो छे, तेथीज दरेक बाबत स्वमतिए धारवानो निषेध छे माटे गुरुगमथी धारवु, नहितर अनेक प्रकारे एवा अनर्थ थवा संभळाय छे

२३ केळां बी सहित पाकां आवे छे ते सचित्त छे एवो निर्धार करी शकातो नथी, तोपण तेवां बीजवाळां केळा कलकत्तादिक तरफ थाय छे ते वापरवा नहि, सोनेरी केळां छाल उतार्याथी तरत अचित्त छे

२४ पाका चीभडा, सकरटेटीमांथी जी एकेएक उपयोग पूर्वक काढ्या पछी ने घडीए वापरी शकाय.

२५. काकडीमाथी बी जुदां पडी शके नहि, तेथी ते सचित न खवाय पण शाक प्रमुख अचित्त करेल वपराय.

२६ केरीनो रस काढीने गोटली काढ्या बाद बे घडीए लेवानो व्यवहार छे.

२७. श्रीफळ (नाळीयर) नु पाणी के टोपरु तेमांथी बी काढ्या पछी बे घडीए वपराय जे नोफा आवे छे तेमां पाणी होय छे ते पण जुदा वासणमा काढ्या पछी बे घडीए लेवाय

२८. पाकी आंवली (जेनुं आवलवाणु करे छे), खारेक अने खजुर (सुको) मांथी ठळीया काढ्या पछी बे घडीए वापरी शकाय.

२९. सोपारी आखी भांग्या पछी ने [1]बदाम अने अखरो-

---

१ ते स्वदेशमां थयेला सचित्त समचे छे, अने बहु दूर देशथी आवेल होय तो अचित्त होइ शके छे.

टना मींज काढ्या पछी बे घडीए लेवाय. केटलीक वस्तु तरत अचित्त पण थइ जाय छे, परतु आपणे ते जाणी शकीए नहि जेथी बे घडी बाद वापरवु उचित छे

३०. पीस्ता तथा जायफळ तेना छोडामाथी अहार काढया पछी बे घडीए वपराय

३१ काळी तथा राती मोटी द्राक्ष जेमा बी होय छे ते बी काढ्या पछी बे घडीए वपराय

३२. जरदालुनो ठळीयो काढ्या पछी बे घडीए वापरी शकाय, तेम तेमांथी नीकळवा ठळीआमा जे बदाम होय छे ते पण भाग्या पछी बे घडीए खवाय

३३ झाड उपरथी तुरतनो उतारल गुदर ते घडी पछी अचित्त थाय.

३४ सुका अजीर जेमा बी घणां होय छे ते जुदा पडतां नथी, तेथी सचित्त त्यागीने ते वस्तुनो सर्वथा त्याग होवो जोइए

३५ सचित्त त्यागीने कोइवार पाणीनो जोगवाइना अभावे सचित्त पाणीमां साकर के राख नाखवाथी ते पाणी बे घडी पछी अचित्त थाय पण श्रीपालीताणामां तळाटी उपर जे साकरना पाणी करे छे ते साभळवा मुजब एठा प्याला बोळवाथी तेमां सम्मूर्छिम जीवनी उत्पत्ति थाय छे, तो तेवु जळ के साकरनु

पाणी सामान्य श्रावकने पीवु न जोइए. त्यारे सचित्त त्यागीने केम पीवाय ! तेवीज रीते केटलेक ठेकाणे चा करे छे त्यां डवाडब थाय छे ते पण अनुचित छे.

आ उपर लखेली सचित्त आश्री सूचनाओ सचित्त त्यागीने खास उपयोगी छे वळी बीजाओने पण एकासणा प्रमुखनां पच्चक्खाणमां सचित्तनो त्याग होय छे तेथी समजवानी जरूर छे जे बाबत उपयोगमां आवी ते दर्शावी छे, ते शिवाय गुरुगमथी स्फुट रीते समजवु जोइए

उपर मुजब समजी विचारी तदनुसार वर्तवा खास उपयोग राखवो. बावीश अभक्ष्यनो श्रीजिनेश्वर भगवते निषेध कर्यो छे ते तथा बीजी अभक्ष्य अनाचरणीयनो त्याग करवो, तथा वनस्पति प्रमुखनो जरुर नियम करवो नियम–प्रतिज्ञा करवाथीज विरतिपणु थाय छे, अने विरतिनु फळ घणु मोटु छे वळी कह्यु छे के " ज्ञानस्य फल विरतिः " ज्ञान (भण्या–जाणपणा) नु फळ विरति छे, अने जो तेम न थाय तो फक्त ज्ञान (जाणवा)मात्रथी शु ? ते तो ज्यारे रहेणीमां आवे त्यारे सारभूत छे. चिदानदजी महाराजे पण कह्यु छे जे.—

शुक रामको नाम वखाणे, नवि परमारथ तस जाणे,
या विध भणी वेद सुणावे, पण अकल कला नवि पावे॥
कथणी कथे सब कोइ, रहणी अति दुर्लभ होइ॥१॥

पट त्रिश प्रकारे रसोइ, मुख गणता तृप्ति न होइ,
शिशु नाम नहि तस लेवे, रस स्वादत सुख अति लेवे॥
॥ कथणी ॥ २ ॥

जब रहणीका घर पावे, कथणी तब गिणती आवे,
अब चिदानद इम जोइ, रहणीकी सेज रहे सोइ ॥
॥ कथणी ॥ ३ ॥

भावार्थ एवो छे के—कथणी ज्यारे रहेणी रूपे थाय त्यारेज तनो उत्तम रस प्राप्त थाय छे, अन्यथा छत्रीश प्रकारनी रसोइना नाम मात्र गणवाथी क्षुधा शांत थती नथी. तेवीज रीते ज्ञान संपादन करीने ते यथाप्रकारे अमलमा मूकवु जोइए. ते विरतिवंत क्रियारुची जीव शुक्लपक्षी कहेवाय. मन, वचन, कायाना व्यापार चालता न होय तोपण अविरतिथी निगोदिया विगेरे जीवोनी माफक घणो कर्मबंध थाय छे कह्यु छे के " जे भव्यप्राणि भावथी विरतिनो (देश अथवा सर्वथी) अंगीकार करे छे तेओनी विरति करवाने असमर्थ एवा देवता घणी प्रशसा करे छे " एकेंद्रिय जीवो कवलाहार बिल्कुल करता नथी, तो पण उपवासनु फल तेमने मळतु नथी, ए अविरतिनु कारण जाणवु. एकेन्द्रिय जीवो मन वचन ने कायाथी सावद्य व्यापार करता नथी तोपण तेमने उत्कृष्टथी अनंता काळ सुधी ते गतिमा रहेवु पडे छे, अने जो परभवे विरति करी होत तो तिर्यंच जीवो आ भवमा चाबुक, अंकुश, परोणानी तीक्ष्ण आरो इत्यादिना प्रहार तथा वध, बंधन,

मारण, परवशपणु इत्यादि सेंकडो दु:ख न पामत. हे मुज्ञो! अविरतिपणाथी महादुःखो परवशपणे तिर्यंच नारकी विगेरे भवोमां भोगववां पडे छे, तेथी विरतिने अंगीकार करो! नजीवा कष्टथी पाळी शकाय तेवा नियमो अति फळने आपनारां थाय छे, अने ते कष्ट–दु:ख (अज्ञानीने वाह्यथी भासे छे) नथी, पण परिणामे सुखना हेतु होवाथी (नियमो) महा सुखज छे; जेथी सकाम निर्जरा थाय छे. अने जो ते नहि अगीकार करीए तो परभवे तिर्यंच तथा नारकीओमां परमाधार्मी विगेरे क्रूर जनोथी पमाडाती महा आकरी वेदनाओ परवशपणे भोगववी पडशे! जेथी विशेष हवे शु? पण टुंकामां प्राणान्त कष्टे पण तीर्थंकर महाराजे निषेधेली वस्तुओनु भक्षण करवु नहि, अने तेमा पण अमुक शेरनी छुट–आगार विगेरे शिथिलपणानो त्याग करी बावीश अभक्ष्यनो सर्वथा त्याग अने बीजा पण अनाचरणीय–अभक्ष्यनो पण अवश्य त्यागनो नियम करवो.

हवे नियम (प्रतिज्ञा–व्रत) केम अंगीकार करवो तथा पाळवो? ते जणावे छे–व्रतने अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार अने अनाचार एम चार प्रकारे दोष लागे छे. जेम के कोइए चोविहार (चार आहारनो त्याग) कर्यो होय अने अति तृषा लागे त्यारे पाणी पीवानी मात्र इच्छा करे ते अतिक्रम, जे स्थानके होय ते स्थानकथी पाणी पीवाना स्थळे जाय ते व्यतिक्रम दोष लागे; पाणी पीवा पाणीना वासणमाथी प्यालो भरी — आगळ धरे पण पीये नहि

त्यां सुधी अतिचार लागे, अने ज्यारे ते निडरपणे पाणी पीये त्यारे तेणे अनाचार (महा दोष-पाप) सेव्यो कहेवाय त्यारे तो तेने परभवनी पण बीक न रही, पण ज्यारे परमाधामीओ उना धगधगता सीसाना रस बलात्कारे तेने पाय छे त्यारे अत्यंत त्रासजनक वेदना भोगवे छे, अने तेमांथी छुटवा प्रयास करे छे पण करेलां कर्म भोगव्या वगर ते विचारो क्याथी मुक्त थाय ? एम समजी अतिक्रम दोष पण न लागे तेवा भवभीरु थइ व्रत पाळवु धन्य छे व्रत पाळवामां दृढ एवा सिंह श्रेष्ठिने के जेणे दिशिनो अंगीकार करेलो नियम अति विकट स्थितिमा पण भग नहि करतां अनशन करी एक मासमा केवळज्ञान उपार्जी मोक्षगति मेळवी। शरीर (पुद्गल) के जेनो स्वभाव सडन, पडन अने विध्वस थवानो छे, तेना उपर मोह न करता उभयलोकथी सुखनु भाजन एवु जे व्रत तेने प्राण करता पण वधारे प्रिय गणवु अग्निमा प्रवेश करवो सारो पण अगीकार करेला व्रतनो कदि भग न करवो (Sacrifice money, even life rather than principle) माटे सत्य प्रतिज्ञावत थवु सुज्ञेषु किंबहुना ?

श्रावके घरमा दश ठेकाणे चदरवा अवश्य बाधवा जोइए

१ चूला उपर, २ पाणीयारा उपर, ३ भोजन करवाना स्थान उपर, ४ घटी उपर, ५ खाडणीया उपर, ६ वलोवणा (छाश

रवाना स्थान) उपर, ७ सुवाना विछाना पर, ८ न्हावाने ठेकाणे, . सामायिक प्रमुख धर्म क्रिया करवाने स्थाने (पौषधशाळामां) अने १० देरासरमा.

ए रीते दश चदरवा बाधवा, जेमांना प्रथमना छ चदरवा भोजन आश्री छे तेज कही आपे छे के भोजनना सबंधमा बहु जयणा पूर्वक वर्तवानी आवश्यकता छे तेथी शारीरिक तन्दुरस्तिनो घणो लाभ छे, अने शरीरनु जो आरोग्यपणु होय तो सारी रीते धर्मसाधन वगेरे करी शकाय, तेथी हवे विशेष स्फुट करवा जेवु नथी.

वळी सात गरणा राखवा जोइए:—

१ पाणी गळवानु, २ घी गरणी, ३ तेल गरणी, ४ दूध गळवानु ५ छाश गाळवानु, ६ उकाळेलु अचित्त पाणी गळवानु, ७ आटो चाळवानु (आंक).

ए मुजब सात गरणा जरुर राखवा, तेथी कीडी, कसारी, मच्छर, माखी वगेरे त्रस जीवना पुद्गलो होय तो गळवाथी नीकळी जाय छे पाणी अने आटो गळवाथी त्रस जीवनु रक्षण थाय छे. पाणी माटे मजबूत पाणकोरानु के तेवु घट्ट गरणु राखवु. आ प्रमाणे करनारा भव्य प्राणिओने प्रत्यक्ष तेनो लाभ अनुभवाय छे. पाणी पहोरे पहोरे गळवु जोइए, ते सबधमां कुमारपाळ महाराजनुं सुचरित्र वारवार मनन करवु तथा तदनुसार जेटलुं बने तेटलु वर्तन राखवु योग्य छे एवा आत्मार्थी परमार्थी पुरुषोनी बलिहारी छे! तेज धन्यवत छे ... छे, तेज महत छे, तेज परम सुखी

छे, वळी तेज उत्तम भाग्यशाळी छे के जेना हृदयपटने विषे दया-जयणारूपी चित्रामण चित्राइ रहेलु छे जैनशासन जयवतु वर्तो !

हवे केवा भाजनमा तथा केवी रीते भोजन करवु ते संक्षेपथी कहीए छीए-जे दोषो रात्री भोजनमा छे तेवाज दोषो अधारावाळी जग्यामां खावा पीवाथी लागे अने ते ते दोष साकडा मोढाना भाजन (जेमा नजर पहोंचे नहि एवा शीशो लोटाआदि) वापरवाथी लागे छे

समयने अनुसरीने कासाना अथवा कल्इवाळा तावा पीतळना वासण सामान्य प्रकारे ठीक गणाय छे पण अत्यारे आ कानी दुनियानो वेग विचित्र प्रकारनो थतो जाय छे, कोण जाणे केवा प्रकारनो पवन भरायो छे ते समजी शकातु नथी के आपणा पूज्य वडीलश्रीओनी पद्धतिओ उपर तिरस्कारनी दृष्टिए जोता, ते उवेखीने हवे टीन (इनेमल) लोढाना वासणोनो आदर करता जाय छे के जे वासणो कोइ पण जैन अगर हिंदु वधुए वापरवा उचित नथी मुबइ समाचार वगेरे उपरथी जाणवामा आवल छे के तेने ग्लेज करवामा इडानो रस वपराय छे, अने जीवता बळदोने मारी तेना आतरडाओनो प्रवाही भाग पण वापरे छे, तेथी ते खरेखर त्रासजनक छे, माटे ते वासणोनो शीघ्र त्याग करवो जोइए. आवी प्रथम सस्ती सुशोभित चीजो परिणामे बहु मोंघी ने नकामी थइ पडे छे अने आ प्रमाणे आपणे आवी चीजो वापरवाथी अल्प वखतमां केवी निर्धन अवस्थाए पहों-

न्या छीए। आ वासणो खरीद कर्या पछी वपराये तेनी काइ पण किंमत उपजी शके नहि, अने कासा के त्रांबा पीत्तळना वासणोनी फुटया पछी पण गमे त्यारे तेना (मूळ किंमतना) अडधा भागना के तेथी विशेष पण नाणां अवश्य उपजे छे अहो! आपणा वडीलो—अगम बुद्धिवंतो व्यवहार अने धर्म कार्यमा केवा कुशळ हता, अने हवे आपणे केवा थया! जे तेमना वचनोनो अनादर करी स्वेच्छाए वर्ती पोताने डाह्या मानी पूर्वोपार्जित अगणित मूडी गुमावी बेठा छीए, अने शाणी सरकार के जेओ आपणु कासु खरीदीने तेना पैसा—सिकाओ पाडे छे, हवे तो आपणने "विनाशकाळे विपरीत बुद्धि" अनुसार आपणु सार सुवर्ण जेवु छे तेने लोढु मानीने ते वेची जे लोढु छे तेने सुवर्ण सम मानी हर्षथी (तेना केटलाक मिथ्या फायदाओ कल्पी) ग्रहीए छीए, पण केवी दयाजनक स्थितिमा आपणे पोताने जोइए छीए, ते आपणाज कर्मनो दोष छे खरे हजु पण आपणे चेतशु नहि तो तेथी पण नठारे खराब अवस्थाए पहोंचशु, माटे हे सुज्ञ बंधुओ चेतो! एवा मलिन वासणोनो त्याग करीने कासा अथवा पीतळना भाजनमाज आहार करो. पीतळना रसोइ तथा भोजन करवाना सर्व वासणने अवश्य कलइ होवीज जोइए. तेमज पनराळा तथा पडीआने आश्री त्रस स्थावर जीवो होय छे, तेथी तेवा के केळप्रमुखना पानमा पण भोजन न करवु अन्य दर्शनीने त्यां खास उपयोग राखवो. दिवस छतां [illegible] मां जमवु नहि. माटे दिवसे ज्यां

सारु अजवाळु आवतु होय त्या पहोळा स्वच्छ वासणमा भक्ष्याभ क्ष्यनो विवेक पूर्वक विचार करी स्थिर चित्त तथा प्राय' मौनपणेज भोजन करव एठे मोढे वात करवाथी एक तो ज्ञानावणीय कर्मनो बंध थाय, बीजु वातोमा ध्यान जवाथी भोजनमां माखी प्रमुख त्रस जीव पडवाथी ते जीवनो प्राण जाय, वळी माखी खावामा आवी जाय तो वमन थाय, वळी अन्न वखाणवु वखोडवु कहवाथी दोष लागे, माटे मौनपणे जमवु कदाच बोलवानी जरर जणाय तो पाणीथी मुख शुद्धि करीने बोलवु भोजनमा कोइपण सजीव के निर्जीवनु कलेवर आवी न जाय तेम स्थिरचित्त राखी चक्षुवडे बराबर तपास करी उपयोग पूर्वक हित मित (पथ्य अने प्रमाणो-पेत) भोजन करवु [1]भोजन करती वस्त्रानु पवीत्रु (धोतायु) शुद्ध होवु जोइए, तथा हाथ पगनी शुद्धी करवी युक्त छे, तेमां पण जेओ नित्य प्रभुनी पूजा करनारा छे तणे राखवडे बराबर हस्तशुद्धि करवी कारण के कसरना डाघ होय के घीवाळा हाथ होय तेथी जो बराबर शुद्धि न थाय तो केशर के घीनो सूक्ष्म अंश पेटमा

---

[1] आपणा देशमा जे भेगा बेसीने जमवानी प्रवृत्ति छे ते युक्त नथी, कमके कोइने खस, स्वरज, गुमडादि रोग होय तेथी भेगा जमनारने चेप लागे, वळी एक बीजानु एठु खावु ते पण ठीक नथी, एठवाड घणो वधी पडे, जीवोत्पत्ति बहु थाय वगेरे घणा दोषो छे

जवाथी देवद्रव्यना[१] भक्षणनो महा दोष लागे, माटे शुद्धि बराबर करवी (प्रसंगोपात लखवानु जे कोइ वखते हाथ त्रांबामा जे सचित माटी वपराय छे तेथी बहु दोष लागे, माटे राख प्रमुख साधनथी हस्तशुद्धि करवी सारी छे अगाशीमा के माथे ढांकण न होय तेवा उघाडा स्थानमा पण आहार करवो नहि. घी, गोळ, दूध, दहिं, छाश, दाळ, शाक, पाणी प्रमुखना भाजन मुद्दल भण-चार पण उघाडा न मूकवां श्रावके प्रथम तो जोइए ते करता ओ-छुज भोजन लेवु, अथवा जरुर जेटलुज लेवु, अने एठु मुद्दल न मूकतां थाळी वाटका प्रमुख धोइने पी जवां जोइए, थाळी धोइने पीवाथी आयवीलनु फळ मळे छे आवी रीते नित्य प्रथम शुद्धमान आहार[२] निर्ग्रंथ मुनिमहाराजने वहोराव्या बाद उपयोग पूर्वक भोजन करवाथी ते अमृत समान फळ आपे, नहितर तेना विषसमान फळो अवश्य चाखवा पडे ते निःसंदेह जाणवु. एम सद्दहि भव्य बधुओ ! अष्टप्रवचन माताने हृदयमा स्थान आपी आ मनुष्य जन्मनु सार्थक करो ! जेथी अष्टकर्मनु विदारण करी अल्प भवोमां शिवसपदा-सुखडां पामीए !

---

१ देवद्रव्य ज्ञानद्रव्य प्रमुखनु भक्षण करनारनु अन्न पाणी कदि लेवु नहि.

२ शुद्धमान आहारमा प्रथम तो न्यायोपार्जित द्रव्यनु भोजन जोइए. अन्यायथी मेळवेल धननो आहार तुच्छ छे, तेथी नीतिने न्याय पूर्वक व्यापारादिकमाथी मेळवेलु धन होय तेनुज उत्तम अने शुद्ध भोजन छे, तेवो तथा श्रावकथी लागता दोषो टाळीने जे

जमेला—एठा तथा रसोडना भाजनो कलाकोना कलाको पडया रहेवाथी तेमा त्रस जीवो पडी तेना प्रिय प्राण खुवे छे, तथा एठा वासणोमा बे घडी लगभगमा समूर्छिम जीवोनी उत्पत्ति थाय छे, जेथी तुरतज उटकी नाखवा के नोकर पासे उटकाववा पाणी गळाववु चूलो सलुकवो, धान्यपान समारवु, इंधण (लाकडा) छाणा पुजवा वगेरे काम नोकर के रसोइयाने विश्वासे मूकवाथी अनेक जीवोनी नित्य हानि थइ जाय, तेथी गृहिणी (स्त्री) ए जाते जे करवा जेवु होय ते बनी शके तो प्रमाद मूकी पोते करवु, अने जे नोकर पासे करावबु होय ते पण बने त्या सुधी पासे उभा रही जयणा पूर्वक कराववु, अने नोकरोने पण शिखामण आपी जेम यत्नाथी प्रवर्ताय तेमज वर्तवु उचित छे सु ज्ञेषु किंबहुना ?

निर्दोष आहार वहोराववो तेज शुद्धमान आहार छे. तेवीज रीते न्यायोपार्जित अल्प मूडीमां पुणिया श्रावक एक दिवस पोते उपवास करता अने बीजे दिवस तेनी स्त्री उपवास करती, अने तेम करीने दररोज एक साधर्मी भाइनी भक्ति करता हता आपणे पण तेवीज रीते न्यायपूर्वक द्रव्य मेळववु उचित छे, नहितर कुडकपट करी अन्याय मार्गथी मेळवेल द्रव्य अहीं मूकी जइ हाय द्रव्य ! हाय द्रव्य ! करता मृत्यु पामी तेना फळ भोगववा पडशे अन्याय अनीति ज्या त्या सर्वत्र प्रसरी रही छे, कोइ विरला न्यायमार्गे चालनारा हशे तेनु अनुकरण थाय तो उत्तम छे

सुज्ञ व्हेनोने खास ध्यानमां लेवाजोग सूचनाओ.

जेम राज्यमा मत्रीनु प्रधानपणुं छे, तेम घर मध्ये स्त्रीनुं प्रधानपणुं छे; अने तेथी स्त्रीओए आ "अभक्ष्य अनंतकाय" नु वर्णन मननपूर्वक वाचवा वर्तवानी आवश्यकता छे सुज्ञ श्राविकाओ तमेज घररूपी राज्य सुधारवा धारी शको तो बने, नहितर पुरुषथी बनवु मुश्केल छे, केमके पुरुष आखो दिवस तेना व्यापार धधामा वींटायलोज प्रायः होय, तेथी नीचे लखेल सूचनाओ ध्यानमा लइ ते प्रमाणे वर्तन राखशो तो तमे स्व तथा परना कल्याणना कारणिक थशो.

१ सूर्यना किरण फुट्यां पहला चूलानो आरभ करवो नहि प्रथम सर्व जग्याएथी काजो लीधा बाद तमाम कामनो आरंभ करवो

२. सवारमा पहेला पुजणीथी दररोज दरेक ठाम-वासण चूलो वगेरे यत्नाथी पुजवा, अने ते जीवोने कोरी जग्याए मूकवा के ज्या मनुष्य जनावर प्रमुखनो हालचाल न होय लाकडा, [1]छाणां, कोयला, सगडी वगेरे रसोइना साधनो बरोबर पुज्या

---

१ छाणां मांगी नाखीने वापरवा, चोमासामां छाणां के नाळीयेरीना छालां बाळवा नहि, केमके तेमा बहु त्रस जीवो थइ जाय छे

पछी उपयोगमा लेवा, तेमां पण चोमासानी ऋतुमा बे त्रण वखत खूब सभाळथी पुजवा, कारण के चोमासामा जीवनी बहु उत्पत्ति थाय छे लाकडामा कोइ जातमा अंदर मोटा जीव थाय छे, जे अंदरथी लाकडु कोरी कोरीने लोट जेवो भुको काढे छे, तो ते उपरथी लाकडामा तेवा जीवनी उत्पत्ति छे एम जरुर जाणवु वळी ते खखेरता छता पण नीकळी शकता नथी, अने तेथी ते जीवो अग्निमा बळी भस्म थाय छे, तेवा लाकडा एककोरे मुकी देवा अने ते बाबत बहु उपयोग राखवो

३ रसोडानां ठाम वासण तथा मशालो, घी, तेल, दूध, दहिं, रोटला, रोटलीना तथा पाणी एठवाड वगेरेनां वासणो उघाडां मुद्दल राखवां नहि एठवाड बे घडी पहेला जानवरने पाइ देवो के ताप पडतो होय तेवी जग्यामा छांटी देवो वगेरे योग्य व्यवस्था करवो, नहितर तेमा असख्य सम्मूर्च्छिम जीव उपजे

४ मीठु मरचु, वगेरे मशालो राखवाना घाटला (लाकडाना खानावाळा) बहु स्वच्छ राखवा, अने घाटलाओमा राखवा करता मजबूत बुचवाळी शीशीओमा राखवा युक्त छे, कारण के चोमासामा हवा लागवाथी मरचांमा तद्वर्णी लाल सूक्ष्म इयळो पडे छे, तथा कुंथुआ, लीलफुग प्रमुख थाय छे, अने घाटलाओमा त्रस जीव पण चडी जाय छे, जे पछी रसोडमां उतावळे जोया तपास्या वगर वापरवाथी आवा प्राणीओनो विनाश थइ जाय छे मशाला दाळ शाकमा, साकर चीनी प्रमुख चा दूधमां, घी तेल

अमुक दाळ शाक के रोटलीमां वापरता पहेलां खूब बारिकीथी तपास करवो के तेमां सजीव के निर्जीवनु कलेवर तो नथी, नहि तर अल्प प्रमादे मोटो अनर्थ अहर्निश थाय छे

५ साजे सूर्यास्त पहेला चूलो ठारी नाखवो, ते पण सचित्त (काचु) पाणी छाटोने ठारवो नहि, कारण तेथी अग्नि तथा पाणीना जीवोने अतितीव्र किलामणा थइ तेनो नाश थाय छे. वाशी सुद्दल न राखवु, नानां छोकराओ होय तो सवारमा ताजु करी आपवु, जेथी शारीरिक अने धार्मिक एम बे मोटा लाभ छे. नानां बच्चाओने प्रथमथीज अभक्ष्य-अनंतकाय माटे उपदेश करता रहेवु, जेथी तेओ मोटी उम्मरे तेवी चीजोथी दूर रहे कुमळी डाळी जेम वाळवी होय तेम वळी शके छे, पण तेज थड थइ गया पछी वळे नहि, तेथी शिशुवयना बाळकोनो स्वार्थ सुधारवो के बगाडवो ते तेनी माता उपर विशेष आधार राखे छे.

६ जो तमे श्रीमंत हशो तो ते पण पूर्व पुन्यना उदयथीज छो, तो नोकर वगेरेने हुकम करी जे काम करावबु तेमां विशेष विचार करवो, जे कार्य पोताथी जयणाथी थाय ते नोकर कदिपण न करी शके नोकरने शाक समारवा आप्यु होय तो शाकनी साथे बीजा जीवोनु पण छेदन करी नाखे, पाणी गळे ते पण घडा विनानु, तथा तेनो सखारो नीचे नाखी दे के खारा पाणीनो सखारो मीठा पाणीमा नांखी आवे के मीठा पाणीनो सखारो खारा पाणीमां नाखी आवे, पाणीना एठा वासण गोळामा बोळे. वळी

तमे नोकर उपर विश्वास मुकी तमारा जमेला एठा वासणो एमने एम मूकी हींडोळा उपर के सुखशय्यामा आराम करो, पछवाडे वे कलाक सुधी ते वासणो पडया रह, अने तेमा घणोधर जीवो पडी तरफडीया मारी प्राण छोडे खरी रीत श्रावकनो एज धर्म छे के थाळी वगेरे धोइने पी जवु जोइए, कारण तेमा वे घडीमा अस रव्य जीव उपजे वळी प्रमादने लीधे पाणीयारा आगळ गोळानी आसपास लील पण थइ जाय, आवा अनेक दोषो आपणा प्रमादथी थाय छे जो तमाराथी आवु काम थवु अशक्य होय तो नोकर पासे उभा रही यत्नाथी करावबु ते पण योग्य छे, नहिंतर पुण्यरुपी मुडी व्याज सुद्धा खाइ जवाना, त्यारे परभवे क्याथी सुखो मळशे अजरामर सुख लेवानो अवसर आव्यो छे छता शामाटे विषय कषाय ने विकथामा गरकाव थइ जाओ छो ! प्रमाद मूको अने मनुष्य जन्मनु सार्थक करो ! दुष्ट प्रमादज दुर्गतिने विषे लइ जवामा मोटो तस्कर समान छे, जेथी चेतो !

७. चार महा विगय्नो अवश्य त्याग करो आइसक्रीम वरफ विगेरे उपरथी ममता छोडो, तमारा बाळकोने अफीण (बाळा गोळी) ना व्यसन छोडावो, काची माटी, काचा मीठानो त्याग करो–प्रमाद मूकी अचित मीठु तैयार करी वापरो रात्रिभोजननो तमे त्याग करो जेथी तमारा पुत्र वगेरे तमारु अनुकरण करे, तल, खसखसनो त्याग करो बोळ अथाणा वगेरना स्वाद मूको–मूकावो (यथार्थ रीते जोता स्त्रीओज आवी अनेक

चीजो विचित्र प्रकार बनावी पुरुषोने रस इंद्रियने आधीन करे छे) विदळनो खास उपयोग राखो, कारण के तेमा तमारु प्रधानपणु छे. कदाच पुरुप विरतिवंत न होय तोपण तमे तेने आवा दोपमाथी अटकावी शको छो, वेंगण (रींगणा) प्रमुख शाकनो भक्षणो करवानो त्याग करो चणीबोर खावानो त्याग करो विकथानो पण त्याग करो, " क्षण लाखेणो जाय " जरा विचारो, धर्मकार्यमा प्रवृत्त थाव; चलित रस, वासी माटे बहु उपयोग राखो, लोट, मुरब्बो, अथाणा, सेव, वडी, पापड प्रमुख विगेरे माटे लखेली हकीकत खास ध्यानमा ल्यो ने ते प्रमाणे वर्तो, तथा जेने उपयोग न होय तेने नम्रताथी कहो-शीखवो अनंतकायनो त्याग करो. आ मनुष्य जन्म सफल करवा माटे लीली हळदर, आदु, लसण वगेरे गमे ते रोग छतां पण मूको आपणो अनादिनो कर्मरूपी रोग टळशे त्यारेज खरु शाश्वतसुख पामशु फागण चोमासु बेठा पहेला तेल आठ मास माटे सारा ठाममा भरावी राखो, अशाड चोमासामा खाड, काजु, बदाम, पस्ता. द्राक्ष वगेरेनो उपयोग बध करो, सुखवणी अशाड चोमासा पहेला वापरी नांखो अने त्यारथी कार्तिक चोमासा पर्यंत तेनो त्याग करो लीलो वास, नीली, वीला, केरडा, नागरवेलना पानने जलांजलि आपो, परदेशी मेंदो, परमुटीनो लोट के रवो बजारमाथी मगाववो बध करो भले जरा तस्दी लेजो पण तेथी अनेक जीवोनो आशीर्वाद मळशे पाणी चीनी माफक वापरो अने मजबुत गरणावनी दिवसमा त्रण वखत गळवा श्रम उठावशो तो परभवे पसीनाना टीपा नहि

पडे-अर्थात् सुखी थशो ने अनुक्रमे शिव संपदाने पण पामशो विशेष तो तमारा अज्ञानपणामां तमेज वाकेफ हो, तेथी दरेक कार्य उपयोग, विवेक, जयणा पूर्वक करो

८ तिथीने दिवसे दळवु, खांडवु, भरडवु, धोवु, माथु गुथवु, न्हावु, छाश लेवा जवु, गार करवी वगेरे करवु करावदु अनुमोदवु नहि तथा त्रण चोमासानी, बे आंबेलनी ओळीनी तथा पर्युषण पर्वनी एम छ अट्ठाइमां उपर मुजबना कोइ पण आरंभ त्रियोगे (मन, वचन, कायाए) करवा नहि

९ मिथ्यात्व लौकिकपर्व-जेमके दिवासो, रक्षाबंधन, श्राद्ध, नोरता, हुताशनी, संक्रांत, गणेशचोथ, नागपांचम, रांधणछठ, शीलसातम (वाशी खावु), गोकूळआठम, नोळीनवमी, अहवादशमी, भीमअगीयारशी, धनतेरशी, अनंतचौदश, अमावास्या, सोमप्रदोश, सोमवती, बुद्धाष्टमी, दशेरा, तांबुल, बकरी इद प्रमुख पर्वो मिथ्यात्वना हेतु तथा अनर्थ कारक छे, तेथी तेनो त्याग करो, आपणे दुधपाक, बासुंदी, लाडु वगेरे करीने खावाना क्या बीजा दिवसो नथी के तेज दिवसे खावु के उत्तेजन आपवु? आवा मिथ्या आचरणनो त्याग करी आपणो आचार शु छे ते जाणवा-पाळवा उजमाळ थाओ! धन्य छे सुलसा श्राविकाने के जेनु सम्यक्त्व अत्यंत दृढ हतु, जेथी ते श्राविका आवती चोवीसीमां आ भरतक्षेत्रमां पंदरमा श्री निर्मम नामना तीर्थंकर थशे

१० रडवा कूटवाना चाल, दशा, अग्यारमु, वारमु तेरमु, टाडो, वारसु, अगरणी, श्राद्ध, गाळलम विगेरे हानिकारक रिवाजो हवे पडता मूको। तेथी फायदो तो लगारे नथी अने नुकशान तो पारावार थाय छे

सुज्ञ व्हेनो। उपरनी सूचनाओ वाचो विचारी ते मुजब वर्तवा उजमाळ थशो तो अवश्य आपणो सारो उदय थशेज

चौद स्थानकने विषे उपजता समूर्छिम मनुष्य पचेंद्रिय जीवनी प्रमाद दोषथी सेवाती हिंसा–ते संबंधी करेलो उल्लेख समजी विचारी जेम बने तेम उपयोग राखी ते दोषमाथी मुक्त थरा माटे यथाशक्ति वीर्य फोरवदु

१ जेओ नाना गाममा रहे छे, अथवा जेओने नजीकमां नदी, तळाव, दरीया किनारो, जगल, क्षेत्र, छुटी जाड विगेरे भूमिओ होय तेओए ज्या सुधी बने त्या सुधी तेवा स्थानकोने विषे झाडा (वडीनिती) अर्थे जवु, केमके वनेज पायखानामा जाय छे त्या प्रकाशनी खामी, हवानो अभाव, दुर्गंधीना कारणो विगेरेथी शारीरिक आरोग्यताने नुकशान थाय छे, तथा धार्मिक रीते तपा-मता त्या कीडा वगेरे अगणित जीवोनी उत्पत्ति विनाश तथा असं-ख्य समूर्छिम [illegible] द्रय जीवोनी उत्पत्ति विनाश थाय छे। कोइ तेवा [illegible] पेशावपर लघुनीति, वडीनीति

भयंकर रोग पण लागु पडी जाय छे. साधव्नां मूत्र वगेरेमां थाधरना रोग घणाने लागु पडे छे ते वगेरे अनेक शारीरिक अने धार्मिक नुकशान न थवाने अर्थे छुट्टमां जवु ते वहतर छे ते पण कोरी जग्याए ज्यां कीडी प्रमुखना दर (स्थानो) न होय, लीलोतरी, बादर, भेजवाळी जग्या न होय तेवी भूमिने विष जवु, तेथी शारीरिक तदुरस्ती सारी रहे छे, तथा अनेक जीवोनी दया पळे छे, माटे ते बाबत खास उपयोग राखवो

२ लघुनीति (पशाब) करवो, ते पण छुट्टमां कोरी जग्यामां के ज्यां तुरतमां सुकाइ जाय त्यां करवो युक्त छे पेशाब उपर पेशाब करवाथी शारीरिक प्रत्यक्ष नुकशान छे मोरी, गटर वगेरेमां पशाब करवाथी असंख्य समूर्छिम मनुष्य पचेंद्रिय जीवो तथा कीडा प्रमुख त्रस जीवोनी उत्पत्ति विनाश थाय छे, तेथी तेवां स्थानो वर्जवा शास्त्रमां मोरी वगेरे स्थानके पेशाब करनारने छट्ठ एटले बे उपवासनु प्रायश्चित कह्यु छे, त्यारे पायखानामां झाडो प्रमुख करनारने केटलो वधो दोष लागे ? जेथी लघुनीति (पशाब), वडीनीति (झाडो) छुट्टमां कोरी जग्याए ज्यां सूर्यनो प्रकाश पडे त्यां करवो उचित छे.

३ मुखमांथी बळखो नाखवां, नाकमांथी लींट काढवा, थुंकवा, वमन (उलटी) थता, कानने मेल, परु परठवता या शरीरना कोइपण भागमांथी लोही, रसी, प्रमुख परठवता निर्जीव स्थानके ज्यां तरत सुकाइ जाय, दिवस होय तो सूर्यनो प्रकाश

पडे तेवा स्थाने घरथी दुर जइ परठवीने तेना उपर राख बराबर नाखवी. आ बाबतनो उपयोग विवेकी धर्मात्माए जरुर करवो युक्त छे वळी आ प्रमाणे उपयोग धारे तो दरेक समजु माणस करी शके तेम छे तेम न वर्तता अजयणाए परठववाथी तेमां असंख्य संमूर्छिम पंचेंद्रिय जीवोनी उत्पत्ति विनाश थाय छे. वळी मांखी, कीडी, मकोडा प्रमुख जीवो तेने खावानी पदार्थ समजी चोंटि छे, अने तेनो स्पर्श थतां तेनी पांख अंग प्रमुख वळगा, लींट, प्रमुखनी चीकाशने लीने चोटी जवाथी आवा अनेक त्रस जीवो प्राण खुवे छे वगेरे घणा दोषो थाय छे, तेथी कोरी जग्याए परठवीने तुरतज राखथी ढांकी देवु, नहींतर फक्त अंतर्मुहूर्तना काळमा (काची बे घडीनी अंदर) तेमां समूर्छिम पचेंद्रिय जीवो उपजे छे जेथी आ बाबत विवेकी श्रावके दयाना कोमळ परिणाम राखी उपयोग राखवो जोइए

४. शरीर अभ्यग (तेलमर्दन-पीठी चोळवी) करीने स्नान करवु, या ते वगर फक्त स्नान करवु होय तो मोरी, खाळ वगेरेमा स्नान न करवु केमके ते पाणीमा शरीरना मेल वगेरेने लीने ते पाणी जेमने तेम रहेवाथी असंख्य संमूर्छिम जीवो उत्पन्न थाय तथा घणो वखत या दीवसो सुधी ते पाणी एक जग्यामां रहेवाथी तेमां बीजा पण अनेक त्रस जीवादिनी उत्पत्ति विनाश थाय छे, तेथी ज्यारे स्नान करवु होय त्यारे निर्जीव जग्याए रेती प्रमुख होय तेवा स्थाने, ज्या सूर्यना प्रकाशथी तुरतमा सुकाइ जाय त्यां स्नान

करवु उचित छे वळी श्रावके नदी, तळाव, कुड प्रमुखमां कदी स्नान करवु जोइए नहीं, तेथी अनेक जीवोनी हिंसा थाय छे, वळी पाणीनु परिमाण रहेतु नथी, चौद नियमवाळा श्रावके तो बनता सुधी नदी प्रमुख जळाशयमा न्हावु न जोइए, केटलीक वखत झेरी जतुथी प्राण खोवानो वखत आवे छे, अथवा पाणीमा मुझाइ जवाथी या तरता न आवडवाथी या कोइ तेवा स्थानमां पग प्रमुख खुंची जवाथी प्राण जाय छे वगेरे अनेक दोषो होवाथी तेवा जळाशयोमा स्नान करवु नहि स्मशानादि जवाना कारणे उपयोगी श्रावक धारे तो पाणी गळीने स्नान करी शके छे, श्रावक अणगल पाणीथी स्नानादि कांइ करी शक नहीं, त्यारे जळाशयमा स्नान करवु-क्रीडा करवी ते केटला दोषनु कारण छे ? आ बाबत विशेष विवेचन न करतां जे विषयपर आ लखवु छे ते माटे एटले स्नान मोरीखाळ, जळाशयोमा न करता उपर कह्या मुजब जयणापुर्वक करवु उचित छे

एटलु खास ध्यान राखवु जे लघुनीति (पेशाब), वडीनीति (झाडो) जिनमदिरथी जघ यपणे सो हाथ दुर करवु जोइए, तेमज नाकनु लींट, बळखो प्रमुख जिनमदिरना कम्पाउन्डमा नज नाखवा जोइए घणी जग्याए जिनमदिर पासे ओरडी प्रमुखमां स्नान करवानी जग्याओ राखवामा आवे छे, तेनु पाणी एकदर गटर–मोरीमा जाय छे, वळी त्या स्नान करवानी जग्याए कोगळा करवा, मों साफ करवु, बळखा लींट काढवां, साबु प्रमुखथी न्हावुं वगेरे

अनेक दोषो सेवाय छे, तेथी करीने ते प्रमाणे आचरण करनारा-ओने जाणता छता जेओ आखआडा कान करी चलावे छे तेओ पण तेना जोखमदार छे आ माटे जेओथी बने तेओए यथाशक्ति उपाय शोधी ते ते दोपो दूर करवा करावचा प्रयास करवो युक्त छे.

५. शास्त्रमा कहल छे जे एठु भोजन मुकवु नहीं, केमजे तेथी तेमां अंतर्मुहूर्तमा असख्य संमूर्छिम जीवनी उत्पत्ति थाय छे; तेथी खावानी थाळी धोइ पी जवी जोइए. आ बावत मोटा जमणवारो–नातोमा बहु अणउपयोग जोवामा आवे छे विरतिवन तथा बीजा पण विवेकी श्रावक बधुओए एवे प्रसगे उपयोग पूर्वक जरुर जोइतु खावापीवानु लेवु जेथी एठु वधवानो प्रसंग न आवे

६ तेवीज रीते पाणीना संबधमां पण समजवानु छे पाणी काढवाने माटे जुदोज लोटो राखवो जोइए एठा भाजनो पाणीना गोळामां बोळवाथी पण पूर्वोक्त दोप लागे छे, तेथी आ बावत खास उपयोग राखवो जोइए. काठीयावाड गुजरात प्रमुख देशोमा आ दोप वधारे प्रचलित छे, तेथी तेओ वधारे टीकापात्र थाय छे. हवे नो त्यांना भाइओ, वहेनोए कइक जाग्रत थइ वधारे कडवी टीकाना पात्र न थवाय तेम चेती लेवानी पुरी जरुर छे.

छेवटे समाप्तिमां आ प्रथमा जे कोइ मति मदताथी उत्सूत्रता आदि दोप लाग्यो होय तेनी क्षमा चाहु छु इतिशम्.

सर्वमंगलमांगल्य सर्वकल्याणकारण ।
प्रधान सर्वधर्माणा, जैन जयति शासनम् ॥ १ ॥

समाप्त

नवा जिन मदिरो कराव्या, सोळसो जीर्णोद्धार कराव्या अने सात तीर्थयात्रा करी.



प्रथम व्रत

प्रथम व्रतने विषे " मारि " एवो अक्षर जो मुखथी बोलाय तोपण उपवास करता. (ज्यारे आजकाल क्रोधादिने वश थनी मारि नाखीश, मरतो नथी ? मरी जा ! प्रमुख अनेक तुच्छ वाक्यो सहजे बोलाय छे, पण भाइ हसता बांध्या कर्म ते रोता पण छुटवा मुश्केल थशे, जेथी वचन शुद्धिनो खास उपयोग राखवो गृहस्थोमा अने खेदनी वात छे जे मुनिपणु अगीकार कर्या छता पण वचन शुद्धिनो अविवेक जोवामा आवे छे प्रथम तो घरने विषे घरना मुख्य माणसे नम्रतावाळी भाषा बोलवी जोइए, जेथी आसपासना पुत्र पुत्रादि पण तेवा विनयवान विवेकी बने, अन मुनिने विषे पण तेना नायकोए आ बाबत स्वयमेव खास उपयोग राखवो अने अकुशथी पण निवारवा. पण ज्यारे साधुपणु अगीकार करी भाषासमितिनो उपयोग न राखे अने सारा गृहस्थने पण न छाजे तेवा वचनो जेम तेम बोले तो ते अति लज्जास्पद छे, तो मुनिओए तथा श्रावकोए कुमारपाल महाराजना प्रथम व्रतना नियमपरथी धडो लेवो जोइए.)

त्रीजुं व्रत.

त्रीजा व्रतमां भूल आदिकथी असत्य बोलतां आंबेलादि तप करता (ज्यारे वर्तमान कलिकालमां श्रावको कपाळने विषे प्रभु आणारूप तिलक (निशानि—चाडला) लांबु चोडु करी व्यापारादिकने विषे कपट माया मृषावादपणे आखा दिवसमां अनेक वार असत्य बोले छे ते शु ? मार्गानुसारिपणाना पांत्रीश गुण मांहेलो प्रथम गुण न्यायोपार्जित द्रव्यथी आजीविका करे एवु प्रभुनुं फरमान भूली जाय छे ! हजु सम्यकत्व, अणुव्रत अने देश विरतिपणु तो घणु दूर छे. केमके ज्या मूळ (बीज) नु ठेकाणु नहि तो शाखा वृक्ष ने फळ क्याथी संभवे ? दुकानो पर घराकोने ठगवा तथा पोतानी दुकान छोडी बीजे माल न खरीदे ते माटे विश्वास पमाडवा धर्मना सोगन पण खाय, अने कहे के छेवट आ भाव पडशे, अने सोगन खाधा पछी न्यून कहे ! अरे साचा पण धर्मना सोगन समकिति प्राणि खाय नहि, त्यारे अति खेदजनक छे के केवळ पापी पेट भरवा माटे अने जे कुटुंवादिक नर्क गतिने विषे दीवो देखाडवा चालु छे तेना अर्थे आ धर्मना जुठा सोगन खातां पण आ विचाराओ लेश मात्र डरता नथी. वळी कोइ हितशिक्षा दे तो बचाव अर्थे कहेशे जे 'साचु नभतु नथी. साचु बोलीए तो व्हेला भुखे मरीए', आवा वक्र उत्तर देनाराए जाणवु जोइए के—हाल पण अनेक मोटां शहेरोमा इग्लीश फर्म—ईग्रेजनी दुकानोमां तथा केटलाक पारसीओ अने विरला हिदुओ भाव राखे छे (बोर्ड

फक्त रुखेल एकज भाव एटलुज नहि पण नानाथी मोटा दरेकने माटे एकज भाव लेवो), जेओ पोतानी सत्यपणाना विश्वासनी छापने अंगे व्यापारमा घणो लाभ प्राप्त करे छे, तो सत्य प्रतिज्ञा-वंत थवु श्रावकोज कुडकपट असत्यने विष वठ प्रमाणमा डुबी रह्या छे एटलुज नहि पण जैन मुनिनु लिंग-वेश धारण करी अनेक प्रकारना कलह कदाग्रह प्रमुखने वश बनी बीजा जतनी मर्यादानु उल्लंघन करनार थाय छे त्यारे हवे पोकार क्या करवो ? जेने माटे उपाध्यायजी महाराज सवासो गाथानो सीमंधर स्वामिनी विनति करता प्रथम ढालमां साफ जणावा छे.—

कलहकारी कदाग्रह भर्या,
स्थापता आपणा बोलरे,
जिनवचन अन्यथा दाखवे,
आज तो वाजते ढोलरे

तेओ कहे छे के जे-कलहना करवावाळा, क्लेशमा राचीमाची रहेला अने कदाग्रहथी भरपुर छे, ते पोताना वचननी स्थापना करे छे अने प्रभुना आप्त-सत्य वचनोने आ वर्तमान काळमा खुल्ले छोगे निडरपणे ओळवे छे. शु कारण ते कहे छे —

केई निज दोपने गोपवा,
रोपवा केइ मतकद्रे,

धर्मनी देशना पालटे
सत्य भाखे नहि मंदरे

कोई तो पोताना व्रतादिकने विषे खंडना-विराधनाना दोषोने सताडवा असत्य बोले छे, केमके सत्य कहे तो पोतानी कीर्तिनो नाश थाय, लोकमां तिरस्कारने पात्र थाय, तेवा भयथी जुठु बोले छे, पण एक भूलने माटे प्रसंगोपात अनेकवार तेवुं जुठु बोलवु पडे छे, पण ते विचारो कर्मवशात् भगवतनी माशीना जेम सत्य कही शकतो नथी (भगवतनी माशी) महावीर स्वामि प्रत्ये अनेक वखत दीक्षा आपवा माटे विनंति करती हती, ज्यारे भगवत "ऋजु योग्यता नथी" तेवो उत्तर आपता एकदा समये कोइए आलोयण पूछये छते भगवते एक माखीनी हिंसा माटे जबरी आलोयण बतावी त्यारे ते भगवतनी माशी पोताना गुह्य पूर्वेकरेला पापने माटे अति भयभ्रांत थइ छती समवसरणमा बार पर्षदानी वच्चे आवी पोतानु पाप प्रगट करती हती, के हे प्रभो! हु पापीणी के जेणे माथाना केश प्रमाण अर्थात् अनेक पति भोगव्या ते दुर्भागिणिनी शी गति थशे अने तेनी शी आलोयणा (दंड)? तेज वखते भगवते कह्यु के तु ते सर्व पापथी (स्पष्टपणे अति निंदा पूर्वक पाप प्रकाशवाथी) मुक्त छे, अने हवे तु दीक्षाने योग्य थइ छे त्यारे तेणे दीक्षा लइ आत्महित कर्यु. तेवी रीते पोताना गुह्य पापने स्पष्ट प्रकाशवा ते तो दूर रहो; पण गीतार्थ सन्मुख तेनु प्रायश्चित लेवुं ते पण दुष्कर ... जेवी चोरीछीने निज लख्खणा

साध्वीए सशल्य पणे ज्ञानिने प्रायश्चित्त पूछी पचास वर्ष पर्यंत घोर तप कर्यो छता अनेक दुर्गतिओमां घणो काळ रखडी आखरे श्री पद्मनाभ तीर्थंकरना समयमां निःशल्य थइ मोक्षे जशे त्यारे पोताना दुष्कृतो आखा जीविन पर्यंत गोपवी अनेक असत्य वचनो बोलनार भाणि पापोनी आलोयणा लीधा वगर केटला भव पर्यंत भमशे ? वळी कोइ पोताना मतरूपी वृक्षनु कद रोपवाने अर्थे धर्मनी देशना पण उलट पुलटपणे प्रकाशे छे, अरे ! ते बिचारा अज्ञानिओ लेश मात्र सत्य वचन न बोले त्यारे तेनी शी गति ? अने तेवी स्थिति होइने वळी आगळ कहे छे जे—

बहु मुखे बोल एम सांभळी,
नवि धरे लोक विश्वासरे,
ढुढता धर्म तेणे थया,
भ्रमर जीम कमलनी वासरे

उपर मुजब जुदे जुदे स्थळे असत्य उपदेश सांभळीने लोकोनो विश्वास (आस्था) उठी जाय छे, अने भ्रमर जेम कमलनी वास लेवाने माटे एक फुलथी बीजे, बीजेथी त्रीजे एम भमे छे तेम आ कलिकालमा असत्यवादिकुगुरुओना फंदमा फसायेला प्राणीओ धर्मने अर्थे ढुढे छे—भमे छे, पण सत्यधर्म सद्वक्ता पच महाव्रतना धोरी एवा सुगुरु वगर क्याथी पामी शके ? तेथी जैनलिंग—वेशने अंगीकार करी ते मुजब यथातथ्य सत्य वचन प्रकाशवा उद्यमवंत

थयु अने कुमारपाळ महाराज ज्यारे एक भूलवशात् सहेज असत्य बोलातु त्यारे आवेलादि तप करता, ते तो अणुव्रत (देशविरती) धारी होइने केटला भवभीरु हता, तो त्रिविधे त्रिविधे असत्य न बोलवानु व्रत ग्रहण करी उपर कहेला कोइ पण कारणोने अंगे हलाहल असत्य बोलाय तो केटलो ससार वधे ? तो तेवा श्रावकनुं पण दृष्टात लइ सत्य प्रकाशवा पोतानी भुल सुधारवा मुनिपणु धारण करी सत्य मुनिपणु बतावबु युक्त छे. तेमज श्रावके विश्वासघात प्रमुख दोषो वर्जी न्यायोपार्जित द्रव्य मेळवता सत्य बोलवु तथा उपरना दृष्टात मुजब सामान्य कारणोमा पण कदि असत्य बोलवुं नहि तेने माटे इंग्रेजीमां कहेवत छे. के—

'Speak the truth and speak it ever"

साचु बोल अने वळी ते (सत्य) सदा बोल.

सत्य वचनपर शास्त्रमा अनेक दृष्टात छे तेनु मनन करवु

त्रीजुं व्रत.

त्रीजा व्रतमां मृत्यु पामेलानु द्रव्य लेता नहि. (कलिकाळना महिमा) वडे आजकाल, अन्यायोपार्जित द्रव्य एकठुं करी स्वपर आत्माने मलिन करनारा प्राणिओ अनेक चोरीना पापाचरणो सेवी पोताने [illegible] वल वहोरे छे जेवा के व्यापार [illegible]

प्रमुखमां कूडां तोल, कूडा माप, सारा नरसा मालमां सेळभेळ, वस्तु लइने पाछी आपवी नहि, एकना आठ दश गणा दाम करवा, कुडा लेख लखवा, लाच लेवी-देवी, घराकने छेतरवा, सारो माल बतावी हल्को आपवो, चोराइ वस्तु लेवी, दाणचोरी करवी, जकात न आपवी, कोइ चीज शोधनी लावता या कोइ कार्य प्रमुखे मोकलता चोरी करवी, हाथ चालाकी करी भय देखाडी अन्यने ठगवु, खीसा कातरवा, हिसाबमा ठगवु, भूमिपर पडेली वस्तु उपाडी लेवी अने जेनी होय तेने न आपवा या जाहरमा न मूकता पचावी पाडवी, तालु उघाडी गाठ छोडी चोरी करवी, रल्वेनी मुसाफरीमां लगेज टीकीट प्रमुखनी अनेक चोरी अने विश्वासघात विगेरे अनेक चोरीना भेदो छे ते आचरवा, जे अति निंद्य छे, आलोक तथा परलोकमा अति दुःखनु कारण छे तेथी तेवा अकृत्यो सर्वथा वर्जवा कहेलु छे के " विविध प्रकारना उपाय अने छळ प्रपच करीने जे बीजाओने ठगे छे ते महा मोहनो मित्र बनीने पोतेज स्वर्ग अने मोक्षना सुखथी ठगाय छे " उपर लखेला नहि करवा योग्य अकृत्यो-चोरीनो त्याग करवाथी निर्वाह थाय नहि एम समजवु नहि केमके निर्वाह तो पोताना पुण्य ने उद्यमथीज थाय छे " Honesty is the best policy " प्रमाणिकपणु ते उत्तम मार्ग छे, जेना उपर हेलाक श्रेष्ठीनु दृष्टान्त विचारवानु के जे प्रथम अन्यायथी व्यापार करता, एक वखत पुत्रनी वहुए कह्यु के ससराजी ! तमने असत्य व्यापार करवो योग्य नथी शेठे कह्यु शु करीए आ

ससार एवोज छे त्यारे वहुए कयु जे व्यवहारशुद्धि सर्व प्रकारना अर्थ साधन करवा समर्थ छे, तो छ मास तमे न्यायथी व्यापार करी जुओ. ते वात शेठे मान्य करी अने तेम करवाथी ग्राहकनी वृद्धि थइ, माल घणो खपवा लाग्यो अने छ मासिक हिसाब करवाथी एक पल प्रमाण (अढी तोला) सुवर्णनो लाभ थयो ते वात पुत्र वधुने कहेवाथी तेणीए कह्यु के आ न्यायोपार्जित वित्तथी कोइ पण प्रकारे हानि थायज नहि, ए वात साभळी शेठे अजायब थइ ते सोना उपर लोखड जडावीने तेनु एक शेर तोळवानु काटलु कर्यु, तेना उपर पोताना नामनी महोर–छाप मारीने दुकानमा तोळवा माटे ते शेर राख्यो ते जेम तेम दुकानमा रखडतो पड्यो रहे तो पण तेने लइ जवानी कोइनो बुद्धि थइ नहि, पछी ए शेरनी परीक्षा माटे शेठे तेने एक नाना तळावमा नाखी दीधो. घनवा काळथी तेने एक मत्स्ये तेना पर चीकाश विगेरे होवाथी गळी लीधो अने थोडाज वखतमा ते मत्स्यने माछीए पकडी तेने चीरता पेटमाथी शेरीओ नीकळ्यो, तेना पर हेलाक शेठनु नाम होवाथी ते शेठनी दुकाने पाछो आपी गयो आथी शेठने पूर्ण प्रतिति थइ अने "सत्यताथीज वेपार चलाववो" एवो निश्चय कर्यो तेम करवाथी अति लाभ थयो, मोटो श्रीमत वळी राजमान्य थयो, उत्तम श्रावकना व्रत पाळनारो अने सर्व लोकोमां प्रख्यात थयो के आ सत्यज वेपार करे छे तेनु दृष्टांत लइ घणा लोको सत्य वेपार करवाने आदरवत थया. अने वळी एथी पण एनी एटली बधी अधिकता थइ के ते हेलाक शेठनु

जे कोइ नाम दे तेनु वहाय तेवुं विघ्न दूर थइ जाय; एवो सर्व लोकने निर्णय थयो. जेनु नाम हजी सुधी चालतुं देखाय छे समुद्रमा होडी —वहाण हाकनार खलासीओ हलेसा पाणीमा चलावता "हेलाशाह हेलाशाह" एवो शब्द बोले छे तेओ जेम ते शेठना प्रमाणिक पणाने प्रभावे महा समुद्र उलघी जाय छे, तेम जे भव्यो नीति न्यायथी व्यापार नोकरी वगेरे करी मार्गानुसारीपणानो प्रथम गुण न्यायोपार्जित वैभवनु सेवन करे ते अनुक्रमे सम्यक्त्व, देशविरति अने सर्व विरतिना अधिकारी थइ ससाररूपी महासमुद्रनो पार पामी निर्वाणपदने पामे छे

श्रावकोए न्यायोपार्जित द्रव्यथी आजीविका करवानो खास रूयाल राखवो जोइए. वळी मुनिओए आ विचारा मुग्ध कर्मादान प्रमुखना आरभमय तथा अन्याय पूर्वक द्रव्य मेळवनारा श्रावकोने प्रथम तेज उपदेश अवार नवार आपवानी जरुर छे केमके जेवा द्रव्यनो आहार तेवो ओडकार, तेमज तेवा अन्यायथी द्रव्य प्राप्त करी ते मुनिओने आहार पाणी (दानादि) वहोरावे त्यारे तेमनी पण मन शुद्धि क्याथी थाय ? आ योअन्य फरज बजाववी युक्त छे पूर्वे पण साभळीये छीये के एक श्रेष्ठिए मदिरमाथी देवने मुकेल सुगधी चोखाने बदले तेनाथी विशेष गुणा चोखा मूकी ते चोखानी खीर करी एक मुनिने वहोरावावाथी तेमने मगळ प्रमत्त भाव थयो तेनु कारण तपासता पूर्वोक्त अन्याय मालुम पड्यो. बाद ते मुनिने सर्व आहारनु वमनादि करावी शुद्धिमां आण्या आ उपरथी अन्यायथी प्राप्त

करेल द्रव्य श्रावकोने तेमज मुनिओने पण ते अशुद्धतानु कारण होइ केटलु अनर्थकारक छे, तेथी प्रथमज न्यायोपार्जित द्रव्यथी आजीविका करवानु दृढ ध्यान राखवु. मुनिओ पण स्ववर्तनमां कटिबद्ध थइ निस्पृहपणे उपदेश आपवा उद्यमवंत थाय तो आ प्रकारे अनीति अने अन्याये प्राप्त करातो आजीविकाथी श्रावकोने मुक्त करी शके क्यारे एवो उत्तम सोनेरी अवसर आवशे के रामचद्रजी, हरिश्चद्र, विक्रम अने कुमारपाळ महाराजाना राज्यनी जेम न्याय वैभव सत्यता प्रमाणिकता प्रमुखनु साम्राज्य वर्तशे ?
Be honest, Speak the truth, Leave off immorality (प्रामाणिकपणु भजो, सत्य वदो, अनीति त्यजो !) त्यारे कुमारपाळ महाराजनी जेम परमार्हतपणानु बिरुद प्राप्त थशे)

चतुर्थ व्रत

चतुर्थ व्रतमा कुमारपाळ महाराजाए धर्म पाम्या पछी परणवानु नियम कर्युं चातुर्मासमा मन, वचन अने काया एम त्रण प्रकारे शील-ब्रह्मचर्य पाळता, मनथी शील भांगते छते क्षपणक (उपवास) करता, वचनथी भांगते छते आयंबिल करता अने कायाथी भांगते छते एकाशन करता परस्त्री प्रत्ये सहोदरनु बिरुद धारण करता, भोपल देवी विगेरे आठे राणीना मृत्यु बाद प्रधानादिकोए घणु कह्या छतां पण परणवाना नियमनो तेमणे भग कर्यो

नहि आरात्रिक (आरति) माटे साथे राखवा भोपलदेवी राणीनी सुवर्णनी मूर्ति करावी श्री गुरुमहाराजे वासक्षेप पूर्वक तेमने राजर्षिनु बिरुद आप्युं

उपर मुजब कुमारपाळ महाराजा चतुर्थ व्रतने विषे निविर्ने मग्न मनिष्ठा पूर्वक शियळनु पालन करता परस्त्री तो जेमने सदा मा बहेन तुल्यज हती ज्यार आज काल परदारा लपट मनुष्यो ठेर ठेर श्वाननी जेम भटकता फरे छे, तेथी खरेखर श्वान (कुतरो) जेम हाडकाने चुसता आनंद मानी लीये छे (पोताना मुखमा गाडकु लागवाथी लोहि नीकळे छे तेने चाटे छे, पण तेथी जरा पण तृप्ति थती नथी) तेम पोतानी वीर्य शक्तिनो नाश प्रत्यक्ष थवा उपरात अनेक महारोगने वश थता पण मैथुनने विषे लीन थइ जाय छे परस्त्रीनी इच्छा मनथी पण करनार रावणनी जेम नर्क गति पामे छे त्यारे मन वचन अने कायाथी परस्त्री गमन करनारानु तो शु कहवु. स्वदारा सतोषी सुश्रावक सुदर्शन शेठनी धैर्यताने महस्रवार धन्य छे क जेने अभया राणीए अनेक प्रकारे अनुकूल उपसर्ग करता छता पण तेओ मनथी किंचित् डग्या नहि वळी जंबुस्वामिके जेणे आठ कन्या साथे पाणि ग्रहण कर्या छतां पण विषयने विषतुल्य समजी आठे स्त्रोने पण प्रतिबोधी प्रात काळे चारित्र अंगीकार कर्यु. सर्वथी आश्चर्यजनक श्री स्थूलिभद्र स्वामिनु चरित्र छे के जेणे कोश्या वेश्याने त्यां बार वर्ष पर्यंत रह्या छता पण चारित्र लइने तेज कोश्याने त्या चातुर्मास रही षड्रस भोजन करता, कोश्याना अनु-

कुल उपसर्ग प्रमुख छता कामराजानो पराजय कर्यो. शास्त्रने विषे अनेक दृष्टांतो छे तेनो धडो लइ श्रावकोए बने तो सर्वथा मैथुन-त्याग छेवट स्वदारा संतोषी अवश्य थवु जोइए तेमा पण पर्युषणा दिक छ अट्ठाइओ, कल्याणकना दिवसो अने बार तिथिना दिवसने विषे सर्वथा मैथुननो त्याग करवो जोइए. वळी उत्तम श्रावक तथा श्राविकाए आ संसारना प्रत्यक्ष वैराग्यजनक नाटकनो विचार करी कामने उत्तेजक, पैसानुं पाणी करनार तथा उजागराथी शरीरने हानिकारक अने वखतनो गेरउपयोग करवावाळा नाटक प्रमुखनो अवश्य त्याग करवो जोइए कारण के प्रायः घणा जनो नाटकमां मन अने वचनथी परवश थइ महाकर्म बांधे छे. चतुर्थ व्रत पाळवाना इच्छकोए रसनेंद्रियने बराबर वश राखवी जोइए बने त्यां सुधी अचित्त जल वापरवु, मादक पदार्थोथी दुर रहेवु, चक्षु इंद्रियने मर्कटनी जेम ज्यां त्यां दोडवा न देतां वश राखवी, चालता पण प्राय' नीची दृष्टिपूर्वक चालवु, नव वाडोनु स्वरूप समजी बराबर पाळवी, एकांतमा परस्त्री साथे तो शु पण स्वमाता के व्हेन साथे पण रहेवु नहि-वात करवी नहि, तबोळनो अवश्य त्याग करवो अने पूर्वे थयेला महा शियळवंत पुरुषोनां चरित्रो विचारी मनथी पण अब्रह्मनो त्याग करवो. पंच महाव्रत धारक मुनिओ तथा साध्वीओए चतुर्थ व्रतना रक्षण माटे खास लक्ष राखवुं युक्त छे. मुनिए साध्वी तथा श्राविका प्रमुखनो परिचय तथा साध्वीओए मुनि तथा श्रावक प्रमुखनो परिचय राखवो युक्त नथी नववाडोनु

बरोबर पालन करवु. जेओ आ महाव्रतनु खडन करी जैन मुनिनु लिंग धारण करी अनेक अनाचार सेवे ते महा पापी शासननी केवळ हीलना करावे छे जो पोते व्रत पालवाने असमर्थ थयो होय तो तेणे वेशने छोडी देवो युक्त छे. पूर्वे पण आद्रकुमार तथा नंदी षेण मुनिने (भोगावळी कर्म अवश्य छते) तेवो प्रसग पडतां वेशने छोडी दीधो छे. केमके गधेडानी उपर हाथीनी अबाडी कदी शोभे नहि मनथी पण अब्रह्मनो विचार थता रहनेमिनी जेम प्रतिबोध पामी विषयथी विरमी लागेल दोषनु प्रायश्चित्त अगीकार करी शुद्ध थइ चारित्रनु पालन करवु जोइए. तेम नहि करता जे वेशधारीओ प्रत्यक्षपणे अनाचारनु सेवन करे ते महा कर्म बांधी दुर्गतिना दास थशे. कुमारपाळना व्रतनी हकीकतनु दृष्टांत लइ इइडे सान लावी विषयथी विरमवु युक्त छे



पांचमु व्रत

छ क्रोड सुवर्ण महोर, आठ क्रोड रुपा महोर, दश सो (हजार) तोला मोटी किंमतना मणिरत्नो विगेर, बत्रीश हजार मण घी, बत्रीश हजार मण तेल, त्रण लाख मण चावल तथा चणा, जुवार अने मग आदिक धान्योना दरेकना पांच लाख मुडा, घरहाट सभा वहाण गाडी पालखी इत्यादि, अग्यारसो हस्तिओ, पचास हजार रथो, अग्यार लाख घोडा, अढार लाख सुभटो एवी

रीते सर्व सैन्यनो मेलाप हतो, इत्य दि. (श्रावके उपर मुजब कुमारपाळ महाराजना परिग्रहनु परिमाण जाणी जेम बने तेम अल्प परिग्रह राखवो केमके परिग्रह ते पापनु मूळ छे, पुणिया श्रावकनी जेम सतोपवृत्ति धारण करवी परिग्रहरूपी ग्रहथी सर्व जगत् प्रायः ग्रसायेलु छे मुनिपणु धारण करी परिग्रह, धन कचन, स्त्री प्रमुखने विषे मूर्छा धारण करे छे, तेओ श्रावकथी थता दान धर्मथी भ्रष्ट थाय छे, तेवा वेश विडंबक, लपटी, छत्र धारण करनार-करावनार, पालखी मीयानाने विषे आरुढ थनार, रेल प्रमुख वाहनने विषे मुसाफरी करी पोताने सत्यमार्गपालक कहेवरावनार, पगमा बुट मोजा चाखडी प्रमुख धारण करनार, तबोल-पान चावनार, हाथमां (फेशनेबल) सुशोभित लाकडी छत्री राखनार, रात्रि भोजन करनार, यतणिओ राखनार, निज मार्गना उलट पुलट प्रकाशक, सचित्त पाणी वापरनार, आरभादि करनार अने करावनार, गादी तकीयाना मालिक, भक्ष्याभक्ष्य पेयापेयनो विचार नहि राखनार, पीळा कपडां पहेरवामात्रे संवेगी मनावनार, लोकोने ठगनार, देव द्रव्य ज्ञानद्रव्यनुं भक्षण करनार, जिनमदिरनु उपरीपणु धरावनार, उपाश्रयना मालिक थइ बेसनार, पोतानी मानता-पूजा करावनार, गुण नहि छतां श्रीपूज्य, पन्यास, आचार्य, उपाध्याय, भट्टारक, प्रमुख पद्वी धारण करी फरनार, मत्र जत्र दोरा धागा करनार, गृहस्थ प्रमुखने औषधादि आपनार-धतावनार, प्रतिक्रमणादि क्रि-

याथी विमुख रहेनार, स्नान-दातण देह शुद्धि करनार, जातिकुल प्रमुखथी आजीविका चलावनार,मायाधारी,गृहस्थना कार्य करनार. (इत्यादि) यति नाम धरावे छे तेओने उत्तराध्ययनजीमां पाप श्रमण कही बोलाव्या छे तेवा अनेक कुगुरुओना फन्दमां अविवेकी एवा अनेक श्रावक श्राविका फसायेला जोवामा आवे छे, तो तेवा परिग्रहनतथी सदा दूर रहेवु, तेओनु मुख पण जोवु अकल्याणकारी छे, तेवा कुगुरुओने कोइ प्रकारे उत्तेजन आपवु नहि सामान्यपणे परिग्रह राखनार रत्नाकर पचीशीना कर्ता रत्नाकर सूरिने एक श्रावके परिग्रहनु स्वरुप पूछतां गुरु महाराजे घणु स्पष्टपणे स्वरुप समजाव्या छता घणा दिवसो सुधी श्रावक कह जे बरोबर समजातु नथी गुरु महाराजे विचार्यु के न समजवानु काइ पण गंभीर कारण होवु जोइए. ते बाबत पोताने विचारता समजायु जे हु मारी पासे परिग्रह धरावु छुं तेथीज ते श्रावक ए प्रकारे कहे छे एनु धारी पोते सर्व परिग्रह त्यागी निस्पृही बनी बीजे दिवसे पाट उपर जेवामा महाराज विराजे छे के तुरतज श्रावके नम्रपणे हस्त जोडी कह्यु के हे कृपानाथ! हवे हु यथाथ स्वरुप समज्यो, एम कही पोते गुरु महाराजनी स्तुति करी आ प्रमाणे पूर्वे श्रावको पण स्थिर करनार हता, अने मुनिओ पण पोतानी भूल स्वीकारी सन्मार्गनु सेवन करवा तत्पर थता. परिग्रहपर मूर्छा राखनार मुनिए पण परिग्रहनो त्याग सर्वथा करवो उचित छे अने श्रावक श्रावि-

काए पण यथोचित परिमाण करवु मील, जीन, प्रेस प्रमुख कर्मादानोना व्यापारो खरेखर दुर्गतिनु कारण समजी न करवा. कलिकाळमा तेनु प्रबळ वधतु जाय छे, तो भवभीरुए विचार करवो.)

छठ्ठु व्रत

वर्षाकाळमा श्री पाटणना सीमाडानी बहार गमन करवानो निषेध हतो.

कुमारपाळ महाराजनी जेम कृष्ण वासुदेव पण चातुर्मासने विषे द्वारिकानी बाहार गमन करता नहि. तेम श्रावकोए अवश्य करी छठ्ठा व्रतने विषे अति संक्षेप करवो अढार देशनु सर्वोपरिपणु धरावनार कुमारपाळ अने त्रण खंडना धणी श्रीकृष्ण वासुदेव जेवा अनेक प्रकारनी राजकीय खटपट होवा छता चातुर्मासने विषे तेवी निवृत्ति मेळवता, आवी निवृत्ति प्राप्त करीने पण सामायिक पौषध, प्रतिक्रमण, व्याख्यानश्रवण अने प्रभु भक्ति वगेरेमा तेओ प्रायः लीन रहेता वळी चातुर्मासने विषे वर्षाना कारणे लीलफुग वगेरे वनस्पति थवाथी तथा अनेक त्रस जीव उत्पन्न थवाथी भवभीरु श्रावके अवश्य दिशी परिणाम करवु जोइए चातुर्मासने विषे कुमारपाळ महाराजपर परसैन्य आवतां छतां पण तेमणे व्रतनु पालन कर्यु हतु वळी पूर्वे सिंह श्रेष्टिए पण दिशी परिणामना नियमने अंगे पादपोपगमन नामनु अनशन करी अने

एक मासे केवलज्ञान प्राप्त करी सिद्धि पद मेळव्यु हतु पण व्रतनो भग कर्यो नहि, तेनी जेम श्रावक लीधेला व्रतनुं पालन करवु जोइए. शेषाकाळ तथा यावज्जीव माटे बने त्या सुधी दिशा परिमाण करवु जोइए अनार्य देशोमा जवाथी प्राय' बुद्धिनी भ्रष्टता थवा पामे छे, भक्ष्याभक्ष्य पेयापेयनो विचार रहेतो नथी फेशन (मोजशोखनी फीशीयारी) मां फसाइ जवाय छे, बहुधा इद्रिओ काबुमा नहि रहेवाथी विषयी- लपटी बनी जाय छे अने तेना लीधे केटलाएक तो महा रोगोने वश पडी देशमा आवतां थोडा अरसामा परलोक गमन करी जाय छे, अने अते काइ धर्मसबल पामी शकता नथी आर्य देशपणु महापुण्य योगे पामी शकाय छे पण जे प्राणिओ आजीविका माटे या कमने वश थइ मोजशोख के मानपाननी खातर दुर देशोमां भ्रमण करी जीवित पायमाल करे छे, तेओए कुमारपाळ महाराजनो धडो लेवो जोइए.

सातमु व्रत

कुमारपाळ महाराजने मद्य, मास, मध, माखण, बहु बीज, पांच जातिना उदुबर फल, अभक्ष्य, अनतकाय, घेवर आदिकनो नियम हतो देव पासे नहि धरेला वस्त्र फल तथा आहार आदिकनो त्याग हतो. धर्या पछी बाकीनु वापरता. एक पान रुपि सचित्त अने तेना पण एक दिवसमा आठ बीडा खपता. रात्रिए

कराववा पडे छे, तेथी निर्दोष व्यापारथी आजीविका चलाववी युक्त छे. एकादशनादि व्रत नित्य करवा, पर्वने दिवसे तथा कल्याणकादि अट्ठाइना दिवसोने विषे मैथुननो अवश्य त्याग करवो तथा बीजा पण आरंभो वर्जवा.

आठमु व्रत

कुमारपाळ महाराजे माते व्यसनने देशमाथी समुद्रमा फेंक्या

श्रावकोने सात व्यसननो अवश्य त्याग होवो जोइए. तेमज अपध्यान-मननु आहट दोहट चितववु पापोपदेश-पापनो उपदेश विना स्वार्थे देवो, हिंस्रप्रदान-जेनाथी हिंसा थाय तेवी चीजो वगर स्वार्थे ऐवी देवी (जेमव घंटी, खाणीया, छरी, सुडी, कोदाळी, कोश, अग्नि, दीवासळी, अनेक प्रकारना हथियार, अधिकरणो)-प्रमादाचरण-प्रमादना आचरण एटले विकथा मद प्रमुख करवु ते उपर लखेल चारे प्रकारनो त्याग करवो जुगटु रमवु नहि, होड पण करवी नहि, पशु पक्षी क्रीडा अर्थे पाजरे न राखवा, होळी प्रमुख जोवा नहि, नाटक नाच घोडानी शरत प्रमुख जोवा नहि, फासी दे त्या जवु नहि, झाड वनस्पति वगर कामे न तोडवां, गंजीफो चोपाट पासानी रमत प्रमुखनो त्याग करवो, दीवाळी प्रमुख प्रसंगे दारुखानु फोडवु नहि, वादरा, भवाया, नट, मदारी

ताबुत, हवन, अन्य देव देवलाना दर्शन, गरबी, सरघस, मेळा, वरघोडा, हाथी घोडाना युद्धो, रात्रिनी गमतो जेमके सगीत श्रवण, चापार्टीनी मीजलसमां जवु वगेरेनो त्याग करवो केमके तेथी अनर्थन का णो, वखतनो गेर व्यय, मिथ्यात्वनी दृद्धि म-मुख अनेक दोषो थाय छे



नवमुं व्रत

नवमा व्रतमां कुमारपालभूपाळने बन्ने वखत सामायिक करवु तथा ते करते छते श्री हेमचद्राचार्य विना बीजाओ साथे बोलवानो तेने त्याग हतो हमेशा योगशास्त्रना बार मकाश तथा वीतराग स्तवना वीश प्रकाशनो पाठ करता

आ कुमारपाळ महाराजनी जेम तथा पुणिया श्रावकनी जेम श्रावके सामादयने विषे ज्यारे ज्यारे अवकाश मळे त्यारे त्यारे उद्यमी थवु जोइए, छेवट बे वखत प्रतिक्रमण, सामायक, अवश्य करवानो नियम होवो जोइए, आजकाल विकथामां कलाकना कलाको नीकळी जाय, प्रमाद निद्रा या नाटक चेटकमा पहोरना पहोर चाल्या जाय पण फक्त बे घडीना सामायिकनी फुरसद न मळे ते जीवं नी हीन पुण्याइ समजवी समजु ने विवेकी श्रावके अवश्य सामायिक करवानो खप करवो जोइए वळी सामायिकमां थता बत्रीश दोषोने जाणी तेने वर्जवा जोइए पण सामायिक लइ

बे घडीनो काळ जेम तेम पूर्ण करवो, या निद्रा लेवी, के नकामी परचुरण वातोमा वखत काढवो, या वाद विवादनो वातो कहाडी चर्चा उठाववी ते युक्त नथी. जुओ के कुमारपाळ महाराज सामायकमा गुरुमहाराज शिवाय अन्य साथे बोलता पण नहि ते केटलो अभ्यास करता तेज तेमनो आदर-विवेक दर्शावी आपे छे तो सामायिक अगिकार करी नित्य ज्ञानाभ्यास वधारवो, तत्वनी वातो समजवो तथा समभावमा वर्तवु

दशमुं व्रत

दशमा व्रतमा चोमासाना रणसग्राम न करवो गोझनीना मुल नान आवने छते पण नियमथी चलायमान थया नहोता

श्रावके दशमाव्रतने विषे चौद नियमनो अतिसंक्षेप करवो ते दिवसे वर्तमान प्रवृत्तिने अनुसारे उपाश्रयने विषे दश सामायक करवा, अने यथाशक्ति उपवास एकासणु करवु, धर्मध्यानमा मवर्तवु. आ दशमु व्रत मैथुनना त्यागी तथा रात्रे कामकाजनो जेओने उपाधि नथी तेओने सध्याथी लइ प्रात काळ पर्यंत चार पहोरनु देशावगाशिक ज्यार धारे त्यारे बनी शके तेवु छे उपाश्रयनी जोगवाइ छते त्यांज या स्वगृहने विषे सध्याये प्रतिक्रमण साथे चार पहोर या एक बे त्रण पहोर (जेवी स्थिरता) ना देशावगाशिकनो नियम करी बने तेटला सामायिक करवा. एक

आ बे वखत प्रतिक्रमण करवा. बाकीनो वखत समभावमां वर्तवु धर्मकथा सिवाय विकथा तथा सांसारिक कार्य के खटपटनो त्याग करवो विशेषे श्रावक आ व्रतनो अवकाश मळे त्यारे लाभ लइ शके तेवु छे तेथी तेनो जरुर लाभ करवो

अग्यारमुं व्रत

कुमारपाळ महाराज पौषधोपवास करते छते रात्रिए काउस्सग्ग ध्याने रह्या हता, ते वखते पगे मकोडो चोंटयो, माणसो तेने उखेडवा लाग्या, परतु क्रोधथी ते चोंटीज रह्यो, ते वखते ते मंकोडो मरी जवानी शकाथी पोताना पगनी चामडी सहीत तेने दूर कर्यो. पारणाने दिवसे सघळा पोसातीओने भोजन करावता

श्रावकोए आ महान् सुकोमळ कुमारपाळ महाराजना व्रतनी दृढतानो विचार करवो के एक मंकोडानी दया माटे पोतानी पगनी चामडी छेदी नखावी, तेवा वीर पुरुषोनी बलिहारी छे. पोषधोपवास ज्यारे ज्यारे बनी शके त्यारे त्यारे करी आत्माने धर्मनी पुष्टि करवी युक्त छे.

बारमुं व्रत

अतिथि संविभाग—दु खी एवा साधर्मी श्रावकोना उद्धार अर्थे लाख द्रव्यनो कर मूकी दीधो.

मुनिमहाराजने (प्रथम तथा अंतिम तीर्थंकर महाराजना) राज्यपिंड कल्पे नहि तेथी भरत चक्रवर्तिनी जेम कुमारपाळ महाराजे सीदाता एवा अनेक साधर्मि बंधुओनो उद्धार कर्यो श्रावके बनी शके तो नित्य गुरु महाराजनी छती जोगवाइए अशन, पान, खादिम अने स्वादिमथी प्रतिलाभी पछी पोते भोजन करवु उचित छे. छेवट पौषधोपवासने पारणे मुनिमहाराजने निमंत्रणा करी दरेक वस्तु वहोरवा माटे विनंति करवी तेमांथी जे वस्तु मुनिमहाराजना सत्पात्रने विष पडे, ते वस्तुथी अतिथी संविभागने दिवसे एकाशन करे या यथाशक्ति नीयासण प्रमुख करे. वर्तमान काळमा लग्न प्रसंगोमां, या बारमु तेरमु करवामा, या मोजशोखमा, हजारो लाखोना पाणी थाय छे पण सीदाता पोताना स्वधर्मी बंधुने उचित सहाय करवामा, के आजीविकादिकथी जोडवामा, घणी खामी जोवामां आवे छे तेवी रीते नोकारशी टोळी वगेरे जमाडी हजारो रुपीआ खर्चवामा आवे छे (नोकारशी स्वामीवत्सल करवा योग्य छे) छता अनेक सीदाता श्रावक वर्ग अने श्राविका वर्गनी फकोडी

स्थितीनो ख्याल बाजुपर रहे छे. सीदाता बधुओनो उद्धार करवो ते उत्तम प्रकारनो स्वामीवत्सलज समजवो. केटलाक लज्जावडे पोतानी मदस्थिती जाहेर न करी शके तेवा अनेक श्रावक श्राविका बारिकीथी तपास करवामां आवे तो मालुम पडे तेथी आ बाबत लक्षमां लेवा योग्य छे. वळी श्रावकना द्वार नित्य अभग (उघाडा) कह्या छे. केमके वध बारणा होवाथी उत्तम पात्र एवा मुनिराज आवे तो ते पाछा वळी जाय, अने दुःखी भिक्षुक अपग वगेरे आवे ते निराश थइने चाल्या जाय तेथी तीर्थंकर महाराजाए अनुकपादाननो निषेध कर्यो नथी, तो स्वशक्ति अनुसार भीखारी वगेरे जे दयाने पात्र छे, तेने दान आपवु अरे ! दान आपवु तो दूर रहु पण अज्ञानवशात् केटलीक वेळा तेवा विचाराने गाळो देवामा आवे छे या हांकी काढवामा आवे छे ते केटली मूर्खता! तेथी केवा कर्मनो वध पडे ? शक्ति होय तो आपवु अन्यथा मिष्ट वचने उत्तर आपवो पण अपशब्द बोलवा या प्रहारादि करवा नहि ज्यारे एक माणस गरीब भिक्षुक स्थितिमा मुकाय छे, त्यारे तेना दुःखनो ख्याल तेने न आवी शके तेथी तेतो क्षुधाथी के तृषाथी पीडित थइ वारवार माग्या करे परंतु सज्जन पुरुषे विचार करवो जोइए के हु आवी निर्धन स्थितीमा होउ तो केम करु ? तेथी सदा कुमळु हृदय राखवुं अने दीन क्षीणनो पण उद्धार करवो. जे पुरुष श्रीमताइनो गर्व धरावी

दीनदुःखी जनोनो तिरस्कार करशे ते अवश्य परभवे अधम स्थिती पामशे लक्ष्मी आज छे ने काल नथी एवु धारी विक्रम, कुमारपाळ, वस्तुपाळ, तेजपाल प्रमुखनी जेम अनेक प्रकारना सत्कार्योमा लक्ष्मी वापरवी

वळी पण श्रीकुमारपाळ महाराजे श्रीहेमचंद्राचार्य महाराजनी धर्मशाळानी मुहपत्ति पडिलेहकार धार्मिकने पाचशे घोडा तथा बार गामनु अधिपतिपणु आप्यु, तथा सघळी मुहपत्ति पडिलेहनाराओने कुल्ले पाचशो गामनु दान आप्युं एवी रीते विवेकीमा शिरोमणि सरखा ते कुमारपाळ राजाना बीजा पण अनेक प्रकारना पुण्य मार्गो हता, तेमाथी अहि केटलाक लखी शकाय ? एवी रीते उत्तम धर्मक्रीयाथी तेणे फक्त पोताना वास्ते बे भवो रहेवारुप कार्य सिद्ध कर्यु (आवती उत्सर्प्पिणीमा पद्मनाभ महाराजना गणधर थइ ते भवे सिद्धि पामशे), तेमज साधर्मीओने योग्य दान, मान, धर्मनी सहायता, करोनु छोडवु, दु खीओना उद्धारादि तथा अढार देशोमा अमारी (अहिंसा) प्रवर्तनादिकथी तेनो परोपकार प्रगटज देखाय छे.

अने कुमारपाल महाराजना सम्यक्त्व मूल बारव्रतादिकनु किंचित् वर्णन कर्यु छे तेनो हेतु मात्र एज छे जे अढार देशनु राज्य

पाळता छतां पण श्रावकनां व्रतने विषे तेओश्री केटले दरज्जे गया छे के जेनु अनुकरण करवु ते तो दूर रह्यु पण तेनी भावना विचारी आपणे केटला वधापछात छीए अने हजु आपणे केटला प्रयासनी जरर छे, तेवी शुभ भावना प्राप्त करवा निमित्ते प्रसगोपात आ विषय उमेर्यो छे आणद कामदेवादिक श्रावको के जेनी स्वय महावीर स्वामिए प्रशसा करी छे. वळी जेओए श्रावकनी पडिमा वहन करी के जे पडिमाने विषे निरवद्य आहार लेवो पडे छे ते उत्सर्ग मार्ग समजवो. जो ते पण न करी शके तो बात्रीश अभक्ष्य अनतकायनो तो जरर त्याग करे अत्रे लक्षमां राखवु जोइए के अभक्ष्यादिनो अमुक नियम कर्यो, तेथी सतोष पामवानो नथी पण आणद, कामदेव, तथा कुमारपाळ, महाराज वगेरेनी जेम श्रावकना द्वादशव्रत अगीकार करी अनुक्रमे पचमहाव्रतनी प्राप्ति माटे उद्यम करवो युक्त छे शास्त्रकार महाराज प्रथम तो सर्वविरतिपणानोज उपदेश करे छे पण ज्यारे श्रावक असमर्थ तथा उत्साह रहित जणाय छे त्यारे पछी देशविरति प्रमुखनो उपदेश आपे छे.

वा क—पृष्ठ ९४ नी २१मी कलममां शेरडीनो रस बे घडी पछी अचित्त छे एम लख्यु छे, पण तेनो काळ जणाव्यो नथी, तो—

श्री लघुप्रवचनसारोद्धारमा तेनो काळ बे पहोरनो कहेलो छे, ते पछी अभक्ष्य छे आ वातन स्फुट करवानु कारण ए छे के-वरसी तपने पारणे केटलाक अजाण लोको आवो काळातीत रस वापरे छे तो तेमणे उपयोग राखवा जरुर छे.

समाप्त



तैयार पुस्तकोनुं सूचीपत्र

शिक्षणना पुस्तको

नंबर	नाम	मूल्य.
१	बाळपोथी-जैन शिक्षणमाळा.	०—१—६
२	पहेली चोपडी-जैन शिक्षणमाळा.	०—२—६
३	बीजी चोपडी सदर	०—३—०
४	त्रीजी चोपडी सदर	०—४—०
५	जैनी वांचनमाळा शास्त्री	०—२—६
६	पंचप्रतिक्रमण मूळ गुजराती	०—९—०
७	,, शास्त्री	०—७—६
८	,, सार्थ गुजराती	१—४—०
९	बे प्रतिक्रमण मूळ गुजराती भावार्थ साथे	०—३—६
१०	,, शास्त्री ,,	०—३—६
११	,, सार्थ गुजराती	०—६—०
१२	सामायक चैत्यवंदनादि सार्थ	०—१—३
१३	समकितना सडसठ बोल तथा अढार पापस्थानकनी सझायो गुजराती	०—१—६
१४	समकितना सडसठ बोल तथा अढार पाप स्थानकनी सझायो शास्त्री	०—१—६
१५	जीवविचार सार्थ सावचूरिक	०—५—०
१६	यशोविजयजी कृत चोविशी सार्थ	०—४—०
१७	भाष्यत्रयम्, ...स्त्री	०—८—०
१८	,, ...राती	

१९ धर्मग्रंथ सार्थ प्रथमविभाग — ०—१०—०
२० ,, द्वितीय विभाग — ०—१२—०
२१ जीनगुण पद्यावली — ०—५—०
२२ तत्वार्थ सूत्र सरहस्य — ०—६—०
२३ पाचीस बोल विगेर — ०—३—०

वांचनना पुस्तको

२४ जैनहितोपदेश भाग २–३ — ०—१०—०
२५ ,, ,, शास्त्री — ०—१२—०
२६ जैनहितबोध हिंदी — ०—१०—०
२७ प्रश्नोत्तर रत्नचिंतामणी — १—०—०
२८ आत्महितकर आध्यात्मिक वस्तु संग्रह — ०—१०—०
२९ श्रावक कल्पतरु — ०—२—०
३० समाधि विचार — ०—१—
३१ कुलक संग्रह — ०—१—०
३२ ब्रह्मचर्य — ०—४—०
३३ अभक्ष्य अनंतकाय विचार गु — ०—३—०
३४ ,, ,, शास्त्री — ०—३—०
३५ आत्म जागृति — ०—०—
३६ धर्मोपदेश तत्वज्ञान — ०—०—

प्रत आकारे संस्कृत ग्रंथो.

३७ जीवविचार सटीक — ०—४—
३८ दडक प्रकरण सटीक — ०—२—

